अंक-3 (प्रवेशांक) वर्ष-1

अगस्त 2005, मूल्य 15/-रु.

RNI - MPHIN/2005/14721

अपनों के लिए-अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

महेश जयन्ती की धूम

कुंडली में छिपे हैं सफल दाम्पत्य के राज

कमाने के नए रास्ते

प्रेमा काकानी

आंसुओं की बगिया में खिले हिम्मत के फूल

श्री माहेश्वरी समाज के दैदिप्यमान सितारे

कुमारमंगलम बिड़ला

With Best Compliments

Anand Somani

BALKISHAN SOMANI

Rewa Road, Satna (M.P.)

श्री माहेश्वरी टाईम्स

अंक-3 (प्रवेशांक) अगस्त 2005 वर्ष - 1

RNI - MPHIN/2005/14721

प्रबंध सम्पादक एवं निदेशक

श्रीमती सरिता बाहेती

□

सम्पादक

पुष्कर बाहेती

□

अतिथि सम्पादक

प्रकाश बियाणी

□

कला निदेशक

अक्षय आमेरिया

□

संरक्षक

श्री बंशीलाल राठी (चैन्नई)
श्री रामगोपाल मूंदड़ा (सूरत)
श्री बनवारीलाल जाजू (इन्दौर)

□

परामर्शदाता

श्री बंशीलाल बाहेती
श्री मदनलाल पलौड़
श्री आर.आर. बाल्दी
श्री राजेन्द्र ईनाणी
श्री गोपाल गोदानी
श्री ओमप्रकाश भराणी

□

सम्पादकीय सलाहकार

श्री बंशीलाल भूतड़ा 'किरण'
श्री गोविन्द मालू
श्री दिनेश माहेश्वरी (भूतड़ा)

□

सम्पादन सहयोग

प्रमोद मंत्री
अशोक माहेश्वरी
दिलीप झंवर

□

कार्यालय -

श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी,
उज्जैन (म. प्र.) 456001
दूरभाष - 0734- 2551307, 2559389,
3094855 मोबाईल - 94250-91161
E-Mail : sri_maheshwaritimes@yahoo.com

श्री माहेश्वरी समाज के दैदिप्यमान सितारे
श्री कुमारमंगलम

17

हरिद्वार

मंदिरों की नगरी

40

कृपाण त्याग कर कलम लीन्ह, तज ढाल तराजू फुरत दीन्ह

4

अव्वियाय माताजी

9

आंसुओं की बगिया में खिले हिम्मत के फूल

36

समाचार	10 से 15	जिज्ञासा-समाधान	31
उपलब्धि	16	डायटिंग नहीं व्यायाम.....	32
नये उद्योगों को आयकर.....	21	स्वास्थ्य समस्या-समाधान	33
परिचय सम्मेलन एक	22	अच्छी नींद से मिलता है.....	34
कमाने के नए रास्ते	23	फ्लावर अरेंजमेंट	35
सफलता की सीढ़ी है	24	करेला....	35
कुछ ऐसा पढ़ें जो	25	भुट्टा बिरयानी	35
स्वर्ण-सूत्र	26	शादी-ब्याह	38
कुंडली में छिपे हैं	27	श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार	45
संकेत सितारों का	29	शुभकामनाएँ	47

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, एवं मुद्रक श्रीमती सरिता बाहेती द्वारा ऋषि ऑफसेट, श्री माहेश्वरी भवन गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

'श्री माहेश्वरी टाईम्स' में प्रकाशित सभी लेखों के विचारों पर सम्पादक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है। सभी प्रसंगों का न्यायक्षेत्र उज्जैन (म.प्र.) रहेगा।

समाज की बुलन्द आवाज़

प्रिय बन्धु,

सादर अभिवादन,

मनुष्य जन्म से ही सामाजिक प्राणी है, उसके जीवन का आधार समाज है क्योंकि उसकी जीवनशैली इसी समाज में संस्कारित होती है और उसका परिष्करण भी यहीं, समाज के बीच होता है। माहेश्वरी समाज भी एक ऐसा संस्कारित समाज है, जहां इतिहास से वर्तमान तक तमाम पीढ़ियाँ भविष्य के लिये प्रेरक बनती हैं। यह समाज संस्कारों के साथ ही सामाजिकता, मानवता से समृद्ध है। सदियों से चली आ रही सामाजिक परंपराएँ यहां सुरक्षित हैं और इन परंपराओं के बूते माहेश्वरीजन देश-दुनिया में अपनी पहचान को बनाये हुए हैं। माहेश्वरीजन, दुनिया के किसी भी कोने में हों, वो अपनी परंपरा और रीति-रिवाज़ों से जुड़े हैं।

श्री माहेश्वरी टाईम्स को आप सभी तक इसी विश्वास के साथ पहुँचा पा रहा हूँ कि यह पत्रिका समाज सरोकारों से जुड़कर आपके परिवार का हिस्सा बन सकेगी। दरअसल 'श्री माहेश्वरी टाईम्स' के प्रकाशन का मकसद भी यही है कि ये 'अपनों के लिये अपनी' पत्रिका बन सके, इसीलिये पत्रिका की प्रकाशन सामग्री का चयन भी इस बात को ध्यान में रखकर किया गया है कि समाज की सांस्कृतिक विरासत से युवा पीढ़ी को परिचित करा सकें, साथ ही देश की तरक्की में समाज के योगदान को भी उल्लेखित किया जा सके। हमारा प्रयास है कि पत्रिका में पाठकों की भागीदारी महत्वपूर्ण हो इसीलिये देशभर के माहेश्वीजनों की नब्ज सर्वेक्षण के जरिए टटोलने के बाद ही इस पत्रिका का स्वरूप तय हुआ है।

श्री माहेश्वरी टाईम्स में आप समाज केन्द्रित गतिविधियों की जानकारी पा सकेंगे। साथ ही इसमें ज्योतिष, वास्तु, स्वास्थ्य और समाज सरोकारों पर विशेषज्ञों के विचारों से भी परिचित हो सकेंगे। सभी सम्माननीय सदस्य बन्धुओं, पाठकों, लेखकों तथा सभी विज्ञापनदाताओं जिन्होंने इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग एवं मार्गदर्शन दिया है, के प्रति आभार एवं धन्यवाद। इसके अलावा आपकी पसंद और सुझावों का इन्तज़ार भी हमें सदैव रहेगा।

आपकी शुभकामनाओं का आकांक्षी

-पुष्कर बाहेती

अतिथि कलम

जो उद्यमी नहीं, वह वैश्य नहीं

विधाता की दो कृतियां सबसे अद्भुत है, एक सृष्टि और दूसरा मनुष्य। विधाता की सब पर नज़र है। 'वह किसी को लावारिस नहीं छोड़ता' तदनुसार विधाता ने अपनी सर्वश्रेष्ठ कृतियों पर भी बेहद सजग व सतर्क प्रहरी नियुक्त किया हुआ है- 'समय'।

समय की गति इतनी तेज है कि हम वर्तमान को जिएँ इसके पूर्व ही यह भूतकाल हो जाता है। यही नहीं, समय के साथ चलना भी आसान नहीं है। द्रुतगति-समय के साथ कदमताल करने वाले समाज या व्यक्ति ही इतिहास बनते और बनाते है अन्यथा समय के प्रवाह में बह जाते हैं, गुम हो जाते हैं। श्री माहेश्वरी टाईम्स के प्रकाशन का यही प्रायोजन है। यह पत्रिका प्रयास करेगी कि वैश्य-समाज को समय की गति बताए, सामयिक परिवर्तनों से अवगत करवाए और समय के साथ चलने की राह दिखाए। हमें पता है यह काम कठिन है, पर हमें विश्वास है कि हम सफल होंगे क्योंकि, आप सब हमारे सहयात्री है।

तो चलिये इस प्रवेशांक से ही यह 'महायात्रा' शुरू करते हैं और सबसे पहले समय को ही अपना सहयात्री बनाते हैं। लोकप्रिय टीवी धारावाहिक 'महाभारत' को याद करें। समय इसका सूत्रधार था जो बार-बार कहता है - 'मैं थकता नहीं, थमता नहीं'। साहसी, सतर्क व दूरंदेशी ही मेरे साथ कदमताल कर सकते हैं। समय यह चेतावनी भी देता है कि मेरे साथ चलोगे तो राह में कई आपदाएँ-बाधाएँ आएंगी, लालच-लालसाएँ रास्ता रोकेंगी। इन सबसे जूझने का साहस हो तो आओ मेरे साथ।

गौरतलब है कि समय केवल अपने 'हमराही' होने की शर्तें ही नहीं बता रहा है अपितु अपने सहयात्री के गुण भी गिना रहा है। ये गुणधर्म ही एक साधारण आदमी को बनाते हैं-असाधारण। ज़रा और गौर करेंगे तो पाएंगे कि वैश्य समाज में ऐसे लोग 'अनगिनत' हैं जिन्होनें समय के साथ कदमताल करके अपार नाम और नामा (प्रतिष्ठा और पैसा) कमाया है। याद करें, हमारे युग के युवा यशस्वी उद्योगपति कुमारमंगलम बिड़ला के पूर्वजों को। 1840 में जन्मे शिवनारायण बिड़ला (बिड़ला समूह के संस्थापक घनश्यामदास बिड़ला के दादाजी) ने 23 साल की उम्र में परिवार की महिलाओं, बच्चों और बुज़ुर्गों को भगवान के भरोसे छोड़कर सम्पन्नता की तलाश में अपनी मातृभूमि (राजस्थान) छोड़ी थी। वह यात्रा कितनी कष्टप्रद व जोखिम भरी थी। राजस्थान से नजदीक के रेल्वे स्टेशन (खंडवा) तक पहुंचने में बीस-पच्चीस दिन लगते थे। झुलसते रेगिस्तान, सुनसान पहाड़ों व बियाबान-बीहड़ों के अलावा निर्जन रास्ते तब चोर-लुटेरों की उन्मुक्त सैरगाह होते थे। क्षत्रिय से वैश्य बने 'माहेश्वरियों' ने ढाल बांधकर ऊंटों के काफिलों के साथ यात्रा की थी। राह में उन्होंने जान भी गंवाई पर यह संकल्प नहीं भूले कि 'कंगाली से मौत भली'।

ये लोग कलकत्ता-मुम्बई पहुंचे तो वहां भी इन्होंने शुरू से नारकीय जीवन जिया। ये झुंडों में रहते थे। एक अंधेरे कमरे में सब नहाते, खाते व सोते थे। उन दिनों महामारी (प्लेग, काला बुखार या मलेरिया) आम बात थी। कई 'दिसावरी' (मारवाड़ी समुदाय में मातृभूमि छोड़ने वालो को दिसावरी कहा गया है) तो घर-परिवार से हजारों मील दूर असमय ही काल के गाल में समा गए। शेष ने इतनी सम्पदा कमाई कि सन् 1947 में जब देश आजाद हुआ तो मेन्यूफेक्चरिंग-सेक्टर पर जिन 18 परिवारों का एकाधिकारनुमा वर्चस्व था, उनमें से एक दर्जन 'वैश्य दिसावरी' थे।

इस पृष्ठभूमि में माहेश्वरी टाईम्स का आप सबसे पहला सवाल है, क्या हमें हमारे पूर्वजों का संकल्प 'कंगाली से मौत भली' याद है या हम शॉर्टकट अपनाने लगे हैं? समझौता परस्त हो गए हैं? क्या हम सफलता व सम्पन्नता के लिये अपने पूर्वजों-सा संघर्ष करने को तैयार हैं? इस सवाल का जवाब हाँ या ना दोनों हो सकता है। आपके जवाब की अगले अंक में प्रकाशनार्थ हमें प्रतीक्षा है पर इस बीच आपको याद दिला दें कि वैश्य माँ अपनी कोख से संतान को जन्म नहीं देती है, वो तो उद्यमशीलता की जननी है अतः जो उद्यमी नहीं वह वैश्य नहीं यानी माहेश्वरी नहीं।

□ प्रकाश बियाणी

बैंकर से कारपोरेट लेखक बने श्री बियाणी की ताजा उपलब्धि है- शून्य से शिखर एवं जी, वित्तमंत्री जी नामक पुस्तकें। इन पुस्तकों को पाठकों की भरपूर प्रशंसा मिली है। शून्य से शिखर के मात्र डेढ़ साल में पांच संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी नई पुस्तक श्रृंखला- 'भारतीय कुबेर' की पहली कड़ी 'लक्ष्मी मित्तल' शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है।

-सरिता बाहेती
प्रबंध सम्पादक

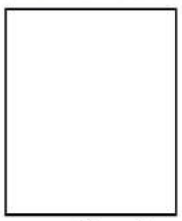

प्रकाश बियाणी
अतिथि सम्पादक

कृपाण त्याग कर कलम लीन्ह, तज ढाल तराजू फुरत दीन्ह

भारतीय इतिहास की सामग्री इतने अंधकार में है कि पुरातत्ववेत्ताओं द्वारा सैकड़ों वर्षों से की जा रही लगातार खोज के बाद भी अभी तक उसका बहुत सा भाग अंधकार में है। आधुनिक अन्वेषणों एवं पुरातत्व विशारदों की कृपा से कुछ टूटे शिला लेख और ताम्रपत्र आदि प्राप्त हुए, उनके सहारे भारतवर्ष का राजनैतिक इतिहास तो फिर भी कुछ उपलब्ध होने लगा है, मगर जातियों का इतिहास अभी भी अंधकार में लीन है। ऐसी परिस्थिति में माहेश्वरी जाति के इतिहास के विषय में कुछ लिखना अपने आपको विरूद्ध परिस्थिति में डाल लेना है।

इस प्रतिष्ठित और तेजस्वी जाति के इतिहास की समय-समय पर कई लोगों ने बहुत खोज की, मगर उन्हें निराश ही होना पड़ा। इस जाति के सम्बन्ध में जो पौराणिक कथा प्रचलित है, वह प्रस्तुत है-

पौराणिक विवेचन

कहा जाता है कि इस महान और तेजस्वी जाति की उत्पत्ति क्षत्रियों से हुई। एक समय खंडेला नामक नगर में खड़गलसेन नामक राजा राज्य करते थे। वे उस समय के बड़े प्रतापी और वीर माने जाते थे। इनके राज्य काल में प्रजा सुखी व संतुष्ट थी। चारों ओर सुख-शांति विराजमान थी। राजा की वीरता, धीरता एवं नम्रता से प्रजा उन्हें जी-जान से ज्यादा चाहती थी। राजा भी प्रजा के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करते थे। आस-पास के राजा लोग इनकी अधीनता स्वीकार कर चुके थे। इतना सब ऐश्वर्य एवं सम्मान हाते हुए भी इन्हें एक चिन्ता रात-दिन सताया करती थी, क्योंकि इनके कोई संतान नहीं थी।

संतान की कामना से प्रेरित होकर राजा खड़गलसेन ने कुछ काल व्यतीत होने पर अपने राज्य के एवं बाहर के बहुत से ब्राह्मणों एवं ऋषि-मुनियों को अपने यहां आमंत्रित किया। राजाज्ञा पाकर बहुत से ऋषि एवं ब्राह्मण खंडेला नगर में पधारे। महाराज खड़गलसेन ने भी बड़ी श्रद्धा एवं भक्ति भाव से उनकी अभ्यर्थना की। महाराज की सेवा भक्ति से वे लोग बड़े संतुष्ट हुए।

अंत में विदा होते समय राजा से वर मांगने के लिये कहा। उस समय महाराज ने बड़े नम्र एवं विनीत भाव से हाथ जोड़कर पुत्र प्राप्ति के लिये प्रार्थना की। पुण्यात्माओं ने महाराज से कहा कि यदि राजन तुम शिव शक्ति की सेवा करोगे तो तुम्हें अवश्य एक पराक्रमी, होनहार एवं चक्रवर्ती पुत्र होगा मगर यह ख्याल रखना होगा कि उसे 16 वर्ष तक

उत्तर दिशा में नहीं जाने देना तथा उत्तर दिशा में स्थित सूर्य कुण्ड में स्नान न करने देना। यदि तुम ऐसा करने में असमर्थ रहे तो राजन् तुम्हारा वह पुत्र इसी जन्म में फिर पुनर्जन्म प्राप्त कर लेगा अन्यथा वह चकवे राज्य करेगा। महाराजा ने उक्त ऋषियों की सारी बातों को शिरोधार्य कर उन्हें नम्रतापूर्वक प्रणाम किया। ऋषि और ब्राह्मण लोग इस प्रकार वरदान देकर विदा हो गये ।

महाराजा खड़गलसेन की चौबीस रानियों में से एक रानी का नाम चम्पावती था। देवयोग से कुछ समय के पश्चात इस रानी को गर्भाधान हुआ और ठीक समय में रानी ने पुत्र प्रसव किया। इस नवजात शिशु का नाम सुजान कुंवर रखा गया। प्रजा में चारों ओर आनन्द की धाराएं बहने लगी। बालक सुजान कुंवर द्वितीया के चन्द्रमा की तरह धीरे-धीरे वृद्धि पाता गया। जब वह बारह वर्ष का हुआ तब महाराज ने उसकी शिक्षा-दीक्षा का समुचित प्रबंध किया। शस्त्र चलाना भी सिखलाया गया। जब वह कुछ और बड़ा हुआ तब उसने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। महाराज उसकी कार्यशैली एवं प्रतिभा देखकर बड़े प्रसन्न रहने लगे और अपने आपको बहुत भाग्यशाली अनुभव करने लगे। उन्होंने इस बात की पूरी सावधानी रखी की कुंवर उत्तर दिशा में न जाने पावे। राजा सब प्रकार से संतुष्ट थे। उन्हें अब किसी प्रकार की चिन्ता नहीं थी।

जब सुजान कुंवर को यह बात मालूम हुई तब उससे न रहा गया। वह अपने पिताजी की आज्ञा का उल्लंघन कर अपने 72 उमरावों को साथ लेकर उत्तर दिशा में चल दिया। वहां जाकर वह सूर्य कुण्ड में खड़ा हो गया। वहीं पाराशर, गौतम आदि मुनि यज्ञ और हवन कर रहे थे।

इसी समय की बात है जैन और बौद्ध धर्म ने चारों ओर अपने अहिंसा सिद्धान्त का प्रचार कर शिव और वैष्णव धर्म के खिलाफ बगावत का झंडा खड़ा कर दिया था। हजारों, लाखों व्यक्ति अपने पैतृक धर्म को छोड़कर जैन और बौद्ध धर्मावलंबी बनने लगे थे। ऐसा मालूम होने लगा था कि वैष्णव धर्म मृतप्रायः हो रहा है। उसी समय राजकुमार सुजान कुंवर भी बौद्ध धर्म से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। राजकुमार की प्रखर बुद्धि ने शीघ्र ही बौद्ध धर्म को अपना लिया। अब क्या था। वह शिव धर्म के बड़े खिलाफ हो गया। स्थान-स्थान पर

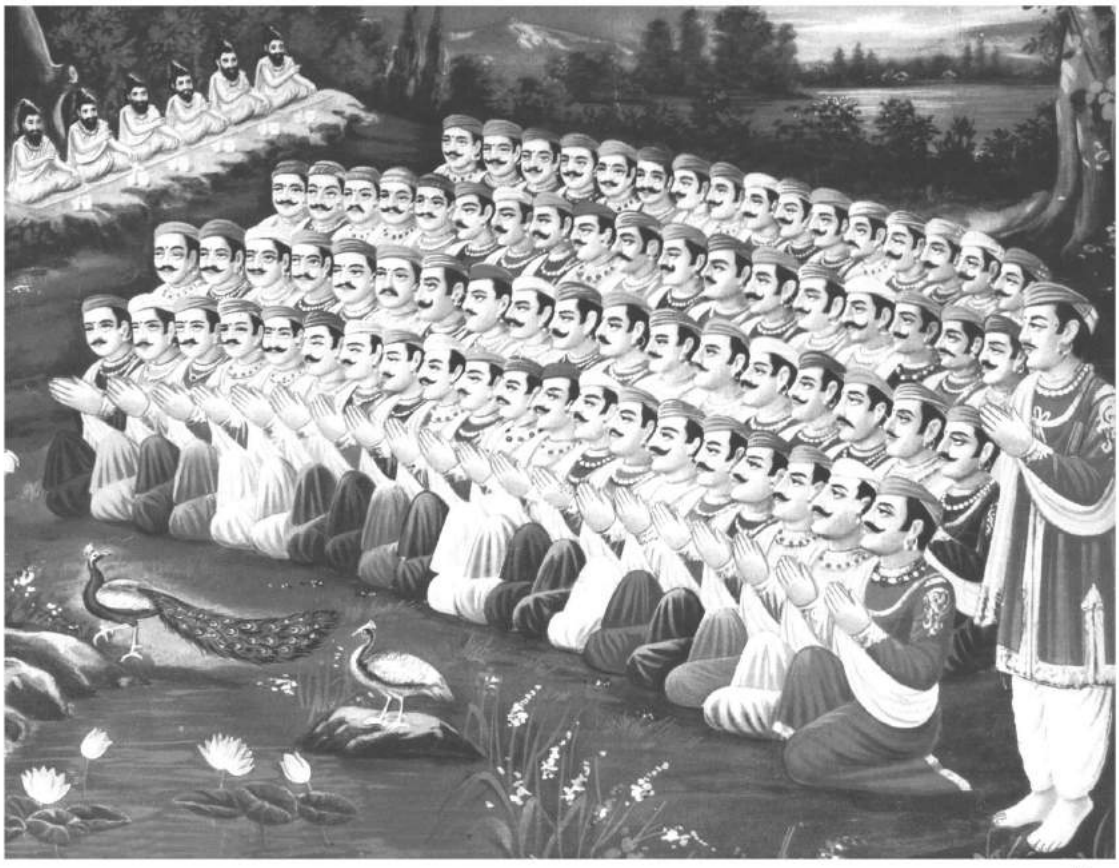

शिव मन्दिर बन्द कर दिये जाने लगे और उनकी जगह पर नवीन बौद्ध मन्दिरों का निर्माण होने लगा। अपने पिता की आज्ञा न होने के कारण कुमार ने उत्तर दिशा को छोड़कर शेष तीनों दिशाओं में बौद्ध धर्म की प्रतिष्ठा की। अतएव उत्तर दिशा में कुछ मुनिगण पूर्ववत ही अपना धर्म-ध्यान, हवन और यज्ञ सुचारू रूप से करते रहे।

जब सुजान कुंवर को यह बात मालूम हुई तब उससे न रहा गया। वह अपने पिताजी की आज्ञा का उल्लंघन कर अपने 72 उमरावों को साथ लेकर उत्तर दिशा में चल दिया। वहां जाकर वह सूर्य कुण्ड में खड़ा हो गया। वहीं पाराशर, गौतम आदि मुनि यज्ञ और हवन कर रहे थे।

यज्ञ वेदी को देखकर राजकुमार आश्चर्य-चकित रह गया। वह अपने चित्त में विचारने लगा कि पिता मुझे उत्तर दिशा में आने के लिये हमेशा इन्कार करते रहे और मुझसे वे कई प्रकार की बातें करते रहे मगर मैं देखता हूँ कि यहां इस प्रकार यज्ञ कर्म हो रहा है और मुनि नामधारी व्यक्ति इस यज्ञ में जीव हिंसा कर पुण्य कमा रहे हैं। मालूम होता है कि पिताजी मुझसे छिपाकर यहां हवन, यज्ञ आदि इन ब्राह्मणों से करवाते है। संभव है इसलिये मुझे इस दिशा में आने से मना करते थे। यह विचार कर वह आग बबूला हो गया। उसने अपने सुभटों को आदेश दिया कि "इन पाखण्डी साधुओं को पकड़ लो और इनकी सारी सामग्री को नष्ट कर दो।" आज्ञा पाकर सुभट वहां पहुंच गये। यज्ञ की सारी हवन सामग्री फेंक दी गई और इस प्रकार उनके यज्ञ को अधूरा ही रहने दिया गया। ब्राह्मण एवम् ऋषि-मुनि सुजान कुंवर के इस प्रकार के व्यवहार को देखकर क्रोधित हुए। उन्होंने उसी समय श्राप दिया कि हे निर्बुद्धियों! जाओ, तुम सब पत्थर के हो जाओ। उक्त शाप के अनुसार राजकुमार सुजान कुंवर अपने 72 उमरावों सहित पत्थर का हो गया।

जब उपरोक्त समाचार खंडेला नगर में पहुंचा तो महाराज खड़गलसेन के दुःख का पारावार नहीं रहा। यहाँ तक कि इसी दुःख में उन्होंने प्राण तक त्याग दिये। इनके साथ इनकी सोलह रानियां भी सती हुई। राजकुमार के श्राप ग्रसित होने का समाचार चारों ओर पहुँच ही चुका था। अब इनके पिता के स्वर्गवासी होने का समाचार भी पहुँचा। आस-पास के मांडलिक राजाओं ने जब देखा कि राज्य की रक्षा करने वाला कोई नहीं है तो उनमें से कई राजाओं ने हमले करके राज्य को छिन्न कर दिया एवं अपना-अपना विजित प्रदेश अपने-अपने राज्य में मिला लिया।

इधर राजकुमार सुजान कुंवर की रानी उन 72 उमरावों की स्त्रियों को लेकर रूदन करते हुए उन्हीं ब्राह्मण एवम ऋषियों के पास गई और उनके चरणों में गिर पड़ी। यह देख ऋषियों को दया उत्पन्न हुई। उन्होंने इन्हें धर्मोपदेश दिया और कहा कि पास ही गुफा है, तुम सब लोग वहां जाओ और योग का साधन करो। तुम्हारे योग के प्रभाव से प्रसन्न होकर शंकर और पार्वती घूमते-घूमते इधर आवेंगे, वे ही इन लोगों को श्राप से मुक्त कर सकेंगे। अन्यथा कुछ न हो सकेगा। यह उपदेश सुन वे पास ही गुफा में गई और वहीं भक्ति के साथ योग की साधना करने लगी।

कुछ समय पश्चात इनके योग साधन के प्रभाव से प्रसन्न होकर शिव और पार्वती वहीं घूमते-घूमते आ निकले। यहां पार्वती जी के विशेष आग्रह पर भगवान शंकर ने उन लोगों को श्राप मुक्त कर दिया और वरदान दिया कि तुम लोग क्षमावान बनो।

राजकुमार सुजान कुंवर भगवती पार्वती के अनुपम सौन्दर्य की रूप छटा को देखकर मुग्ध हो गया और एकटक होकर उनकी ओर देखने लगा। यह देख भगवती पार्वती ने उसे श्राप दिया कि "हे कुकर्मी जा मांग खा और तेरे वंश वाले हमेशा मंगत होकर मांगते रहेंगे।" उपरोक्त श्राप के अनुसार वह और उसके वंशज मांगते रहे और वे ही आगे चलकर जागा के नाम से प्रसिद्ध हुए।

जब उमरावों को ज्ञान प्राप्त हुआ और उन्होंने प्रत्यक्ष में भगवान शंकर और भगवती पार्वती को देखा तो वे अपने कृत्यों पर अफसोस करने लगे। उन्होंने हाथ जोड़कर भगवान शंकर से क्षमा याचना की। भगवान शंकर ने इन्हें क्षत्रिय वर्ण छोड़कर वैश्य वर्ण स्वीकार करने के लिये कहा।

भगवान महेश्वर के वरदान के अनुसार उन्होंने उसी समय से क्षत्रित्व छोड़कर वैश्यत्व स्वीकार किया। उन्होंने क्षत्रिय के चिन्ह तलवार, ढाल ओर भालों को छोड़कर उनके स्थान पर वैश्य के चिन्ह लेखनी, ढंढी ओर तराजू को पकड़ा और इस प्रकार ज्येष्ठ शुक्ल नवमी को श्री महेश भगवान के आशीर्वाद से माहेश्वरी जाति की उत्पत्ति हुई।

ऋषियों ने भगवान से प्रश्न किया कि हमारे यज्ञों को पूर्ण कौन करवाएगा, जो कि इनके उपद्रव से अधूरा ही छूट गया है। इस पर शंकर ने उन लोगों से कहा कि वैश्यों, आज से ऋषि तुम्हारे गुरु हुए। इन्हें तुम दान, दक्षिणा देते रहना। उपरोक्त वचन कह कर भगवान शंकर पार्वती सहित वहां से अन्तर्ध्यान हो गये। इसके पश्चात उन उमरावों ने इन छहों ऋषियों को गुरु मानकर प्रणाम किया। इस प्रकार प्रत्येक ऋषि के बारह-बारह शिष्य हो गये जो आज भी इन्हें अपना यजमान मानते चले आ रहे हैं।

विशेष उपहार

निःशुल्क आकर्षक पोस्टर

श्री माहेश्वरी वंशोत्पत्ति

श्री माहेश्वरी टाईम्स के प्रवेशांक के साथ श्री माहेश्वरी वंशोत्पत्ति (72 खांप) का बहुरंगीय पोस्टर निःशुल्क प्रदान किया जा रहा है।

-संपादक

With Best Compliments From

PRIMA Rx

20/2, SKYSCRAPER-A WARDEN ROAD, MUMBAI-40

ALICON PHARMACEUTICAL PRIVATE LIMITED

FACT. : 1919, GIDC, SARIGAM, DIST. VALSAD, GUJARAT - 396155

सच्चियाय माताजी ओसियां (राज.)

माँ कुलदेवी श्रृंखला

सच्चियाय माताजी

■ सूरज कालानी

हम कुलदेवी की पूरी श्रद्धा के साथ पूजा-अर्चना करते हैं पर अधिकांश को उनके नाम के सिवाय कुछ पता नहीं है। श्री माहेश्वरी टाईम्स के हर अंक में पढ़िए एक कुलदेवी पर सारगर्भित जानकारी.....

-संपादक

सच्चियाय माताजी - बिहानी, अटल, कांसट, करवा, चांडक, डागा, तापड़िया, परतानी, बांगड़, बिड़ला, मालू, मंत्री, भंसाली, रांधड़, राठी, लखोटिया, लढ़ा, सारड़ा एवं सिकची खांप की कुल देवी है।

माताजी का मन्दिर राजस्थान में जोधपुर जिले के छोटे से कस्बे ओसियां में स्थित है। ओसियां जोधपुर से लगभग 65 किमी दूर हैं। मंदिर भूमितल से लगभग 125 फीट ऊँची पहाड़ी पर बना हुआ है। मंदिर तक पहुँचाने वाली सीढ़ियों पर नौ तोरण द्वार बने हैं जिन्हें नवदुर्गा के नामों से अलंकृत किया गया है। मंदिर की छत बड़ी ही आकर्षक एवं मनमोहक है। ऐसी मान्यता है कि प्रतिमा पहाड़ी से प्रकट हुई थी। मुख्य शिखर पर ध्वजादण्ड के पास सोने का कलश स्थापित है जिसमें घृत भरा हुआ है। मंदिर के सामने महामंडप में हवन-कुंड बना हुआ है, ऊपर सोलह पुतलियों की छवि दिखाई पड़ रही है। मन्दिर प्रांगण में भगवान शिव का मंदिर भी बना हुआ है।

माता का मंदिर पश्चिमाभिमुख है। यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला व अतिथिगृह बने हुए है।

संवत् 2026 वैशाखसुदी 11 को ग्रामवासियों के सहयोग से माताजी मंदिर के पुजारियों के साथ पुजारी (स्व.) जुगराजजी पुत्र श्री. सदासुखजी सेवक की देखरेख व निर्देशन में मुख्य मंदिर सहित सूर्य मंदिर, विष्णु मंदिर, गजानन्द मंदिर, महादेव मंदिर पर ध्वजादण्ड चढ़ाये गये। इस शुभ कार्य के बाद इस मंदिर में निर्माण का कार्य आज तक बन्द नहीं हुआ।

यहाँ वर्ष में दो बार नवरात्रि उत्सव मनाया जाता है। जिसमें चैत्र आसोज में कलश स्थापना के साथ ज्वारे उगाये जाते हैं।

माताजी की केशर पूजा होती है। महापूजा अभिषेक होता है जिसमें दंपत्ति भक्तों को स्वयं बैठने का अवसर मिलता है।

नवरात्रि में माताजी को लगने वाले भोग

एकम - लापसी
दूज - खाजा, मगज-खीर,रसगुल्ला, केला
तीज - मीठा चावल (बीणज), अनानास
चौथ - बेसन चक्की, पपीता, खुरमाणी
पाँचम - गुड़ का हलवा,सेवक, गुलाब जामुन
छठ - लापसी, सेव
सातम - दाल की चक्की, अंगूर
आठम - नौ प्रकार की मिठाई- खीर पूड़ी, लापसी, खाजा, मगद हलवा, नव प्रकार के फल, नव प्रकार की नमकीन का भोग लगता है

होम अष्टमी का हवन अष्टमी को आसोज व चैत्र नवरात्रि में परंपरानुसार रात्रि 9 बजे से डेढ़ बजे के मध्य होता है। मंदिर पर लाल रेशमी ध्वजा भी चढ़ाई जाती है।

आरती - चैत्र सुदी 1 से आसोज बदी अमावस्था तक सुबह 8:30 बजे, आसोज सुदी 1 से चैत्र बदी अमावस्था तक सुबह 9 बजे व शाम को सूर्यास्त के 20 मिनिट बाद होती है। रात्रि में पटमंगल के बाद मंदिर रात्रि में नहीं खुलता, नवरात्रि में 10 बजे तक मंदिर खुला रहता है।

वर्तमान में ओसियां सच्चियाय माता मंदिर परिसर में पुराने मंदिरों के साथ सन् 1976 में ट्रस्ट स्थापना के बाद मुख्य श्री सच्चियाय माता मंदिर के चारों तरफ परकोटे में नवदुर्गा के नौ भव्य मंदिर पुरानी कलात्मक कलाकारी के साथ दानदाताओं द्वारा ट्रस्ट की देखरेख में बनवाए है।

कैसे पहुँचे - ओसियां जोधपुर - जैसलमेर रेल मार्ग पर तथा जोधपुर - ओसियां - फलौदी - रामदेवरा - जैसलमेर सड़क मार्ग पर स्थित है। दिल्ली, मुम्बई तथा जयपुर से जोधपुर तक के लिये सीधे विमान सेवा उपलब्ध है। दिल्ली - जैसलमेर इन्टरसिटी ट्रेन, जोधपुर - जैसलमेर ट्रेन पैलेस ऑन द व्हील्स द्वारा भी यहाँ तक पहुँच सकते है। राईकाबाग रोडवेज स्टैण्ड से हर 30 मिनिट में ओसियां के लिये तथा पावटा चौराहे से हर 30 मिनिट में ओसियां के लिये बसें उपलब्ध है।

श्री लखोटिया शाकाहार परिषद के पुन: अध्यक्ष निर्वाचित

दिल्ली। शाकाहार परिषद दिल्ली (उत्तर भारत सहित) की गत 15 मई 05 को सम्पन्न हुई 10 वीं आम सभा में सर्वसम्मति से श्री रामनिवास लखोटिया को वर्ष 2005-06 के लिये पुनः अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है। ज्ञातव्य है कि श्री लखोटिया भारतीय शाकाहार परिषद, चैन्नई के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं। आप अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष भी हैं। वे अपनी इन भूमिकाओं के द्वारा निरन्तर शाकाहार का प्रचार प्रसार कर रहे हैं। आपने अब तक 2 लाख से अधिक विद्यार्थियों को स्वेच्छा से आजीवन शाकाहारी बने रहने की शपथ दिलवाई है।

महेश जयन्ती समारोह धूमधाम से मनाया गया

इन्दौर। माहेश्वरी समाज इन्दौर के तीन दिवसीय महेश जयन्ती समारोह का समापन 16 जून 05 को सुबह 8 बजे निकली प्रभातफेरी के साथ हुआ। श्री विष्णुप्रपन्नाचार्य जी के सानिध्य में प्रभात फेरी निकाली गई जिसमें भगवान शंकर के गणों की बारात आकर्षण का केन्द्र थी।

प्रत्येक चौराहे व मुख्य स्थानों पर विभिन्न समाज संगठनों द्वारा प्रसादी वितरण एवं पुष्प वर्षा से चल समारोह का अभिनंदन किया गया। शाम को रामकृष्ण बाग में महेश जयंती का समापन समारोह सम्पन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष श्री मोहनलाल राठी एवं विशेष अतिथि श्री राजेन्द्र दम्मानी थे। अध्यक्षता रतनलाल माहेश्वरी ने की।

मंदसौर जिले में महेश जयंती पर रंगारंग समारोह व चुनाव संपन्न

मंदसौर। मंदसौर माहेश्वरी युवा संगठन एवं माहेश्वरी महिला मंडल के संयुक्त तत्वावधान में महेश नवमी महोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ समाज के सबसे बुजुर्ग दंपत्ति मदनलाल-गीताबाई सोमानी द्वारा किया गया। महिला मंडल द्वारा संयुक्त परिवार वरिष्ठजन (चार पीढ़ी) का सम्मान किया गया। युवा संगठन द्वारा रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किये गये। इस मौके पर विभिन्न प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गई।

16 जून महेश नवमी पर प्रभातफेरी निकाली गई। भगवान का अभिषेक पूजन किया गया। समाज के विशाल चल समारोह में सभी बंधुओं ने उत्साह के साथ भाग लिया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि मुरलीधर परवाल थे तथा अध्यक्षता जगदीशचंद्र छापरवाल ने की। युवा संगठन अध्यक्ष गोपाल पसारी, सचिव सत्यनारायण मालू एवं महिला मंडल अध्यक्ष गीता झंवर सचिव मणिबाला मालू ने सभी विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये। प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। संचालन रमेशचंद्र परवाल ने किया व आभार गोपाल पसारी ने माना।

जिला युवा संगठन के कार्यक्रम

म.प्र. पश्चिमांचल माहेश्वरी युवा संगठन के निर्देशानुसार जिला संगठन द्वारा स्व. रामनारायण भट्टड़ स्मृति ज्ञानगंगा स्पर्धा एवं आपणो उत्सव 2004 का आयोजन किया गया। महेश नवमी पर इन स्पर्धाओं के विजेताओं को जिला संगठन मंत्री कृष्णकुमार बाहेती के हाथों पुरस्कृत किया गया।

दलौदा में महेश नवमी समारोह

माहेश्वरी समाज दलौदा के तत्वावधान में महेश जयंती पर्व राधेश्याम झंवर के मुख्य आतिथ्य एवं रमेशचंद्र परवाल की अध्यक्षता में तथा राजेश कांसठ के विशेष आतिथ्य में मनाया गया। समाज अध्यक्ष ओम पलोड़ ने स्वागत भाषण में वर्ष भर की गतिविधियों की जानकारी दी। कार्यक्रम को विट्ठल माहेश्वरी, बाबूलाल डागा, मोहन सोमानी, महेन्द्र दुरग, पंकज डागा, गीता झंवर, तारा कासठ, उमा बाल्दी आदि ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में प्रतियोगियों एवं प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया।

इस मौके पर समाज संगठन के चुनाव भी हुए जिसमें अध्यक्ष ओमप्रकाश पलोड़, उपाध्यक्षद्वय विट्ठल माहेश्वरी, बाबूलाल डागा, महामंत्री मोहन सोमानी, संगठन मंत्री मुकेश गगरानी, कोषाध्यक्ष मांगीलाल काकानी चुने गये। युवा संगठन में विजय गगरानी अध्यक्ष, अजय राठी उपाध्यक्ष, जुगल किशोर तोतला सचिव, दीपक तोषनीवाल कोषाध्यक्ष, रामचंद्र दुरग सहसचिव, संजय सोमानी संगठन मंत्री चुने गये। कार्यक्रम का संचालन रामस्वरुप तोतला ने किया। आभार राकेश बाल्दी ने माना।

राजनीतिक क्षेत्र में माहेश्वरी समाज को आगे बढ़ावें

नापासर। माहेश्वरी सभा नापासर के तत्वावधान में महेश नवमी का समारोह स्थानीय श्री नवयुवक पुस्तकालय के सभागार में अध्यक्ष रामेश्वरलाल बाहेती द्वारा भगवान महेश्वर की पूजा-अर्चना के साथ प्रारंभ हुआ। इस मौके पर महासभा के कार्यकारी मंडल सदस्य रामनारायण दिग्गा ने माहेश्वरी समाज की उत्पत्ति पर प्रकाश डाला। आपने कहा हमारा समाज उद्योग-व्यापार में अपना वजूद रखता है, लेकिन हम राजनीतिक क्षेत्र में काफी पिछड़े हुए हैं।

भारतीय राजनीति में अच्छे लोगों के जाने से ही दूषित वातावरण सुधरेगा। हमारा सजातिय बंधु यदि कहीं से किसी भी पद के लिए चुनाव लड़ता है तो हमें तन-मन-धन से मदद करनी चाहिए। कार्यक्रम में उपाध्यक्ष सीताराम बाहेती, केदारजी कोठारी, लाभचंद करनाणी, फूलराज बाहेती, मूलचंद लड्ढा, पुरुषोत्तम मूंदडा, शंकरलाल कोठारी सहित अनेक गणमान्य जन उपस्थित थे।

श्रीमती साबू ने न्यूयॉर्क में बैठक ली

न्यूयॉर्क। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की महामंत्री श्रीमती बिमला देवी साबू ने अपने अमेरिका प्रवास के दौरान न्यूयार्क में गत 5 जून, रविवार को 'अमेरिका माहेश्वरी महासभा' के साथ बैठक की। बिमलाजी की उपस्थिति में ही वहां महेश नवमी उत्सव मनाने का निर्णय लिया गया व सभा में भगवान महेश की पूजा-अर्चना की गई। बिमलाजी ने कहा इस स्वजाति आत्म-चिन्तन के पर्व पर 'समाज के प्रति अपने कर्तव्य हम कहाँ तक पूरे कर पा रहे हैं, इस पर हम सभी को चिन्तन करना चाहिये।' वर्तमान में 'अमेरिका माहेश्वरी महासभा' की अध्यक्ष डॉ. श्रीमती सीमा राठी हैं।

बड़नगर में धर्मशाला का निर्माण पूर्ण होगा

बड़नगर। महेश जयंती पर बड़नगर माहेश्वरी समाज द्वारा प्रातः 9.15 बजे पंढरीनाथ कुंड के मंदिर में अभिषेक पूजन किया गया। तत्पश्चात् माहेश्वरी धर्मशाला में नाश्ते एवं ठंडाई का वितरण किया गया। समाज की समस्त महिलाओं ने एकजुट होकर भजन गाए।

समाजगणों के बीच समाज की धर्मशाला के अधूरे निर्माण कार्य को पूर्ण करने पर चर्चा हुई। कार्यक्रम का समापन प्रसादी से हुआ। परीक्षा में अच्छे परिणाम लाने वाले विद्यार्थियों को बधाई दी गई व युवाओं को समाज के कार्यक्रमों में भाग लेने के लिये प्रेरित किया गया।

बहादुरगढ़ में महेश नवमी पर्व धूमधाम से मनाया

बहादुरगढ़। हरियाणा राज्य के बहादुरगढ़ में माहेश्वरी सभा द्वारा 16 जून 05 को महेश नवमी का पर्व धूमधाम से मनाया गया। माहेश्वरी सभाध्यक्ष श्री रामानंद माहेश्वरी ने भगवान महेश के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। महिला संगठन अध्यक्ष श्रीमती अंजना राठी, श्रीमती अनिता भुराड़िया, श्रीमती सरला भुराड़िया, श्रीमती सुमन जाजू, श्रीमती लक्ष्मी चांडक ने महेश वंदना प्रस्तुत की। सचिव लक्ष्मीनारायण धूत ने सभी का स्वागत किया। रंगारंग सांस्कृतिक संध्या का आयोजन भी किया गया। हरियाणवी लोकनृत्य प्रस्तुत किये गये। विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये गये। कार्यक्रम में युवा संगठन का भी सहयोग रहा। अंत में समाज का सहभोज सम्पन्न हुआ।

इस स्तम्भ के लिए पाठक अपने क्षेत्र के समाचार भेज सकते हैं। समाचार संक्षिप्त, तथ्यपरक और सारगर्भित हो। आवश्यक पाए जाने पर ही फोटोग्राफ प्रकाशित किए जाएंगे।

-संपादक

महेश नवमी पर अभिषेक

सारंगपुर। महेश नवमी पर सारंगपुर के खेड़ापति हनुमार मंदिर पर माहेश्वरी समाज के जिला उपाध्यक्ष श्री श्यामसुन्दर जी राठी तथा सारंगपुर के माहेश्वरी समाज नवयुवक मण्डल के अध्यक्ष श्री राकेश गुप्ता ने सपत्निक अभिषेक किया।

समाचार

भव्य शोभायात्रा निकली

बाग। धार जिले के बाग नगर में श्री माहेश्वरी समाज द्वारा महेश जयंती का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस मौके पर भव्य शोभायात्रा निकाली गई। इस चल समारोह में युवक-युवतियों का गरबा नृत्य आकर्षण का केन्द्र था। मांगलिक भवन में आयोजित मुख्य समारोह में प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरित किये गये।

समाज के अध्यक्ष मदनलाल मानधन्या, महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती स्नेहलता झंवर, युवा संगठन के मनोज मालानी व अर्पित झंवर ने अपने प्रस्ताव रखे। संचालन ब्रजमोहन जाजू ने किया। आभार ओमप्रकाश झंवर ने माना। महेश जयंती पर प्रसिद्ध भजन गायक हरिकिशन साबु (भोंपूजी) की भजन संध्या का आयोजन किया गया।

प्रतियोगिताओं के परिणाम

चम्मच रेस- प्रथम आयुष झंवर, द्वितीय रोनक झंवर। जूनियर वर्ग में सुंदर लेखन में श्रेया मानधन्या प्रथम, रुचिता राठी द्वितीय। जजमेंट लगाओ- प्रथम परिधि जाजू, श्रीमती सुनीता झंवर द्वितीय। सामान्य ज्ञान- प्रथम ब्रजमोहन जाजू, द्वितीय गोविंद बूब। वर्ग पहेली- श्रीमती ज्योति झंवर प्रथम, श्रीमती वंदना अगाल द्वितीय। अनाज रांगोली- मेघा सारड़ा व जापानी लड्डा प्रथम, कीर्ति जाजू, सोनल झंवर द्वितीय।

नव निर्वाचित अध्यक्ष श्रीमती डागरा का स्वागत

नागदा। श्री माहेश्वरी समाज के तत्वाधान में श्री माहेश्वरी महिला मंडल व माहेश्वरी सोश्यल ग्रुप के द्वारा महेश जयंती मनाई गई। मुख्य अतिथि ग्वालियर केमिकल के श्री बी पी बियानी व विशेष अतिथि केमिकल डिविजन के आर.के. माहेश्वरी थे। अध्यक्षता समाज अध्यक्ष ललाबाबू ने की।

नंदकिशोर मालपानी द्वारा भक्तिगीत प्रस्तुत किये गये। महिला मंडल द्वारा स्पर्धाएं आयोजित की गई। सोश्यल ग्रुप के अध्यक्ष दिनेश कलंत्री द्वारा ग्रुप की जानकारी दी गई। प्याऊ संचालन के लिए मदनलाल मोहता, प्रकाश नवाल, चांदमल बिसानी का सम्मान हुआ। महिला मंडल की नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्रीमती उर्मिला डागरा का स्वागत किया गया। मेधावी छात्र-छात्राओं का सम्मान भी हुआ। हाई स्कूल परीक्षा में उज्जैन जिले की प्रावीण्य सूची में प्रथम आए छात्र अभिषेक, पूजा, गोपाल बजाज व उनके माता-पिता का सम्मान श्रीमती स्नेहलता राठी द्वारा किया गया। सर्वप्रथम भगवान महेश की पूजा अर्चना की गई।

लेखकों से निवेदन

श्री माहेश्वरी टाईम्स में प्रकाशन हेतु लेखकों से रचनाएं आमंत्रित हैं। रचनाएं साफ़, सुपाठ्य शब्दों में लिखी या टाईप की गई हो। रचना के साथ मौलिकता प्रमाण-पत्र आवश्यक है। आलेख दो फुल स्केप कागज से बड़ा नहीं होना चाहिए। संदर्भित फोटोग्राफ रचना के साथ सलंग्न करें। आवश्यक होने पर ही फोटो प्रकाशित किए जाएंगे। वापसी के लिए पता लिखा एवं टिकिट लगा लिफाफा भेजें।

- संपादक

महेश नवमी महापर्व अत्यंत धूमधाम से सम्पन्न

बठिण्डा। माहेश्वरी सभा बठिण्डा द्वारा महेश नवमी महापर्व अत्यंत धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत भगवान महेश के पूजन के साथ हुई। प्रदेशाध्यक्ष श्री पवन जी होलानी ने समारोह को संबोधित किया।

सायंकाल स्थानीय वीर भवन में समाज के मेधावी छात्र-छात्राओं का सम्मान किया गया। बालिकाओं एवम् महिलाओं ने मनमोहक नृत्य एवं कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस शुभ अवसर पर माहेश्वरी महिला सभा की संरक्षिका श्रीमती पूनम माहेश्वरी ने उत्तरांचल महिला सभा के वृन्दावन में आयोजित होने वाले शिविर की जानकारी दी। कार्यक्रम का प्रभावी संचालन महासचिव श्री जगदीश मंत्री द्वारा किया गया। अंत में उपाध्यक्ष श्री इन्दरमोहन होलानी ने सभी का आभार माना।

पाँच दिवसीय महेश नवमी पर्व मनाया

उदयपुर। माहेश्वरी सभा द्वारा श्री महेश नवमी पर पाँच दिवसीय महोत्सव 2005 आयोजित किया गया। 12 जून को श्री जानकीलाल मूंदड़ा ने खेलकूद स्पर्धा का शुभारंभ किया। 13 जून को महेश सेवा समिति भवन में स्वस्थ शिशु प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। इसी दिन महिलाओं के लिए सलाद सज्जा स्पर्धा और सुखाड़िया रंगमंच पर 'एक शाम भगवान महेश के नाम' सांस्कृतिक संध्या आयोजित की गई जिसके मुख्य अतिथि श्री मदनलाल काबरा थे। अध्यक्षता इंदरमल छापरवाल ने की। रंगमंच पर रांगोली प्रतियोगिता भी रखी गई।

14 जून को छात्र-छात्राओं के लिए चित्रकला, निबंध व आशुभाषण स्पर्धा रखी गई। 15 जून को महिलाओं के लिए मेहंदी प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। इसी दिन सायं माहेश्वरी भवन में सांस्कृतिक कार्यक्रम, अभिनंदन व पुरस्कार वितरण समारोह हुआ जिसमें वृद्धजनों, सफल दम्पत्तियों का सम्मान हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अति.जिला मजिस्ट्रेट एस.एन. लाठी, वरिष्ठ सर्जन डॉ. शिवप्रसाद गट्टानी, महेशचंद्र गुप्ता, सांसद व भाजपा की राष्ट्रीय सचिव श्रीमती किरण माहेश्वरी सहित बड़ी संख्या में समाजबंधु उपस्थित थे। अतिथियों का स्वागत अध्यक्ष मदनलाल धुप्पड़ ने किया व संरक्षक डॉ. के.एस.गुप्ता ने महेश नवमी पर्व की महत्ता पर प्रकाश डाला।

महेश नवमी 16 जून को मनाई गई, जिसमें प्रातः भगवान महेश का रुद्राभिषेक किया गया। नगर में भव्य शोभायात्रा झांकियों के साथ निकाली गई। शोभायात्रा में समाज बंधुओं ने भागीदारी कर एकता का परिचय दिया। इस महोत्सव में नगर सभा के कार्यकारी मंडल सदस्यों, पदाधिकारियों, घटक संस्थाओं के प्रतिनिधियों का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

उज्जैन में महेश नवमी पर सात दिवसीय महोत्सव सम्पन्न

उज्जैन। श्री माहेश्वरी जाति के उदय पर्व महेश नवमी के उपलक्ष्य में श्री माहेश्वरी मेवाड़ा थोक पंचायत उज्जैन के तत्वाधान में महेश नवमी महोत्सव 13 जून से 19 जून तक मनाया गया। महिला मंडल द्वारा अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। 13 जून को महोत्सव का शुभारंभ श्री मुरलीधर हेड़ा के मुख्य आतिथ्य, श्री दिलीप लोया के विशेष आतिथ्य एवं श्री लखनलाल गुप्ता की अध्यक्षता में भगवान महेश के माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। संचालन नृसिंह ईनानी ने किया। दोपहर से गणगौर के गहने बनाओ, क्विज टाईम, हरे रंग की साड़ी स्वयं पहनना व उसी रंग की अधिक से अधिक वस्तुएं माचिस की डिब्बी में रखकर लाना, ख्याली गीता गाओ, हिन्दी एवं अंग्रेजी लेखन, निबंध, एकल अभिनय, मैदे के व्यंजन, एक मिनिट, सुन्दरकांड के दोहे, चौपाई, चेयर रेस, साक्षात्कार, तात्कालिक भाषण, लिफाफा बनाओ, बालकृष्ण का झूला सजाओ, बांयें हाथ से बनाओ, शटल की लेस बनाओ, चम्मच रेस, स्वस्थ्य शिशु आदि स्पर्धाओं का आयोजन किया गया। संयोजन श्रीमती उषा सोढानी ने किया। श्री मा. मेवाड़ा थोक पंचायत युवा मंडल एवं मा. यूथ फोरम उज्जैन के तत्वावधान में 18 जून को स्लो साइकिल, दौड़ एवं क्रिकेट स्पर्धा का आयोजन हुआ। 19 जून को नृत्य, एक मिनिट (कपल), देवरानी-जेठानी मेचिंग स्पर्धा व सर्वोत्तम हस्ताक्षर, बेस्ट मारवाड़ी कपल, मि. माहेश्वरी, मिस माहेश्वरी, तोल-मोल के बोल, स्वादिष्ट व्यंजन स्टॉल, गेम स्टॉल आदि के साथ महेश मेले का आयोजन किया गया। 16 जून को प्रातः भगवान महेश एवं चार भुजानाथजी का अभिषेक एवं चल समारोह निकाला गया। चल समारोह छोटा सराफा से प्रारंभ हुआ। चल समारोह में धार्मिक प्रसंगों वाली झाँकियाँ, डांडिया पार्टी, भजन मंडलियाँ शामिल थीं। पुरुष सफेद वस्त्रों में व महिलाएँ केसरिया वस्त्र पहने हुए थे। चल समारोह में कु. नेहा जेथलिया ने भजन गाए।

महेश नवमी पर प्रभातफेरी ने समां बांधा

ग्वालियर। वृहस्तर ग्वालियर माहेश्वरी समाज व वृहस्तर ग्वालियर माहेश्वरी महिला मंडल के तत्वाधान में महेश जयंती महोत्सव मनाया गया। वृहस्तर ग्वालियर माहेश्वरी युवक संगठन ने भी सहयोग प्रदान किया। तीन दिवसीय समारोह में प्रथम दिवस महिला मंडल द्वारा चित्रकला शिविर लगाया गया। इसी दिन वरिष्ठ समाजसेवियों का सम्मान किया गया। दूसरे दिन युवा संगठन द्वारा सांस्कृतिक संध्या आयोजित की गई।

तीसरे दिन चित्रकला प्रतियोगिता हुई और ब्लड ग्रुप शिविर लगाया गया। शिविर का संचालन मदन मोहन भदादा व डॉ. उपेन्द्र गुप्ता द्वारा किया गया। महेश नवमी पर समाज अध्यक्ष विमल माहेश्वरी के नेतृत्व में प्रातः प्रभातफेरी निकाली गई। इस मौके पर माहेश्वरी विद्या मंदिर में पुस्तकालय का शुभारंभ किया गया।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्री गोवर्धनलाल झंवर (वाराणसी), विशिष्ट अतिथि श्रीमती आभा लड्ढा (फरीदाबाद) ने मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया। श्रीमती मंजरी छापरवाल ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम में श्रीमती रंजना फेरानी, सुनील महिवाल, नीरज धूत, जितेन्द्र जाजू आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

शपथ विधि समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न

इन्दौर। इन्दौर माहेश्वरी कपल क्लब के पदाधिकारियों एवं कार्य समिति सदस्यों का शपथ विधि समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत महेश वंदना के साथ की गई। इसके पश्चात् पुष्पमाला, श्रीफल एवं पुष्पगुच्छ द्वारा अतिथियों का सम्मान किया गया। पदाधिकारियों को श्री श्याम जाजू एवं कार्य समिति सदस्यों को श्रीमती डॉ. उमाशशि वर्मा ने शपथ दिलाई। अतिथि परिचय जयप्रकाश-अनिता जाखेटिया एवं राजेश-स्मिता मुंगड़ ने दिया।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री संजय-अलका चांडक ने अपनी भावी योजनाओं की जानकारी दी तथा सचिव श्री दिनेश-पूजा शारदा ने गतिविधियों के बारे में बताया। वार्षिक रिपोर्ट का वाचन श्री राजेश-मीना बाहेती ने किया।

विशेष अतिथि के रूप में भाजपा के राष्ट्रीय मंत्री एवं केन्द्रीय कार्यालय प्रभारी श्री श्याम जाजू उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन भूतपूर्व अध्यक्ष श्री वासुदेव-सुधा मालू ने किया तथा आभार श्री गोपाल-नीता सोमानी ने माना।

महेश नवमी पर्व सम्पन्न

आगर-मालवा। स्थानीय माहेश्वरी समाज द्वारा महेश नवमी पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। भगवान महेश के पूजन एवं श्रीमती कीर्ति मूंदड़ा की महेश वंदना के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। इसके पश्चात समाज के विशिष्टजनों का सम्मान तथा उत्सव के दौरान आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताओं में चयनित प्रतिभाओं को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर समाज के मेधावी छात्र-छात्राओं का सम्मान भी किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष श्री मुरलीधर मालानी ने की। संचालन श्री पंकज अटल ने किया तथा आभार सचिव श्री भूपेन्द्र जाजू ने माना।

इन्दौर। भास्कर टी.वी. के बिजनेस एडिटर और इन्दौर प्रेस क्लब के कार्यकारिणी सदस्य श्री नारायण भूतड़ा का सम्मान करते हुए माहेश्वरी समाज के वरिष्ठ पदाधिकारी।

ला. श्याम माहेश्वरी स्वदेश लौटे

उज्जैन। श्री माहेश्वरी टाईम्स उज्जैन के ब्यूरो एवं लायन्स के पूर्व रीजन चेयरमेन लायन श्याम माहेश्वरी को लायन्स क्लब्स इन्टरनेशनल द्वारा हांगकांग में आयोजित अधिवेशन में भाग लेने के लिये हांगकांग पहुंचे। अपने 15 दिवसीय यात्रा पर लायन श्री श्याम माहेश्वरी ने हांगकांग के अलावा बैंकाक, पट्टाया, मकाऊ, मलेशिया, सिंगापुर आदि देशों की यात्रा भी की। श्री श्याम माहेश्वरी ने अपनी इस उपलब्धि का श्रेय अपनी माताजी स्व. कैशरबाई, अग्रज श्री शंकरलाल माहेश्वरी, श्री मदनलाल माहेश्वरी, परिवारजनों एवं मित्रों को दिया। श्री माहेश्वरी टाईम्स के ब्यूरों होने के साथ ही अनेक सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े है, श्री श्याम माहेश्वरी की इस उपलब्धि पर श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार उन्हें बधाई प्रेषित करता है।

कार्यमण्डल ट्रस्ट के चुनाव निर्विरोध सम्पन्न

आगर-मालवा। स्थानीय माहेश्वरी समाज कार्यमण्डल ट्रस्ट के नए पदाधिकारियों के लिए चुनाव श्री गिरधारीलाल जी मालानी सह-सचिव पश्चिमांचल की अध्यक्षता में निर्विरोध सम्पन्न हुए जिसमें श्री मुरलीधर मालानी, अध्यक्ष, श्री महेश माहेश्वरी उपाध्यक्ष, श्री सत्यनारायण अटल सचिव तथा श्री भूपेन्द्र जाजू सहसचिव साथ ही ट्रस्ट की कार्यकारिणी का गठन भी सर्वानुमति से किया गया।

प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का सम्मान किया

उन्हेल-नागदा। उज्जैन जिले के उन्हेल-नागदा माहेश्वरी मंडल द्वारा संयुक्त रूप से महेश जयंती समारोह का आयोजन किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि पत्रकार दिनेश मंडोवरा ने प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को पारितोषिक वितरित कर सम्मानित किया। समारोह में भगवान महेश का अभिषेक पूजन, चित्रकला प्रतियोगिता, साड़ी पेकिंग स्पर्धा आदि शामिल थे। अध्यक्षता माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष मोहनलाल लड्ढा ने की। उपाध्यक्ष मदनलाल आगाल, सचिव जगदीश भूतड़ा, महिला मंडल अध्यक्ष शकुंतला सारडा, नाथुलाल बांगड़, मधुसुदन लड्ढा आदि उपस्थित थे। संचालन नाथुलाल बांगड़ ने किया व आभार जगदीश लड्ढा ने माना। इस मौके पर माहेश्वरी आर्थिक सहायता सेवा समिति का गठन किया गया।

माहेश्वरी मारवाड़ी समाज का चल समारोह निकला

उज्जैन। महेश नवमी 2005 के उपलक्ष्य में विशाल चल समारोह निकाला गया। चल समारोह सुबह 10 बजे से लक्ष्मी नृसिंह मंदिर, छोटा सराफा से निकाला गया। चल समारोह में भगवान महेश का स्थान-स्थान पर पूजन- अर्चन किया गया एवं पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। चल समारोह में बैंड-बाजों के अलावा श्री लक्ष्मी नृसिंह भगवान एवं शिव-पार्वतीजी की झाँकी सजाई गई जो विशेष आकर्षण का केन्द्र रही। अंत में चल समारोह का समापन माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी में हुआ जहाँ कृषि उपज मंडी के माहेश्वरी व्यापारी बंधुओं द्वारा सहभोज का आयोजन रखा गया।

मालानी प्रथम पुरस्कार विजेता

आगर-मालवा।

पाक्षिक पत्रिका 'माहेश्वरी' द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता क्र. 1 तथा 2 में श्री गिरधारीलाल मालानी को प्रथम पुरस्कार विजेता घोषित किया गया। पुरस्कार में क्रमशः 400/- तथा 2001/- रु. की राशि प्रदान की जावेगी। निबंध प्रतियोगिता के पुरस्कार श्री मोहता ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज, हिंगण धार के सौजन्य से प्राप्त होंगे।

निर्विरोध चुनाव सम्पन्न

सूरत। माहेश्वरी नवयुवक मंडल सूरत की 2005-2006 की कार्यकारिणी में 5 सदस्यों का कार्यकाल पूर्ण होने पर 7 नये सदस्यों का निर्विरोध चुनाव सम्पन्न हुआ। चुनाव अधिकारी श्री विनोद बियाणी ने वर्ष 2005-2006 की कार्यकारिणी हेतु निम्न सात सदस्यों को निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया- सर्वश्री रामवल्लभ चांडक, लूणकरण डागा, संदीप कुमार धूत, गोपाल मंत्री, कमल किशोर राठी, राजेन्द्र प्रसाद सारड़ा, महावीर प्रसाद तापड़िया।

श्री माहेश्वरी टाईम्स के सम्पादक पुष्कर बाहेती मुख्यमंत्री श्री बाबुलाल जी गौर को भगवान महाकालेश्वर का चित्र भेंट करते हुए। समीप खड़े हैं प्रेस फोटोग्राफर रशीद खान।

उपलब्धि

अर्पित काकाणी

इन्दौर। श्री त्रिलोकचन्द्र जैन हायर सेकेण्डरी स्कूल इन्दौर के छात्र अर्पित काकाणी ने माध्यमिक शिक्षा मण्डल की 10वीं की परीक्षा में 83 प्रतिशत अंक के साथ कक्षा में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार की ओर से बधाई।

रूणित झंवर

इन्दौर। सत्यसांई विद्या विहार के छात्र रूणित झंवर ने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल की 10वीं की परीक्षा में 93.8 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। उन्होंने गणित विषय में 100 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विशेष उपलब्धि हासिल की है। वर्तमान में रूणित झंवर बंसल क्लासेस, कोटा (राजस्थान) से आई.आई.टी. परीक्षा में प्रवेश हेतु शिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

माधव झंवर

बाग। माधव माहेश्वरी महिला मंडल बाग की अध्यक्षा श्रीमती स्नेहलता पति कमलेश झंवर के पुत्र माधव झंवर ने जिला स्तरीय 5वीं बोर्ड की परीक्षा में 93.66 प्रतिशत अंक प्राप्त कर जिले की प्रावीण्य सूची में 5 वां स्थान प्राप्त किया। उन्हें गणित विषय में शत प्रतिशत अंक प्राप्त हुए। बधाई।

श्री झंवर कोषाध्यक्ष मनोनीत

मन्दसौर। रोटरी क्लब मन्दसौर के वर्ष 2005-2006 के चुनाव 19 जून 05 को सम्पन्न हुए जिसमें मन्दसौर माहेश्वरी समाज के प्रसिद्ध चाय व्यापारी श्री राधेश्याम पिता श्री बद्रीलाल जी झंवर को क्लब का कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया। आपकी नियुक्ति पर श्रीमती गीता झंवर (अध्यक्ष नगर महिला मण्डल) आशीष परवाल (महामंत्री - जिला माहेश्वरी युवा संगठन) एवं इष्ट मित्रों ने बधाई दी।

निखिल दरक

वर्धा। वर्धा के कपड़ा व्यवसायी श्री दामोदर दास दरक के पुत्र निखिल ने सी.बी. एस. सी. पाठ्यक्रम के मैट्रिक के घोषित नतीजों में 93.4 प्रतिशत अंक लेकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। निखिल लॉयड विद्या, मूईगांव का छात्र है। श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार उनकी इस उपलब्धि पर बधाई देता है एवं उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

गौरव काबरा

मन्दसौर। रविन्द्र पिता रमेशचन्द्र जी काबरा ने हायर सेकण्डरी परीक्षा में मन्दसौर जिले की प्राविण्य सूची में तीसरा स्थान प्राप्त कर माहेश्वरी समाज को गौरवान्वित किया। रविन्द्र सभी विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त कर मन्दसौर एंव नीमच जिले के माहेश्वरी समाज में प्रथम स्थान पर रहे। वर्तमान में सी.ए. अध्ययनरत रविन्द्र अपनी इस सफलता का श्रेय अपने माता-पिता, गरुजन, अपने बड़े भाई गौरव काबरा को देते है।

मयूरी दरक

वर्धा। वर्धा की कुमारी मयूरी दरक ने हाल ही में घोषित म.श. के 12 वीं कक्षा में 82 प्रतिशत अंकों के साथ प्रथम स्थान प्राप्त किया है। कुमारी मयूरी गो.से. वाणिज्य महाविद्यालय की छात्रा है। कुमारी मयूरी वर्धा के कपड़ा व्यवसायी श्री दामोदरदास दरक की पुत्री है। श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार की ओर से कुमारी मयूरी को बधाई।

श्री असावा का नाम लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड में दर्ज

कागज नगर। कागज नगर (आंध्रप्रदेश) निवासी श्री हरिप्रसाद असावा ने अपना नाम लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड में दर्ज करवाकर सम्पूर्ण माहेश्वरी समाज का नाम रोशन किया है।

श्री हरिप्रसाद असावा को पुराने नोट, मुद्राएं, रेल्वे टिकिट्स तथा पोस्टल स्टाम्प्स आदि एकत्रित करने का शौक है, अपने इसी शौक के चलते श्री असावा ने माहेश्वरी जाति को यह सम्मान दिलाया है। संभवतः समाज में इस प्रकार का कलेक्शन प्रथम बार है, अब वे अपना नाम गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज करवाने हेतु प्रयासरत हैं। श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार श्री असावा की इस उपलब्धि पर उन्हें बधाई प्रेषित करता है।

राहुल जाजू का अमेरिका में चयन

आगर-मालवा। आगर निवासी श्री हरिवल्लभ जाजू के पुत्र राहुल जाजू का बिल गेट्स की सॉफ्टवेयर कम्पनी माइक्रोसाफ़्ट अमेरिका में चयन हुआ है, राहुल इसके पहले सत्यम कम्प्युटर, चैन्नई में कार्यरत थे। उन्होंने 14 मई 2005 को मुम्बई से अमेरिका के लिए प्रस्थान किया, इस अवसर पर समस्त स्नेहीजनों एवं समाजजनों ने हर्ष व्यक्त किया तथा जाजू परिवार आगर-मालवा को बधाई दी।

बिड़ला आकाशगंगा के दैदिप्यमान सूर्य

श्री कुमारमंगलम

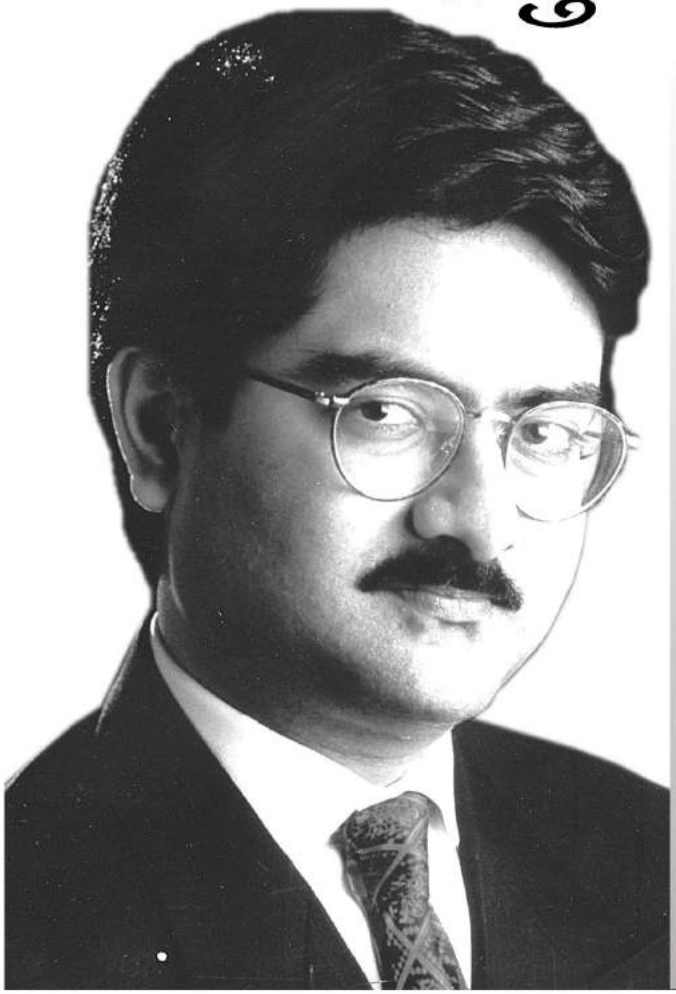

नई सहस्त्राब्दि में भारत में तरक्की और समृद्धि का जो उजाला आज दिखाई दे रहा है, उसमें बिड़लाज की जगमगाहट समाई हुई है। आज इस आकाशगंगा को जो सूर्य दैदिप्यमान किए हुए है उसका नाम है - **श्री कुमारमंगलम।** उद्योगजगत में श्री कुमारमंगलम बिड़ला को ऐसी ऊर्जावान प्रतिभा के रूप में देखा जाता है, जिसने बिड़ला परिवार की शान में चार चाँद लगाए। उनकी उपलब्धियों पर देश को जितना नाज़ है, उससे कहीं अधिक माहेश्वरी समाज अपने इस विलक्षण नक्षत्र पर गौरव करता है। इस युवा उद्यमी की यशोगाथा पर प्रकाश बियाणी की पुस्तक 'शून्य से शिखर' से साभार।

सार-संक्षेप - पुष्कर बाहेती

संयुक्त परिवार में व्यक्तियों का समूह बेहद कच्ची डोर से बंधा होता है। इस डोर का एक भी धागा टूटते ही सारा ताना-बाना बिखर जाता है। परिवार के मुखिया को इस बिखराव की पीड़ा का सबसे ज्यादा अहसास होता है। देश के बहुप्रतिष्ठित बिड़ला औद्योगिक घराने को अस्सी के दशक में ऐसे ही दुर्दिनों का सामना करना पड़ा था। बिड़ला समूह के संस्थापक-सूत्रधार श्री घनश्यामदास बिड़ला (1894-1983) को जीवन के अंतिम वर्षों में न केवल परिवार टूटने की पीड़ा वरन् परिवार की संपदा (उद्योग/व्यापार) के पक्षपातपूर्ण विभाजन का आरोप भी सहना पड़ा। उनके पुत्र श्री बसंतकुमार बिड़ला (जन्म 1921) ने तो वृद्धावस्था में अपने पिता से भी ज्यादा घाव सहे। संयुक्त बिड़ला परिवार की वाणिज्यिक सफलता व सम्पन्नता में अपने यशस्वी पिता के प्रमुख सहयोगी रहे 'बसंत बाबू' अस्सी के दशक में पारिवारिक परम्पराओं के छिन्न-भिन्न होने के मूक साक्षी बने तो नब्बे के दशक में उन्होंने अपने प्रतिभावान पुत्र श्री

आदित्य विक्रम बिड़ला (1943-1995) की अर्थी का बोझ ढोया। यह वज्रपात भी तब हुआ, जब आदित्य विक्रम बिड़ला बँटवारे में मिले औद्योगिक साम्राज्य को पुनः स्थापित कर चुके थे और लंबी उड़ान की तैयारी कर रहे थे। 'कुबेर भी कर्म बंधन से मुक्त नहीं है' - इस तथ्य को चरितार्थ करते हुए 80 वर्ष की उम्र में अपनी सेवानिवृत्ति को 'ब्रेक' देकर बसंत बाबू ने बी.के. बिड़ला समूह की बागडोर पुनः संभाली, पर इससे बड़ा तनाव था श्री आदित्य विक्रम बिड़ला का सारी दुनिया में फैला औद्योगिक साम्राज्य। बिड़ला परिवार का पुण्य प्रताप ही है कि आदित्य विक्रम बिड़ला के एकमात्र पुत्र श्री कुमारमंगलम बिड़ला (जन्म 1967) ने 28 साल की उम्र में अपने अनुभवहीन बाजुओं को अल्पावधि में ही ऐसा 'वेट लिफ्टर' बना लिया कि बिड़ला परिवार 'शिखर से शून्य' वाली दुर्गति से बच गया। उनकी युवा ऊर्जा के कारण बिड़ला घराने का आज यदि कोई वास्तविक नामलेवा (प्रतिष्ठा अनुरूप) बचा है तो वह है 'आदित्य विक्रम बिड़ला समूह' जिसने साबित किया है कि सूर्य इसलिये अस्त होता है कि हम सुबह नए सूर्योदय का स्वागत करें। नई उम्मीद, नई उमंग, नई-आशा-आकांक्षा के साथ नया जीवन शुरू करें।

बिड़ला घराने के पितृ-पुरूष हैं राजा बलदेवदास बिड़ला (1863-1956), पर उनकी वाणिज्यिक गतिविधियाँ केवल ट्रेडिंग तक ही सीमित रहीं। टाटा समूह के साथ देश में स्वदेशी उद्योगों की बुनियाद रखने का श्रेय राजा बलदेवदास बिड़ला के पुत्र श्री घनश्यामदास बिड़ला (जी.डी. बिड़ला) और उनके भाइयों- श्री जुगलकिशोर बिड़ला, श्री रामेश्वरदास बिड़ला (1892-1973) व श्री ब्रजमोहन बिड़ला (1905-1982) ने संजोया है। इन बिड़ला बन्धुओं में कुशाग्र वाणिज्यिक बौद्धिकता के धनी श्री जी.डी. बिड़ला 12 वर्ष की उम्र में परिवार के कारोबार से जुड़ गए थे। बीस वर्ष की उम्र में उन्होंने अपनी संपदा बीस लाख रुपये कर ली थी। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान हैसियन क्लाथ व अन्य वस्तुओं की ट्रेडिंग से उन्होंने खूब धन कमाया। सन् 1918 में एक जूट मिल एवं कॉटन मिल की स्थापना करके उन्होंने मैन्यूफेक्चरिंग सेक्टर में प्रवेश किया। उनके द्वारा स्थापित बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड इसके साथ 'बिड़ला समूह' बना। अंग्रेजों का मुख्यालय कलकत्ता बिड़ला समूह की भी कर्मभूमि रहा। समझौता-परस्त मारवाड़ी प्रवृत्ति के कारण बिड़ला समूह ने द्रुत गति से प्रगति की। चालीस के दशक में देश के आजाद होने के संकेत दिखने लगे तो अंग्रेज उद्योगपति/व्यापारी बोरिया-बिस्तर समेटने लगे। जिन स्वदेशी उद्योगपतियों ने उनके कल-कारखाने, कोठी, दफ्तर औने-पौने दामों में खरीदे, उनमें बिड़ला घराना सबसे आगे था। 77 साल के बेहद यशस्वी बिजनेस कैरियर के साथ 82 वर्ष की उम्र में जब श्री जी.डी. बिड़ला का निधन हुआ, तब बिड़ला समूह की संपदा का मूल्य था दो हजार करोड़ रुपये।

श्री कुमारमंगलम - पिताश्री एवं दादाश्री के साथ

अस्सी के दशक में संयुक्त परिवार की डोर ढीली होने लगी। अस्सी वर्षीय श्री जी.डी. बिड़ला की पीड़ा का अनुमान लगाएँ। तिनके-तिनके से जो औद्योगिक साम्राज्य उन्होंने बनाया था, उसे खुद ही तिनके-तिनके में बिखेरा। सन् 1983 में बिड़ला कंपनियों का बँटवारा शुरू हुआ। श्री जी.डी. बिड़ला पर यह आरोप लगा कि उन्होंने समूह की स्टार कम्पनियाँ अपने सबसे प्रिय पुत्र श्री बसंतकुमार बिड़ला व पोते श्री आदित्य विक्रम बिड़ला को दी। मसलन, ग्रेसिम, इंडियन रेयान, केसोराम, हिंडाल्को या सेंचुरी इंका आदि। अपने निजी व वाणिज्यिक जीवन के बीच हमेशा एक मोटी दीवार रखना बिड़लाज की परंपरा रही है। 'घर

की बात घर से बाहर न पहुँचे' इसका बिड़ला परिवार ने हमेशा ध्यान रखा है तदनुसार बिड़लाज़ से जुड़ी हुई कई अप्रिय बातों का कभी विधिवत् खुलासा नहीं हुआ है। पारिवारिक संपदा के असमान विभाजन के संदर्भ में कहा गया कि श्री जी.डी. बिड़ला को श्री आदित्य विक्रम बिड़ला की प्रतिभा पर बहुत भरोसा था। शायद दादा ने पोते में अपनी युवावस्था देख ली थी। यही हुआ...

प्रतिबंधों के जमाने में जब जिस चीज को बनाने के उन्हें लायसेंस मिले, वे उसी क्षेत्र में प्रवेश करते गए। मसलन, एल्यूमीनियम, कार्बन ब्लैक, कास्टिक सोडा, सीमेंट, केमिकल्स, खाद, फायबर्स, फाईल्स, इंडस्ट्रीयल गैसेस, एचडीपीई बैग्स, इंसुलेटर्स, माइनिंग, पल्स, रिफायनिंग, सी-वाटर मेग्नेसिया, स्पोंज आयरन, स्टील कॉपर, टैक्सटाइल्स, थर्मल पॉवर, टेलीकॉम या खाद्य तेल सबमें उनका दखल हो गया।

दिलचस्प बात यह है कि प्रतिबंधों ने श्री आदित्य विक्रम बिड़ला को देश में मल्टी-प्रॉडक्ट उद्योगपति बनाया तो प्रतिबंधों के कारण ही वे बहुराष्ट्रीय उद्योगपति बने। लायसेंस प्रणाली से खिन्न श्री आदित्य विक्रम बिड़ला (रिफाईनरी परियोजना को अफसरशाही से 11वर्षों के बाद अनुमति जैसी घटना) ने विदेशों में कम्पनियाँ स्थापित की और खूब नाम व नामा (प्रतिष्ठा व पैसा) कमाया। सन् 1974 में श्री आदित्य विक्रम बिड़ला ने पहला विदेशी संयंत्र थाईलैंड में लगाकर पहले भारतीय ग्लोबल उद्योगपति होने का गौरव प्राप्त किया था। सन् 1995 में प्रोस्टेट कैंसर से निधन के समय वे 14 देशों में 61 कंपनियों/कारखानों का संचालन कर रहे थे, जिनसे करीब 1,40,000 परिवारों को प्रत्यक्ष रोजगार मिला हुआ था।

आदित्य विक्रम बिड़ला समूह के स्वतंत्र सिरमौर बनने के बाद श्री कुमारमंगलम के क्रियाकलापों का आकलन करें तो उन्हें बेहिचक इस देश का ऐसा सर्वश्रेष्ठ युवा उद्योगपति कह सकते हैं, जिन्होंने एक बेहद अनुशासित परिवार की अस्सी साल की कालातीत वाणिज्यिक प्रणालियों को आठ साल में पूरी तरह बदल डाला, पर अपने जन्मजात संस्कारों पर आँच नहीं आने दी।

बचपन से ही बड़े बिजनेस को संभालने की तैयारी के कारण श्री कुमारमंगलम बिड़ला बिना बाधा 'सिंहासनारूढ़' (आदित्य विक्रम बिड़ला समूह के चेयरमेन) तो हो गए, पर चुनौतियां कम नहीं थी। श्री आदित्य विक्रम बिड़ला ने समूह का व्यापक विस्तार किया और बिड़ला परिवार खासकर अपने दादा श्री जी.डी. बिड़ला व पिता श्री बसंतकुमार बिड़ला का सुयश बदलते दौर में बचा लिया, पर जाने-अनजाने वे एक लंबा एजेंडा (कार्यसूची) भी अधूरी छोड़ गए। परिवार नियंत्रित समूह की अलग-अलग कम्पनियाँ अपने-अपने स्तर पर समान करोबार कर ही थी। समान उत्पाद के लिए अलग-अलग मार्केटिंग नेटवर्क, वित्तीय व्यवस्था व मूल्य नीति को बदलने के लिये श्री कुमारमंगलम को समूह के बिजनेस का एकीकरण करना पड़ा। ग्रुप कम्पनियों में क्रॉस-होल्डिंग्स को भी श्री कुमारमंगलम ने प्रखर बौद्धिकता से हल किया है। समूह कई ऐसे क्षेत्रों में भी सक्रिय था, जिनमें निवेश के अनुरूप रिटर्न नहीं था। श्री कुमारमंगलम ने समूह के लिये नीति बनाई कि हम वही बिजनेस पूरी ताकत से करें, जिसमें अव्वल या अग्रणी हों, या भविष्य में हो सकें। आदित्य विक्रम बिड़ला के महत्वाकांक्षी रिफाईनरी प्रोजेक्ट (मेंगलोर रिफाईनरी एंड पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड) की इक्विटी ओएनजीसी को न्यूनतम मूल्य पर बेचते समय वे भावना में नही बहे। ऐसे मामलों में श्री कुमारमंगलम ने रोज़मर्रा की मरहम पट्टी के बजाए एक बार के बड़े घाव (भारी घाटे) को पसंद किया।

जिन क्षेत्रों में आदित्य विक्रम बिड़ला समूह ज्यादा मजबूत हो सकता है, उन्हें चिन्हित करके अधिग्रहण को उन्होंने अपनी रणनीति बनाई। मात्र आठ वर्षों में माँ-बेटे (श्रीमती राजश्री आदित्य विक्रम बिड़ला व श्री कुमारमंगलम) द्वारा सीमेंट, एल्यूमीनियम व कॉपर (आस्ट्रेलिया में निफ्टी खदानों का अधिग्रहण) क्षेत्र में बारह बड़ी खरीदी (अधिग्रहण) देखकर कॉमर्स मीडिया ने तब शीर्षक बनाए थे- 'माँ-बेटे कॉर्पोरेटेड हाट-बाजार में।' विदेश स्थित कंपनियों की आदित्य विक्रम बिड़ला समूह के टर्नओवर में 30 फीसदी की हिस्सेदारी को बढ़ाने के लिये श्री कुमारमंगलम ने 50 से 150 करोड़ रुपए (प्रत्येक कंपनी के जरूरत के अनुसार) का नया निवेश किया।

परंपरागत व स्थापित बिजनेस के इतने बड़े व इतने तीव्र पुनर्गठन के साथ नॉलेज व टेक्नालॉजी सेक्टर (सेल फोन सेवा आइडिया-बिड़ला, टाटा व ईटी एंड टी) में भागीदारी के अलावा कनाडा की सन लाइफ के साथ जीवन बीमा क्षेत्र के लिये श्री कुमारमंगलम बिड़ला ने बिड़ला सन लाइफ स्थापित की। श्री कुमारमंगलम के अनुसार- 'सन् 1995 में मैंने जब समूह के सूत्र संभाले थे, तब सलाह दी गई थी कि कॉरपोरेटेड वर्ल्ड में अपना अस्तित्व दर्शाने के लिये मैं किसी मेगा-प्रोजेक्ट की घोषणा करूँ, पर मैंने ऐसा करने के बजाए उन बिजनेस को छोड़ने की रणनीति बनाई जो ग्रुप के लिये बोझ थे।' बिजनेस पुनर्गठन से ज्यादा कठिन काम था-मानव संसाधन नीति में सामयिक फेरबदल। मालिक का कथन (उपस्थित व निर्णय) ब्रह्म-वाक्य है, यानी बाबु सर्वोपरि है-बिड़ला समूह की इस परंपरा को उन्होंने सबसे पहले छिन्न-भिन्न (अपने अधिकार घटाए) किया। सुझाव व सलाह के चैनल नीचे से ऊपर तक खोले।

श्री कुमारमंगलम की दूसरी बड़ी पहल है- बिड़ला समूह में सेवानिवृत्ति नीति लागू करना, जिससे 62 से 65 वर्ष की उम्र में 225 सीनियर एक्जीक्यूटिव्स (इनमें अधिकतर बिड़ला के लेफ्टिनेंट थे) सेवामुक्त हुए और उनकी जगह श्री कुमारमंगलम के हम-उम्र एक्जीक्यूटिव्स ने ली। कई वरिष्ठ पदों पर बाहरी विशेषज्ञों की विशेष पैकेज पर विशेष जॉब के लिये नियुक्ति की गई। पहली बार कोई बिड़ला स्वयं बिजनेस स्कूलों के कैम्पस में पहुँचा। आईआईटी और आईआईएम कैम्पस इंटरव्यू में स्वयं श्री कुमारमंगलम की उपस्थिति से दो स्तरों पर संदेश पहुँचा। एक, नए युवा प्रोफेशनल के साथ पुराने एक्जीक्यूटिव्स को आभास हुआ कि आदित्य

विक्रम बिड़ला ग्रुप अब परंपराओं का बोझ नहीं ढोएगा, दूसरे, परफॉरमेंस व प्रतिस्पर्धा को प्राथमिकता देगा।

श्री कुमारमंगलम बिड़ला ने आठ साल के कार्यकाल में समूह की अस्सी साल पुरानी व्यवस्था समाप्त की। उन्होंने मीडिया के लिए दरवाजे खोले। गौर करें कि विगत चार-पाँच सालों में आदित्य विक्रम बिड़ला समूह के बारे में पत्र-पत्रिकाओं में जितनी सामग्री छपी है, वह सन् 1912 (मूल समूह की स्थापना) से आज तक प्रकाशित कुल सामग्री से ज्यादा है। दादा (श्री जी.डी. बिड़ला) ने अपने पोते आदित्य विक्रम बिड़ला में संभावना देखी थी। पोते ने दादा को निराश नहीं किया। विधाता से अल्पायु मिली, पर उसमें भी उन्होंने बिड़ला घराने का सुयश बचा लिया। यही नहीं, अपने पुत्र में अपने दादा-पिता व अपने वाणिज्यिक गुणधर्म इतनी सुघड़ता से हस्तांतरित किए कि उन्होंने एक दशक से भी कम समय में एक शताब्दी पुराने परिवार नियंत्रित परंपरागत समूह को प्रोफेशनल व प्रतिस्पर्धी बना दिया। बिजनेस इंडिया के 'बिजनेस ऑफ द ईयर अवार्ड - 2003' अवार्ड से नवाजे गए, श्री कुमारमंगलम बिड़ला आज कॉर्पोरेट वर्ल्ड में कॉर्पोरेट गवर्नेंस के युवा रोल मॉडल हैं। निजी संपदा के आधार पर देश के इस युवा कुबेर ने अपने स्वर्गीय पिता के प्रति आदरांजलि अर्पित करते हुए 30 हजार करोड़ रुपये (सन् 1995 में पिता के निधन के समय 15 हजार करोड़ रुपये) के आदित्य विक्रम बिड़ला का नया लोगो 'आदित्य' को समर्पित किया है।

बिड़ला परिवार की समाजसेवा

देश की अर्थव्यवस्था व औद्योगिक विकास में अहम भूमिका निभाने वाले बिड़ला घराने ने सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक क्षेत्र में भी विशेष प्रतिष्ठा संजोई है। सारे देश में चालीस से ज्यादा भव्य देवालय 'बिड़ला टेम्पल' के नाम से जाने जाते हैं तो सैकड़ों धर्मशालाएँ-संग्रहालय व प्लेनेटोरियम्स बिड़ला बन्धुओं ने बनवाए हैं। बिड़ला के प्रमुख उत्पादन संयंत्रों के नजदीक स्थापित टाऊनशिपों को मॉडर्न-मिनी टाऊन कह सकते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में बिड़ला परिवार ने कई अनूठी पहल की हैं- बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी, बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ सांइटिफिक रिसर्च, मेडिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट, रानी बिड़ला गर्ल्स कॉलेज इनमें उल्लेखनीय है। इस शृखंला में श्री कुमारमंगलम बिड़ला की पत्नी श्रीमती नीरजा बिड़ला ने बैंगलोर में 67 एकड़ भूखंड पर भव्य हायर सेकंडरी स्कूल बनवाया है।

अर्जुन का रथ

महाभारत युद्ध चल रहा था। अर्जुन के सारथी श्रीकृष्ण थे। जैसे ही अर्जुन का बाण छूटता, कर्ण का रथ कोसों दूर चला जाता। जब कर्ण का बाण छूटता तो अर्जुन का रथ सात कदम पीछे चला जाता। श्रीकृष्ण ने अर्जुन के शौर्य की प्रशंसा के स्थान पर कर्ण के लिए हर बार कहा कि कितना वीर है यह कर्ण! जो उस रथ को सात कदम पीछे धकेल देता है। अर्जुन बड़े परेशान हुए। असमंजस की स्थिति में पूछ बैठे कि हे वासुदेव! यह पक्षपात क्यों? मेरे पराक्रम की आप प्रशंसा करते नहीं एवं मात्र सात कदम पीछे धकेल देने वाले कर्ण को बारंबार वाहवाही देते हैं।

श्रीकृष्ण बोले - अर्जुन तुम जानते नहीं। तुम्हारे रथ में महावीर हनुमान एवं स्वयं मैं वासुदेव कृष्ण विराजमान हूं। यदि हम दोनों न होते तो तुम्हारे रथ का अभी अस्तित्व भी नहीं होता। इस रथ को सात कदम पीछे हटा देना कर्ण के महाबली होने का परिचायक है। अर्जुन को यह सुनकर अपनी क्षुद्रता पर ग्लानि भी हुई।

इस तथ्य को अर्जुन और भी अच्छी तरह तब समझ पाए जब युद्ध समाप्त हुआ। प्रत्येक दिन अर्जुन जब युद्ध से लौटते श्रीकृष्ण पहले उतरते, फिर सारथी धर्म के नाते अर्जुन को उतारते। अंतिम दिन वे बोले - अर्जुन! तुम पहले उतरो, रथ से थोड़ी दूरी तक जाओ। भगवान के उतरते ही रथ भस्म हो गया। अर्जुन आश्चर्यचकित थे। भगवान बोले- पार्थ! तुम्हारा रथ तो कभी का भस्म हो चुका था। भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य व कर्ण के दिव्यास्त्रों से यह कभी का नष्ट हो चुका था। मेरे संकल्प ने इसे युद्ध समापन तक जीवित रखा था। अपनी विजय पर गर्वोन्नत अर्जुन के लिए गीता श्रवण के बाद इससे बढ़कर और क्या उपदेश हो सकता था कि सब कुछ भगवान का किया हुआ है। वह तो निमित्त मात्र था। काश हमारे अंदर का अर्जुन इसे समझ पाए।

समाज सरोकार

नये उद्योगों को आयकर सुविधाओं का लाभ

■ रामनिवास लाखोटिया

समय-समय पर आयकर कानून में ऐसे प्रावधान सम्मिलित होते रहे हैं, जिनके द्वारा नये उद्योगों को पूर्ण या आंशिक कर मुक्ति प्रदान की जाती रही है ताकि भारत में औद्योगीकरण पनपे। कई प्रकार के छोटे-छोटे उद्योगों पर मिलने वाली कटौतियां या कर मुक्तियां समाप्त हो गई हैं लेकिन अभी भी विभिन्न प्रकार की आयकर सुविधाएं पूर्ण या आंशिक कर मुक्ति या छूट के रूप में प्राप्त है। इस प्रस्तुत लेख में इन प्रमुख आयकर सुविधाओं का संक्षिप्त वर्णन किया जा रहा है ताकि इच्छुक समाजबंधु इन सुविधाओं का लाभ लेकर नये उद्योग स्थापित कर सकें।

वित्त बड़ा जटिल विषय है पर इसके बिना आज जीवन संभव नहीं है। इस जटिल क्षेत्र को आसान बनाने के लिए श्री माहेश्वरी टाईम्स के हर अंक में विशेषज्ञ की टिप्पणी पढ़ें। इस बार आयकर पर सुप्रसिद्ध कर सलाहकार श्री रामनिवास लखोटिया की टिप्पणी...

10 वर्षीय पूर्ण कर मुक्ति

कोई भी उद्यमी जिसके द्वारा ऐसी बुनियादी सुविधाएं जैसे सड़क, राष्ट्रीय मार्ग, नई पुलिया, हवाई अड्डा, आन्तरिक बन्दरगाह, जल मार्ग, जल सफाई एवं सोलिड वेस्ट प्रबन्ध आदि के निर्माण या रेल यातायात सुविधाएं आदि बनाने का और उन्हें चलाने का कार्य प्रारम्भ करे तो प्रथम 20 वर्ष और कुछ दशाओं में प्रथम 15 वर्षों में से कोई भी लगातार 10 वर्ष तक उसका मुनाफा शत प्रतिशत कटौती योग्य रहेगा अर्थात वह पूर्णतः आयकर मुक्त होगा। इसके लिये कुछ साधारण सी शर्तों का पालन करना भी जरूरी रहता है लेकिन यह आयकर सुविधा बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार यदि कोई करदाता औद्योगिक पार्क का निर्माण करे या उसे चलाने का कार्य करे या उसके प्रबन्धन को सम्भाले या ऊर्जा उत्पादन एवं वितरण वाले उद्योगों को 31 मार्च 2006 तक चालू करे तो उन्हें भी उपरोक्त 10 वर्ष की पूर्ण कर कटौती प्राप्त हो सकेगी। इसी प्रकार कोई करदाता जम्मू कश्मीर में अभी भी नया उद्योग स्थापित करे तो प्रथम 5 वर्षों में आयकर के लिये पूर्ण कटौती और अगले 5 वर्षों के लिये आंशिक कर कटौती उसे प्राप्त हो सकेगी लेकिन ऐसा उद्योग 31 मार्च 2007 तक अवश्य ही स्थापित हो जाना चाहिये। यह सुविधाएं आयकर अधिनियम की धाराएं 80 आई.ए. एवं 80 आई. बी. के अन्तर्गत उपलब्ध होती है।

मुक्त व्यापार व विशेष आर्थिक क्षेत्र में कर मुक्ति

आयकर अधिनियम 1961 की धारा 10 ए के अनुसार मुक्त व्यापार क्षेत्र और विशेष आर्थिक क्षेत्र में यदि नये उद्योग लगाएं जिनका मूल उद्देश्य निर्यात करना हो तो कर निर्धारण वर्ष 2009-10 तक उनकी आय पूर्णतः कर मुक्त होगी।

निर्यात इकाइयों को कर-मुक्ति

आयकर अधिनियम 1961 की धारा 10 बी के अन्तर्गत 100 प्रतिशत निर्यात वाली औद्योगिक इकाइयों के लाभों पर कर निर्धारण वर्ष 1999-2000 से 10 वर्षों तक कोई भी आयकर नहीं लगेगा। कर निर्धारण वर्ष 2010-11 से यह कटौती या कर मुक्ति किसी भी करदाता को प्राप्त नहीं हो सकेगी।

आवासीय मकान निर्माण कार्यों के नफों पर कटौती

धारा 80 आई बी (10) के अन्तर्गत आवासीय मकान निर्माण से होने वाले लाभ पूर्णतः कर मुक्त रहेंगे। बशर्ते की मकान निर्माण के लिये कम से कम एक एकड़ जमीन हो और प्रत्येक आवासीय इकाई का निर्मित भाग 1500 वर्ग फुट से अधिक नहीं हो। ऐसे प्रोजेक्ट का नक्शा 31 मार्च 2007 तक स्थानीय प्राधिकरण से स्वीकृत होकर जिस वित्तीय वर्ष में वह नक्शा स्वीकृत हुआ है उसके 4 वर्ष के भीतर ही वह प्रोजेक्ट पूरा हो तो उस प्रोजेक्ट का पूरा नफा शत प्रतिशत कर मुक्त रहेगा। मुम्बई तथा दिल्ली व उनकी सीमा के 25 किलोमीटर तक निर्मित आवासीय इकाई 1000 वर्ग फीट तक सीमित रहेगी। मकानों आदि के लिये निर्मित क्षेत्र का अधिकतम 5 प्रतिशत भाग तक व्यापारिक कार्यों के लिये रखा जा सकेगा। इसी प्रकार फल, तरकारी से सम्बन्धित उद्योग आदि को भी धारा 80 आई बी के अन्तर्गत कर कटौती प्राप्त है।

हिमाचल प्रदेश, सिक्किम, उत्तरांचल एवं उत्तरी पूर्वी राज्यों हेतु कर की कटौती

आयकर अधिनियम की नई धारा 80 आई सी के अन्तर्गत ऐसे उपक्रम या औद्योगिक इकाइयां जो 13 वीं परिशिष्ट में वर्णित वस्तुओं को छोड़कर किसी अन्य वस्तु या 14 वीं परिशिष्ट में वर्णित वस्तुओं का उत्पादन करें और जो इस सम्बन्ध में ज्ञापित कुछ विशेष क्षेत्रों में लगे हुए हों तो उन्हें सिक्किम तथा उत्तरी पूर्वी राज्यों के उद्योगों मे उल्लेखनीय विस्तार पर भी यह कर मुक्ति की सुविधा प्राप्त हो सकेगी। नये उद्योगों के अलावा उद्योगों में उल्लेखनीय विस्तार पर भी यह कर मुक्ति प्राप्त हो सकेगी। उत्तरांचल एवं हिमाचल प्रदेश में लगे हुए उद्योगों के लिये केवल 5 कर निर्धारण वर्षों के लिये सौ प्रतिशत कर मुक्ति रहेगी। उसके पश्चात् अगले 5 वर्षों के लिये 25 प्रतिशत कटौती (कम्पनियों के लिये 30 प्रतिशत) प्राप्त हो सकेगी। जो करदाता ऐसे क्षेत्रों में नये उद्योग स्थापित करने के इच्छुक हैं वे इस सम्बन्ध में कुछ और साधारण सी शर्तों का अध्ययन कर आयकर सुविधाओं का लाभ उठा सकते हैं। ✪

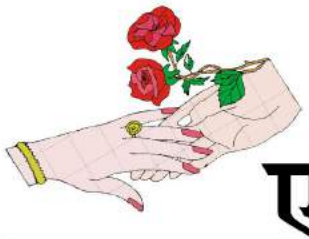

परिचय सम्मेलन एक अच्छी शुरूआत

■ अतुल माहेश्वरी (सी.ए.)

आधुनिक समाज की आवश्यकताओं ने परिचय सम्मेलन के रूप में ऐसी सार्थक परम्परा की नींव रखी है, जो विवाह के पूर्व युवक-युवतियों को समाज में परिचित कराने के साथ एक दूसरे को प्रत्यक्ष जानने-समझने का अवसर भी देती है। ज़रूरत है तो बस श्रेष्ठीवर्ग द्वारा इसे अपनाने भर की।

आज सभी समाजों में विवाह योग्य युवक-युवतियों के परिचय सम्मेलन आयोजित किये जा रहे हैं। काम की व्यवस्था, स्थानों की दूरी, प्रवास की कठिनाइयां, समय का अभाव तथा अपरिचय की समस्या से उबरने का इससे सरल कोई और समाधान नहीं दिखता। परिचय-सम्मेलन से न केवल इन सभी समस्याओं से एक साथ निजात मिल जाती है अपितु परस्पर देखने, सुनने व समझने का अवसर भी मिल जाता है।

वस्तुतः परिचय सम्मेलन सामूहिक विवाह की एक कड़ी है। इसकी प्रथम कड़ी है-परिचय-पुस्तिका का प्रकाशन एवं अंतिम कड़ी है-सामूहिक विवाह। वस्तुतः ये तीनों कड़ियां मिलकर ही वैवाहिक संदर्भ की सम्पूर्ण इकाई बनाती हैं किन्तु ये तीनों इकाई भी स्वयं में सम्पूर्ण नहीं, तो पूर्ण तो हैं ही। अतः यह आवश्यक है कि आयोजक यदि परिचय पुस्तिका का प्रकाशन करते हैं तो परिचय सम्मेलन का भी आयोजन करें, और यदि सम्मेलन का आयोजन करते हैं तो सामूहिक विवाह का भी आयोजन करें। इन तीनों इकाईयों की पूर्णता से ही उद्देश्य की सिद्धि होती है।

कोई भी समाज जब इस संदर्भ में प्रथम सोपान-परिचय पुस्तिका के प्रकाशन का संकल्प करता है तो परिचय पत्रों को भरवाकर एकत्रित करता है जिससे परिचय पुस्तिका का प्रकाशन संभव हो पाता है और अनेक युवक-युवतियों की फोटो-सहित जानकारी एक साथ उपलब्ध हो जाती है जिसके आधार पर इच्छुक परिवार परस्पर संपर्क स्थापित कर विवाह की प्रक्रिया को गति प्रदान कर सकते हैं।

इसके बाद परिचय सम्मेलन का द्वितीय सोपान प्रारंभ होता है। यदि सम्मेलन के पर्याप्त समय पूर्व प्रकाशित परिचय पुस्तिका इच्छुक परिवारों को प्राप्त हो जाती है तो वे विभिन्न माध्यमों द्वारा परस्पर संपर्क कर उक्त सम्मेलन में पहुंचने व भेंट करने हेतु निवेदन कर साधनों की पर्याप्त बचत कर सकते हैं और अनुकूल वर-वधू तलाशने का महत्वपूर्ण अवसर उन्हें प्राप्त हो जाता है। किन्तु परिचय पत्र भरने की उदासीनता के कारण परिचय-पुस्तिका के प्रकाशन में विलंब हो ही जाता है जिससे सम्मेलन के पर्याप्त समय पूर्व प्रत्याशी परिवारों को पत्रिका उपलब्ध नहीं हो पाने के कारण परस्पर संपर्क करना संभव नहीं हो पाता। इस उदासीनता को तोड़े जाने पर ही आगे की दोनों कड़ियों की सार्थकता एवं सफलता सिद्ध हो सकती है।

परिचय सम्मेलन में युवक-युवतियों का परिचय करवाया जाता है। इस संदर्भ में इच्छुक युवक-युवतियों के मुखारविंद से ही उनका परिचय सुनने के इच्छुक रहते है। इससे उनकी आकृति, बोलचाल की शैली, आवाज, वेशभूषा व अन्य रूचियों के साथ ही उनकी शालीनता का पता भी एक साथ लग जाता है किन्तु वास्तविकता यह है कि युवक-युवती सम्मेलन होने के बावजूद प्रत्याशीगण मंच पर आने और अपना परिचय देने में संकोच का अनुभव करते हैं, जिससे इस नाजुक और महत्वपूर्ण अवसर का लाभ प्रत्याशी को तो मिलता ही नहीं, अपितु सम्मेलन की सार्थकता पर भी प्रश्न चिन्ह लग जाता है। इस सम्पूर्ण संदर्भ का अंतिम सोपान है-सामूहिक विवाह, जिसकी सार्थकता और सफलता प्रथम दो सोपानों पर निर्भर करती है।

इसका सर्वाधिक विडंबनापूर्ण पहलू यह है कि जो सम्भ्रांतजन इस आयोजन को सफल बनाने हेतु प्रयत्नशील होते हैं, वे स्वयं अपने पाल्यों का विवाह इस रूप से नहीं करना चाहते। जिस कारण ये आयोजन असफल प्रमाणित होते हैं। इनकी अनिवार्य सफलता के लिये यह आवश्यक है कि इच्छुक जन समय पर परिचय-पत्र भरने की महत्वपूर्ण औपचारिकता का निर्वाह करें, जिससे परिचय पुस्तिका सुनिश्चित समय पर प्रकाशित हो और सम्मेलन के पर्याप्त समय पूर्व उन्हें उपलब्ध हो सके।

कमाने के नए रास्ते

■ हरीश कुमार सिंह (एम.बी.ए.)

प्रतिस्पर्धा के दौर में एक ओर जहाँ बेरोजगारी दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और नौकरियाँ सीमित हो गई हैं, ज़रूरत रोजगार के अन्य विकल्प तलाशने की है। क्या जरूरत है कि प्रत्येक छात्र एम.बी.बी.एस., बी.ई., आई.आई.टी. या ऐसे ही किसी कोर्स में एडमिशन के लिए भागे। आज इन डिग्रीधारी बेरोजगारों की संख्या भी विशाल है तथा बी.ए. और एम.बी.ए. में ज्यादा अंतर नहीं रह गया है, क्योंकि दोनों ही डिग्रियाँ बेराजगार ही पैदा कर रही हैं। ऐसे में स्वयं का रोजगार ढूँढ़कर कैरियर बनाना, सर्वोत्तम तो है ही, यदि कुछ ऐसे कोर्स पर ध्यान दिया जाए जिनमें शिक्षा लेने से स्वयं का रोजगार शुरु कर खुद मालिक बन सकते हैं या अच्छी नौकरी पा सकते हैं। चिकित्सा विज्ञान की कुछ शाखाएँ ऐसी हैं जिनमें प्रवेश भी आसान है और कोर्स समाप्त होने पर रोजगार भी हाजिर। कैरियर के नए और बेहतर विकल्प मौजूद हैं।

फिजियोथेरेपी/ऑक्युपेशनल थेरेपी -

बैचलर ऑफ फिजियोथेरेपी या बैचलर ऑफ ऑक्युपेशनल थेरेपी की डिग्री 12वीं कक्षा के पश्चात प्रवेश लेकर पा सकते हैं। चिकित्सा विज्ञान की ये दो शाखाएँ इन दिनों काफी लोकप्रिय हो रही हैं तथा इन विधाओं की उच्च शिक्षा के लिये कई बेहतर संस्थाएँ देश में खुल गई हैं।

आधुनिक युग में प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि वह स्वस्थ्य रहे, सानंद रहे। यदि उसे कोई शारीरिक व्याधि हो भी गई है तो फिजियोथेरेपी के जरिए वह सामान्य अवस्था में लौट सकता है। यदि कोई बीमारी नहीं भी है तो फिजियोथेरेपिस्ट स्वस्थ्य आदमी को फिट रहने की टिप्स और ट्रेनिंग देता है। फिजियोथेरेपिस्ट का ज्ञान एवं आधुनिक उपकरण व्यक्ति को स्वस्थ रखने, स्वस्थ होने में मदद करते हैं। हाथ-पांव के जोड़ के रोग या पेरेलिसिस (लकवा) में फिजियोथेरेपी ही सर्वोत्तम इलाज माना गया है। व्यायाम एवं शारीरिक क्रियाओं के जरिए लकवे से सामान्य स्थिति में लाने में जितनी दवाइयाँ मददगार है उससे कहीं अधिक फिजियोथेरेपी। ऑक्युपेशनल थेरेपी में कन्सलटेंट रोगी व्यक्ति के जीवन को पुनः सामान्य स्थिति में लाने में मदद करता है। फिजियोथेरेपी का आकर्षण भी बढ़ा है तथा रोगी नैसर्गिक क्रियाओं के द्वारा स्वस्थ्य होना ज्यादा पसंद करता है और फिजियोथेरेपी इसमें मददगार है। प्रत्येक अस्पताल में जहां फिजियोथेरेपी/ऑक्युपेशनल थेरेपी का विभाग होना आजकल आम बात है वहीं आधुनिक उपकरणों में निवेश कर स्वयं का फिजियोथेरेपी सेंटर भी खोला जा सकता है। बी.पी.टी. के बाद आजकल, एम.पी.टी. (मास्टर ऑफ फिजियोथेरेपी) की डिग्री भी दी जा रही है।

अच्छा रोजगार आज हर युवा की आवश्यकता है। इस स्तम्भ में हम युवाओं को रोजगार के नए अवसरों की जानकारी देंगे। प्रस्तुत है चिकित्सा विज्ञान की शाखाओं में रोजगार की संभावनाओं पर एक नजर...

मेडिकल ट्रांसक्रिप्शन -

मेडिकल ट्रान्सक्रिप्शन का मतलब है चिकित्सकीय शब्दावली को समझकर उसका सुव्यवस्थित रिकॉर्ड रखना। विदेशों की तरह भारत में भी 'स्वास्थ्य बीमा' लोकप्रिय हो रहा है। स्वास्थ्य बीमा के लिये उपचार से संबंधित दस्तावेज, मूल रूप में आवश्यक होते हैं। ऐसे में चिकित्सक की भाषा समझकर उसे लिखना तथा रिकॉर्ड बनाना जरूरी होता है। मेडिकल ट्रांसक्रिप्शन के रूप में 12वीं कक्षा या स्नातक के पश्चात् प्रशिक्षण प्राप्त कर अच्छा रोजगार पा सकते हैं।

बी. फार्मा -

बैचलर ऑफ फार्मेसी की डिग्री के अलावा आजकल डिप्लोमा (डी. फार्मा) भी उपलब्ध है। 12वीं कक्षा के पश्चात् मुख्यतः स्वयं का मेडिकल स्टोर खोलने के लिए बी. फार्मा की डिग्री आवश्यक है। मेडिकल स्टोर में आकर्षक कमीशन होता है तथा यह प्रतिष्ठित व्यवसाय है। बी फार्मा/डी फार्मा में प्रवेश आसानी से उपलब्ध है, क्योंकि संस्थानों ने यह कोर्स, लोकप्रियता देखकर शुरु किये हैं। यदि आप डिग्री लेकर भी मेडिकल स्टोर नहीं खोलना चाहते हैं तो किसी सहयोगी के साथ जिसके पास स्टोर के लिये पूंजी है, यह कार्य कर सकते हैं। पूंजी आपके सहयोगी की तथा डिग्री आपकी, दोनों मिलकर मेडिकल स्टोर से अच्छा कमा सकते हैं।

सफलता की सीढ़ी है असफलता

■ महेश चन्द्र कयाल

साधारण तौर पर आज हम भी असफलता को पल्लू से बाँध लेते है - जबकि अगर हम परिस्थिति का विश्लेषण करें तो कुछ और ही बात नजर आती है। वस्तुतः हम वास्तविकता को देखें तो पाएंगें कि हर असफलता के पीछे सफलता छिपी है। जितने भी वैज्ञानिक दुनिया में हुए हैं, उन सभी ने अपनी प्रारम्भिक असफलताओं को चुनौती दी और सफलता हासिल की। यही रहस्य महात्मा गाँधी, विवेकानन्द, लालबहादुर शास्त्री की सफलता का भी है। जब उन्होंने कुछ करने की ठान ली थी तो लगे रहे अन्त तक अपने मुकाम को पाने के लिये।

अब इसको मार्केटिंग के नजरिये से भी देखते हैं-

बहुत पहले हिन्दुस्तान लीवर लि. ने एक प्रॉडक्ट लॉन्च किया था नाम था व्हील डिटर्जेन्ट पाउडर जो पहली बार मार्केट में आते ही पिट गया था परन्तु कम्पनी ने हार नहीं मानी और उसको री लॉन्च कर बड़ा कैम्पेन (प्रचार) किया। आज व्हील बहुत बड़ा ब्राण्ड बनकर मार्केट में निरमा को टक्कर दे रहा है।

इसी प्रकार कई क्षेत्रों में कई ब्राण्ड ऐसे हैं जो हारकर भी जीत गये। अगर हम अपनी असफलताओं से घबरा जाएंगे तो हम स्वयं समाप्त हो जाएंगे। वहीं अगर हम अपनी असफलताओं से सीख लेकर और अच्छी कोशिश/प्रयास करेंगे तो वह हमें सफलता की ऊँचाईयों पर ले जाएगा। चींटी, मकड़ी आदि की भी मिसाल दी जाती है कि

> ...जोश है तो सफलता है...यह जोश तब बना रह सकता है जब हम धैर्य रखें ...धैर्य के लिए आत्मविश्वास जरूरी है...तब असफलता को हम सीढ़ी बनाकर सफलता की मंज़िल हासिल कर सकते हैं...

कितनी ही बार गिरने के बाद भी चींटी दीवार पर चढ़ जाती है - मकड़ी जाल बुन लेती है। इसी को देखकर महमूद गजनवी जैसा सत्रह बार हारा हुआ राजा भी जोश में भरकर लड़ा और अठारहवीं बार उसने जीत हासिल की।

राजनीति में तो हम रोजमर्रा यह चमत्कार देखते रहते हैं - तख्ते पलटते हैं लोग पलटते हैं - पद बदलते हैं - पहलू बदलते हैं और इन सबकी सफलता व असफलता को हम बड़े ज़ज्बे के साथ हमेशा जिन्दा रखते हैं। कई इससे सीख लेते हैं और कई नकार देते हैं।

सभी का सार अन्ततः यही है - ***''हिम्मते मर्दा-मदद ए खुदा''*** अर्थात मर्द की हिम्मत ही खुदा को मदद करने के लिये बाध्य करती है इसलिए जीवन की असफलताओं से हारना नहीं बल्कि सीख लेकर अपने जीवन में सफलता पाने के लिये लगन व मेहनत के साथ परिश्रम करना चाहिये। सफलता का मूल मंत्र यही है।

शून्य से शिखर का पाँचवाँ संस्करण

भारतीय उद्योगपतियों की यशोगाथा 'शून्य से शिखर' को पाठकों खासकर बिजनेस स्कूल के छात्रों ने इतना सराहा है कि मात्र डेढ़ साल में इसका पाँचवाँ संस्करण प्रकाशित हो रहा है। राजकमल प्रकाशन के अशोक माहेश्वरी के अनुसार शून्य से शिखर का नया हार्ड बाउंड व पेपर बेक संस्करण जुलाई 2005 में लॉन्च किया जा रहा है। अगस्त 05 में इसका अंग्रेजी संस्करण भी पाठकों को सौंप दिया जाएगा। अंग्रेजी सहित किसी भी भारतीय भाषा में यह पहली व अकेली पुस्तक है जिसमें 35 भारतीय उद्योगपतियों की संघर्ष कथा कहानी-शैली में बेहद रोचक अंदाज में दोहराई गई है। पुस्तक के लेखक प्रकाश बियाणी का मत है, कि ''सम्पन्नता मानवाधिकार है पर इसे कोई आपको भेंट नहीं करेगा। धन कमाना पड़ता है और जो समाज धनी समुदाय को कोसता है वह दरिद्रता में जीता है। इनसे तो प्रेरणा लेना चाहिए।'' यही 'शून्य से शिखर' का संदेश है। श्री बियाणी उद्योगपतियों पर शीघ्र ही एक पुस्तक श्रृंखला शुरू कर रहे है - 'भारतीय कुबेर'। इस कड़ी की पहली पुस्तक होगी- ''**लक्ष्मी मित्तल**'' प्रतीक्षा करें।

कुछ ऐसा पढ़ें जो जीवन में काम आए

■ पं. विजय शंकर मेहता

जो लोग अपने जीवन को एक व्यवस्थित प्रबंधन के तहत बिताते हैं सफलता उनके ही द्वार पर दस्तक देती है। पढ़ने-लिखने का शौक लगभग सभी को रहता है। अपनी-अपनी रूचि अनुसार सब इस दौर से गुजरते हैं पर साहित्य पढ़ने-लिखने का भी एक प्रबंधन होना चाहिए। अव्वल तो पढ़ा वह जाए, जिससे समय की बर्बादी न हो और उपयोगी तत्व जीवन में हाथ लगें।

दार्शनिकों का कहना है कि वह साहित्य समाज में टिकता है जिसके मूल में, जिसके आधार में कोई ऐसी बात होती है, जो समाज को स्वीकृत हो। रामचरितमानस में तुलसीदासजी ने लिखा है कि-

'सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाही,
बरिष गएं पुनि तबहिं सुखाहीं'

जिन नदियों के मूल में जल स्त्रोत नहीं होता है, ऐसी नदियां बारिश में तो पानी से लबालब भर जाती हैं, लेकिन बारिश के बाद इनका जल सूख जाता है। आज अधिकांश साहित्य ऐसा ही लिखा जा रहा है, बारिश की नदियों जैसा। इनके मूल में जल स्त्रोत है ही नहीं, इसलिए कोई साहित्य लंबे समय तक नहीं टिक पा रहा है और हम इस बात को लेकर दुःखी होते रहते हैं कि पिछले लंबे समय से और इन दिनों अच्छा साहित्य लिखने में नहीं आ रहा है जो लोगों के दिलों दिमाग पर राज कर सके।

विचार करने वाली बात यह है कि साहित्य के मूल में क्या होना चाहिए। इस

> **साहित्य को समाज का दर्पण बताया गया है लेकिन आज वह लिखा जा रहा है जो समाज में दिखाई देता है। पहले साहित्य लोगों को आकर्षित करता था। अब लोगों से साहित्य आकर्षित हो रहा है।**

मामले में हमारे पौराणिक साहित्य में एक कथा आती है- द्वेपायन व्यास महाभारत की रचना करने के बाद एक दिन एकांत में बैठे थे, थोड़े व्यथित थे। नारदजी ने व्यासजी से पूछा कि 'आपका हृदय एवं शरीर' आपके चिंतन एवं कर्म से संतुष्ट है या नहीं? तो वेदव्यासजी ने कहा कि महाभारत जैसी साहित्य रचना के बाद भी मैं उस संतोष की अनुभूति नहीं कर पा रहा हूँ, जो एक सृजनकार को अपनी कृति के बाद होना चाहिये, ऐसा क्यों हुआ? अब तो यह निर्विवाद सत्य है कि महाभारत अद्भुत ग्रन्थ है। वेदव्यास ने इस ग्रन्थ को इतनी ईमानदारी से लिखा है कि संसार में जो कुछ भी है वो सब महाभारत में है और जो महाभारत में नहीं है इस संसार में कहीं नहीं है।

इतनी ईमानदारी के साथ यह इतिहास लिखा गया है कि द्वेपायन व्यास ने अपने जन्म की कथा, अपने पिता के कृत्य तक लिख डाले। हर पात्र द्वेपायन व्यास की अदालत में नग्न खड़ा है। सत्य का ऐसा स्वरूप व्यासजी ने महाभारत में प्रस्तुत किया है। इतिहास में ऐसा हो सकता है, लेकिन एक उदाहरण को यूं समझें कि जब किसी अदालत में हत्या का मुकदमा चलता है तो न्यायाधीश के सामने सारे तथ्य रखे जाते हैं, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण रिपोर्ट होती है शव विच्छेदन की, पोस्टमार्टम की। और आजकल तो उसमें फेर-बदल भी किया जाता है, लेकिन उसके बाद भी शव विच्छेदन का कार्य अदालत में नहीं किया जाता क्योंकि यदि ऐसा होने लगे तो समाज में बड़ा भीषण और विभत्स दृश्य उत्पन्न हो जाए। समाज इसको स्वीकार नहीं करेगा।

तो साहित्य में जब पात्र का शव विच्छेदन हो, सत्य इतने नग्न स्वरूप में सामने आए, तब ऐसा साहित्य न तो समाज में वैसे स्वीकृत होता है जैसे रामायण या भागवत हुई और न ही रचनाकार को आत्मसंतोष मिलता है इसलिये नारदजी ने सलाह दी और उनकी सलाह के बाद द्वेपायन व्यास ने श्रीमद्भागवत की रचना की, क्योंकि महाभारत के मूल में इतिहास था, नायक के रूप में पाण्डव थे और भागवत के मूल में समर्पण भाव है, परहित का भाव है तथा नायक श्रीकृष्ण हैं। इसके बाद ही व्यासजी को संतोष हुआ।

तो हमारे लिये संकेत यह है कि साहित्य में मूल में कौन? तुलसी साहित्य के मूल में राम हैं, श्रीमद्भागवत में कृष्ण हैं। राम और कृष्ण को केवल भगवान के रूप में न लिया जाए, ये भारतीय अस्मिता, भारतीय संस्कृति के प्रतिमान है, शिखर है, आदर्श जीवन की उच्चतम अभिव्यक्ति है। सिद्धान्तों, परंपराओं और मूल्यों के प्रतीक हैं और जिस साहित्य के मूल में ये सब है, वो साहित्य समाज में, उसके सृजन में बहुत महत्पूर्ण भूमिका निभाएगा। तुलसीदासजी से जब किसी ने पूछा कि आपने रामचरितमानस क्यों लिखा? तो उन्होंने दो बड़े सुन्दर कारण बताए। पहला - 'स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा' और दूसरा 'मोरे मन प्रबोध जेहि होई'।

रामचरितमानस के लिए तो घोषणा की गई है कि- 'बुध विश्राम सकल जन रंजनी' कितने आश्चर्य की बात है कि यह साहित्य बुद्धिमानों को विश्राम देता है और सामान्य को लोकरंजन है। ज्ञान और रंजन का अद्‌भुत समन्वयक है रामचरितमानस।

एक और बात, साहित्य को समाज का दर्पण बताया गया है, लेकिन देखने में यह आ रहा है कि जैसा समाज में होता है, अब वैसा ही साहित्य भी लिखा जा रहा है। पहले साहित्य लोगों को आकर्षित करता था, अब लोगों से साहित्य आकर्षित हो रहा है। वो साहित्य जो दर्पण की भूमिका न निभाए, बहुत दिन तक नहीं टिक सकता और साहित्य समाज का किस रूप में दर्पण है, इसका सबसे अच्छा उदाहरण श्री रामचरितमानस है। गोस्वामीजी ने लिखा है-

श्री गुरु चरण सरोज रज,
निज मनु मुकुर सुधारि।
बरनऊ रघुबर बिमल जसु,
जो दायक फल चारि॥

लेकिन श्री रामचरितमानस की एक और घोषणा है कि साहित्य केवल दर्पण का कार्य करे, इतना ही नहीं, साहित्य का इससे बढ़कर एक काम और हो सकता है। मानस में लिखा है कि रामकथा मंदाकिनी। रामकथा को सुरसरि बताया है। रामकथा गंगानदी की तरह है और सरिता की विशेषता यह है कि वह एक तो सबको सहज उपलब्ध है, दूसरा यदि हम अशुद्ध हैं तो हम सरिता में शुद्ध होते हैं। मानस एक ऐसी ही सरिता है, ऐसा ही सरोवर है। अतः जो साहित्य शुद्ध करे और दर्पण का कार्य करे, वह साहित्य अधिक स्वीकृत होगा। बेहतर है उसे ही पढ़ा जाए। तो ही यह एक श्रेष्ठ साहित्य प्रबंधन होगा।

स्वर्ण-सूत्र

प्रतिकूलता पर विजय

कैसी भी प्रतिकूलता, दुःख क्यों न आवे मैं कभी निराश नहीं होता। मैं जानता हूँ कि बहुत-सी प्रतिकूलता, दुःख, कष्ट और शोक पानी के बुलबुले के समान नष्ट हो जाते हैं। मैं कभी भी व्याकुल नहीं होता, न घबराता हूँ और न धैर्य को ही छोड़ता हूँ। ईश्वर की कृपा की आशा मै कभी नहीं त्यागता। चाहे कैसी भी प्रतिकूल और विषम परिस्थिति हो मेरा विश्वास अटल रहता है। जो कुछ सह रहा हूँ इसमें भगवान मेरा उपकार ही कर रहा है। संसार की समग्र शक्तियां मेरे विरुद्ध खड़ी हो जायें तब भी ईश्वर पर से मेरी श्रद्धा विचलित नहीं हो सकती। मुझे यह अनुभव है कि जैसे शीत के पश्चात ग्रीष्म ऋतु आती है, रात्रि के पश्चात प्रभात होती है, बड़े तूफान के पश्चात शान्ति आ विराजती है, उसी प्रकार प्रतिकूलता और दुःख के बाद सुख और शान्ति अवश्य आती है। मैं अपने दुःखों और प्रतिकूलताओं पर पश्चाताप नहीं करता। मैं अपने जीवन की प्रतिकूलताओं और दुःखों को प्रसन्नता से सहन करता हूँ। कभी भी उद्विग्न और अशांत नहीं होता। जीवन संग्राम की रणभूमि से मैं कायर होकर नहीं भागता, किन्तु दृढ़तापूर्वक वीरता से डटा रहता हूँ। जीवन मार्ग चाहे कितना ही लंबा हो मैं अपने कर्तव्य पालन से नहीं घबराता। परमात्मा के न्यायपूर्ण शासन में रहकर मुझे किसी का डर नहीं है। मैं यह जानता हूँ और इस भावना को हृदय में अखंड धारण करता हूँ कि परमात्मा ही मेरा जीवन है, मेरी शक्ति है, मेरा प्राण है, मेरा बल है, मेरी आत्मा है। कोई भी सांसारिक प्रतिकूलता से मैं दब नहीं जाता न भयभीत होता हूँ। मुझे अपने जान-माल की परवाह नहीं है। संसार की शक्ति मेरी रक्षा नहीं कर सकती। परमात्मा की रक्षा की शक्ति असीम है। बस वही मेरा एक मात्र आश्रय स्थान है। उसका सहारा ही मेरा एक मात्र दृढ़ अवलंबन है। मुझे कोई हानि नहीं पहुंचा सकता। परमात्मा ही यथार्थ जानता है कि किस बात में मेरा परम कल्याण है। यदि मृत्यु में ही मेरा कल्याण है तो उसका मैं सहर्ष स्वागत करता हूँ। अब मैं मृत्यु से पार हो गया हूँ और इससे भयभीत नहीं होता हूँ। मेरे लिए संसार में प्रतिकूलता, शोक, दुःख कोई नहीं रहा है।

भाव की भूख

एक यहूदी अनपढ़ था और ग्रामीण भी, प्रायश्चित पर्व पर सबको प्रार्थना करते देखकर वह वहीं बैठ गया और वर्णमाला के अक्षरों का ही पाठ करता हुआ भावना करने लगा-''हे प्रभु! मुझे तो कोई मंत्र याद नहीं, इन अक्षरों को जोड़कर तुम्ही मंत्र बना लेना। मैं तो तुम्हारा दास हूँ, पूजा के लिए नए भाव कहाँ से लाऊँ?'' जब दूसरे लोग प्रार्थना करते रहे, वह ऐसे ही भगवान का ध्यान करता रहा।

सायंकाल जब सब सामूहिक प्रार्थना मे सम्मिलित हुए तो धर्मगुरू रबी ने उस ग्रामीण को भक्तों की अग्र-पंक्ति में रखा। यह देखकर उसके साथी ने आपत्ति की- ''श्रीमान जी! इसे तो मंत्र भी अच्छी तरह याद नहीं।''

''तो क्या हुआ'' - रबी ने आर्द्र कण्ठ से कहा - ''इनके पास शब्द नहीं, भाव तो हैं।''

भगवान भाव को देखते हैं शब्दों को नहीं।

कुंडली में छिपे हैं सफल दाम्पत्य के राज

शादी-ब्याह के पहले कुंडली मिलान का चक्कर कोरा अंधविश्वास नहीं है। भारत के इस प्राचीन ज्योतिष ज्ञान पर आज आधुनिक विज्ञान मोहर लगा रहा है। क्या है कुंडली मिलान का विज्ञान और क्या रहस्य छिपे हैं कुंडली के चौखानों में, आइये जानें...

यूं तो सम्पूर्ण मानव-जीवन में कदम-कदम पर ज्योतिष के मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है किन्तु विवाह के समय तो ज्योतिष अदभुत मार्गदर्शन का कार्य करता है। वास्तव में विवाह मानव-जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण बिन्दु है। प्रत्येक व्यक्ति की आकांक्षा होती है कि उसका विवाह सुखद, प्रेमपूर्ण तथा उन्नतिकारक हो, इसी कारण ज्योतिषशास्त्र में विवाह पूर्व वर-कन्या की कुंडली मिलाने पर अत्यधिक जोर दिया जाता है।

जन्म-कुंडली व्यक्ति के आचार-विचार, भविष्य तथा संभावनाओं का लेखा-जोखा होती है। यह भा कहा जा सकता है कि जन्म-कुंडली मानव के जीवन का सम्पूर्ण चित्र उपस्थित कर देती है। चिकित्सा विज्ञान में बताया गया है कि निगेटिव रक्त ग्रुप वाले व्यक्ति को निगेटिव रक्त ग्रुप के व्यक्ति से ही विवाह करना चाहिए। निगेटिव रक्त ग्रुप का पॉजीटिव रक्त ग्रुप से विवाह होने पर प्रसव के समय न सिर्फ माता के वरन् भावी शिशु के जीवन को भी खतरा हो सकता है। ठीक इसी प्रकार, हर व्यक्ति का अपना विशेष स्वभाव एवं पसन्द-नापसन्द आदि होती है। व्यवहार में छिपी ये गूढ़ बातें सामान्यतया समझ में नहीं आती। इस संबंध में ज्योतिष हमारी बहुत सहायता करता है। एक अनुभवी तथा विद्वान ज्योतिषी किसी की भी जन्म-कुंडली देखकर न केवल जातक का व्यवहार जान सकता है वरन् उसका किस तरह के व्यक्तियों से अच्छा ताल-मेल हो सकता है, इस विषय में भी संभावना व्यक्त कर सकता है।

प्राचीनकाल में कई बार ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती थी जब कुंडली-मिलान करने की आवश्यकता नहीं समझी जाती थी। स्वयंवर, गन्धर्व-विवाह, अपहरण या कन्या को उपहारस्वरूप देना या बेच देना आदि ऐसी ही घटनाएं थी। आज भी प्रेम-विवाह या कोर्ट मैरिज करते समय कुंडली नहीं मिलायी जाती किन्तु अधिकांश माता-पिता अपनी सन्तान के सुखद भविष्य हेतु कुंडली-मिलान करवाते हैं, यह उचित भी है।

ऐसा नहीं है कि कुंडली मिलाकर किये गये विवाह शत-प्रतिशत सफल ही रहते हों, ऐसे विवाहों को भी कलहपूर्ण, दुःखद और अभावयुक्त देखा गया है। कई बार तो विवाह की दुःखद परिणति तलाक या संबंध-विच्छेद में भी होती देखी गयी है। ऐसी स्थिति में लोगों के मन में ज्योतिष के प्रति अविश्वास या शंका उत्पन्न हो जाती है।

पहले तो हमें यह बात भली-भांति समझ लेनी चाहिए कि ज्योतिष शास्त्र स्वयं में एक वैज्ञानिक एवं तथ्यपरक विषय है और यदि इससे उचित परिणाम प्राप्त नहीं होते हैं तो यह ज्योतिष की नहीं,

ज्योतिषी की कमी है। दरअसल, ज्योतिष एक दुरूह विषय है और इसकी समुचित तथा पूर्ण ज्ञान-प्राप्ति असंभव नहीं। कुंडली मिलान करते समय उसे कई दृष्टिकोणों से जांचना-परखना पड़ता है, परन्तु कई ज्योतिषी ज्ञानाभाव अथवा समयाभाव में सरसरी तौर पर ही विश्लेषण करके अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। यहीं से गड़बड़ी प्रारम्भ होती है।

सटीक फलादेश न होने का एक अन्य कारण कुंडली का सही न होना भी होता है। दरअसल, सही कुंडली निर्माण हेतु दो बातें आवश्यक होती हैं, पहली-शिशु के जन्म-समय का सही ज्ञान होना तथा दूसरी-सही समय जानकर योग्य ज्योतिषी द्वारा कुंडली बनवाना, किन्तु शिशु के जन्म पर कई माता-पिता जन्म समय को गम्भीरता से नहीं लेते और अनुमान से ही ज्योतिषी को समय बताकर कुंडली बनवा लेते हैं। ऐसी स्थिति में, यदि नींव ही आधारहीन हो तो सुदृढ़ भवन की आशा कैसे की जा सकती है।

इसके अतिरिक्त, एक बड़ा कारण यह भी है कि कुछ लोग उस नाम से ही विवाह-मिलान कराते हैं जो व्यवहार में प्रचलित होता है। कई बार एक व्यक्ति के कई नाम होते हैं, जैसे-घर, विद्यालय, नौकरी, बैंक आदि में अलग-अलग। ऐसी दुविधापूर्ण स्थिति में सही मिलान नहीं हो पाता है। यह वैकल्पिक स्थिति अशास्त्रीय है तथा इससे प्राप्त फल में भी भारी गड़बड़ी पायी जाती है। इस प्रकार, कुंडली-मिलान करते समय कुछ आधारभूत बातों का ध्यान रखना चाहिए, जैसे-जातक-जातिका की कुंडली सही हो, मिलान करने वाला ज्योतिषी योग्य तथा विद्वान हो तथा वह प्रत्येक कोण से कुंडलियों का अवलोकन करके प्रयास करे कि दोनों कुंडलियां अधिक-से-अधिक मिल सकें। इसमें जल्दबाजी या सतही ज्ञान उचित फलादेश में घातक हो सकता है। उचित ढंग से मिलान करने पर वर-वधू की आयु, स्वास्थ्य, चरित्र, धन-वैभव, सन्तानोत्पत्ति तथा स्वभाव आदि जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर पूर्वानुमान लगाया जा सकता है।

मुख्यरूप से कुंडली दो प्रकार से मिलायी जाती है- नक्षत्रों के आधार पर तथा ग्रहों के आधार पर। नक्षत्रों के आधार पर मिलान करते समय 'अष्टकूट' को मिलाया जाता है। अष्टकूट के अंतर्गत वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रह-मैत्री, गण, भृकूट तथा नाड़ी सम्मिलित है। इन आठों को क्रमानुसार एक से आठ अंक प्रदान किये गये हैं जिनका योग 36 होता है। इसके आधार पर वर-कन्या की प्रकृति, स्वभाव तथा अभिरूचियों का सूक्ष्म अवलोकन हो जाता है। स्वाभाविक रूप से समान व्यवहार करने वाले दो व्यक्तियों में तालमेल अधिक सहज होता है तथा संबंध भी प्रेमपूर्ण रहते हैं जबकि विपरीत स्वभाव वालों का जीवन कलहमय, तनावग्रस्त तथा कष्टपूर्ण होता है।

ग्रहों के आधार पर मिलान करते समय वर-कन्या की कुंडलियों में स्थित पाप और सौम्य ग्रहों का स्थिति-ज्ञान किया जाता है। पुरूष की कुंडली में 'शुक्र' तथा स्त्री की कुंडली में 'गुरु' का बली होना वैवाहिक जीवन के लिए सुखद माना जाता है। इसी प्रकार, वर की कुंडली में शुक्र तथा स्त्री की कुंडली में मंगल की स्थिति द्वारा प्रजनन-क्षमता का ज्ञान हो जाता है।

यह मानना भ्रमपूर्ण है कि कुंडली - मिलान करते समय मात्र मंगली-दोष का विचार करना ही पर्याप्त है। वस्तुतः कुंडली-मिलान एक गंभीर विषय है जिसमें अष्टकूट, ग्रह-विचार, मंगली-दोष के साथ विद्यमान प्रमुख योगों पर भी अध्ययन किया जाता है। पति-पत्नी दोनों एक-दूसरे के पूरक बन सकें तथा धन-धान्य और उत्तम संतान को प्राप्त करें, यही कुंडली-मिलान का उद्देश्य है। आधुनिक काल में योग्य ज्योतिषी द्वारा किया गया मिलान न केवल बढ़ते तलाकों की संख्या कम कर सकता है वरन् सुखद-सम्पन्न जीवन जीने में भी सहायक हो सकता है।

मन का मनका फेर

एक गुरु के दो शिष्य थे। दोनों किसान थे। भगवान का भजन-पूजन भी दोनों करते थे। स्वच्छता और सफाई पर भी दोनों की आस्था थी, किंतु एक बड़ा सुखी था, दूसरा बड़ा दुःखी। गुरु की मृत्यु पहले हुई, पीछे दोनों शिष्यों की भी। दैवयोग से स्वर्गलोक में भी तीनों एक ही स्थान पर मिले, पर स्थिति यहाँ भी पहले जैसी ही थी। जो पृथ्वी में सुखी था, यहाँ भी प्रसन्नता अनुभव कर रहा था और जो आए दिन क्लेश-कलह आदि के कारण पृथ्वी में अशांत रहता था, यहाँ भी अशाांत दिखाई दिया। दुखी शिष्य ने गुरूदेव के समीप जाकर कहा- "भगवन्! लोग कहते हैं, ईश्वर-भक्ति से सुख मिलता है, पर हम तो यहाँ भी दुःखी के दुःखी रहे।" गुरू ने गंभीर होकर उत्तर दिया- "वत्स! ईश्वर भक्ति से स्वर्ग तो मिल सकता है, पर सुख और दुःख मन की देन है। मन शुद्ध हो तो नरक में भी सुख ही है और मन शुद्ध नहीं, तो स्वर्ग में भी कोई सुख नहीं है।"

संकेत सितारों का

पं. श्यामनारायण व्यास
ज्योतिर्विद
उज्जैन

1 अगस्त से 31 अगस्त 2005 तक

मेष - समय में अनुकूलता आ रही है, काफी दिनों से संघर्ष-पूर्ण स्थिति का निर्माण हो रहा है। अपने आप को पूर्ण संयत रखें, क्रोध को त्यागें, कार्यों में सफलता मिलेगी। पुराने मित्र से मिलना संभव है, औद्योगिक गतिविधियों मे अनुकूलता तीसरे सप्ताह से मिलेगी। सन्तान से पूर्ण सहयोग मिलेगा। मास के उत्तरार्ध मे प्राप्त समाचार प्रसन्नतादायी होगा। दिनांक 3, 4, 9, 10, 15, 16, 29 अनुकूल रहेगी।

वृषभ - आपके अपने ही आपसे वैमनस्यता स्थापित कर सकते हैं, एतदर्थ वाणी को पूर्ण संयत रखें, अन्यथा मास का पूर्वार्ध सहयोगी नही हैं। बहुत दिनों से रूके हुये कार्यों में सफलता मास के उत्तरार्ध में मिल पाएगी। व्यवसायिक गतिविधियाँ यथावत चलती रहेंगी। मित्रों एवं हितैषियों से सहयोग मिलेगा, अपने वाक् चातुर्य से आप सफलता की ओर अग्रसर होंगे। दिनांक 1, 2, 10, 11, 21, 22, 26 शुभ है।

मिथुन - मास का प्रारम्भिक समय सहयोगी रहेगा, मन में उत्साह व उमंग बनी रहेगी, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आवासीय व्यवस्था मनोनुकूल बनने के योग चल रहे हैं। मास का उत्तरार्ध कुछ कष्टकर रह सकता है, धैर्य रखें। अपने इष्ट देव का स्मरण एवं आराधना करें, सफलता मिलेगी। दिनांक 1, 2, 9, 10, 18, 19, 23, 31 सहयोगी है।

कर्क - समय मिश्रित फलदायी चल रहा है, व्यवसायिक गतिविधियों में सफलता मिल पाएगी। नये कार्यों के अनुबन्ध को मास के उत्तरार्ध तक टालें लम्बी यात्रा के योग बन रहे हैं। पेट सम्बन्धी गड़बड़ी बनी रहेगी। मास के अन्तिम चरण में उपलब्धि अर्जित हो सकेगी। आर्थिक विनिमय में पूर्ण सतर्कता रखें, पारिवारिक वातावरण सहयोगी रहेगा। दिनांक 5, 6, 7, 15, 16, 21, 22, 25, 29 नए कार्यों के लिए उचित है।

सिंह- मृगतृष्णा की तरह बहुत दिनों से आप छले जा रहे हैं। ग्रह-गोचर पूर्ण सहयोगी कम ही हैं तथापि अपेक्षित कार्य होवेंगे। सन्तान सम्बन्धी कार्य होने से मन में प्रसन्नता का अनुभव करेंगे। सामयिक निर्णय आपके अनुकूल रहेगा। मान-सम्मान में वृद्धि के योग बन रहे हैं। भवन या वाहन सम्बन्धी समस्या का समुचित समाधान होगा। दिनांक 1, 2, 7, 8, 13, 14, 24, 25, 31 सहयोगी रहेंगी।

कन्या - "मन के हारे हार है मन के जीते जीत" इस सिद्धान्त को पूर्ण रूप से अपने में आत्मसात कर लें, आने वाला समय आपका यश बढ़ाने वाला आ रहा है। अपने हितचिंतकों को पहचानें, सफलता मिलेगी। सन्तान पक्ष उत्तम चल रहा है। व्यापार-व्यवसाय में लाभकारी अवसरों का निर्माण होगा। न्यायालयीन कार्यों में विलम्ब होगा। दिनांक 5, 6,7, 13, 14, 18, 19, 24, 29, 30 शुभ है।

तुला- वर्तमान समय आपके कार्य क्षेत्र का विस्तार दर्शाता हैं। योजनाबद्ध तरीके से किया गया कार्य आपको सफलता दिलाने वाला रहेगा। जन्मकालिक गृह गोचर सहयोगी होंगे तो मोटी सफलता मिल सकती है। पारिवारिक स्थिति अनुकूल रहेगी। यदि आप नौकरी में हैं तो पदोन्नति संभव है। सामाजिक स्तर एवं कार्य में वृद्धि होगी। मास का उत्तरार्ध कम सहयोगी है। दिनांक 1, 2, 6, 7, 14, 15, 24, 25 शुभ है।

वृश्चिक - समय की धारा आपके पक्षधर हुई है जो बहुत दिनों से रूके हुये कार्यों में अपेक्षित सफलता दिलाने वाली बन रही है। यदि जन्मकालिक ग्रह-दशा अनुकूल रही हो तो निश्चित ही विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त हो सकती है। सन्तान संबंधी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी, रूका हुआ धन प्राप्त हो सकेगा। न्याय पक्ष उत्तम है। दिनांक 3, 4, 5, 14, 15, 26, 27, 31 शुभ फलदायी हो रही है।

धनु - ग्रहदशा सहयोगी कम ही है इस कारण महत्वपूर्ण कार्यों को लम्बित ही रखें। मास का उत्तरार्ध विशेष सतर्कता का है, अपनी कार्यक्षमता में कमी महसूस करेंगे। व्यापारिक गतिविधियाँ यथावत चलती रहेंगी। पारिवारिक सहयोग मिलेगा। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। दिनांक 1, 2, 7, 8, 15, 16, 25, 26, 29 शुभ है।

मकर - अपनी वाणी को पूर्ण संयत रखें अन्यथा क्रोध में बने बनाए कार्य बिगड़ सकते हैं। मित्रों एवं पारिवारिक लोगों के सहयोग में कमी आवेगी। विशिष्ट अनुबन्ध पूर्ण सतर्कता से करें। धार्मिक यात्रा का मन बन सकता है। भौतिक सुख-साधनो में वृद्धि के योग बन रहे हैं। अपने इष्ट की आराधना करें, इच्छित प्राप्ति सहज होगी। दिनांक 1, 2, 3, 7, 8, 13, 14, 21, 22, 27, 28 शुभ है।

कुंभ - विवेकशीलता द्वारा बहुत से कार्यों को सफल बनाया जा सकता है, इस सिद्धान्त का पालन करते हुए अपने कार्यक्षेत्र को परिमार्जित करें। यश एवं धन दोनों की प्राप्ति सम्भव है। भवन संबंधी समस्या का समुचित समाधान हो पाएगा। मास का मध्यभाग आमोद-प्रमोद में व्यतीत होगा। मासान्त में शुभ समाचार प्राप्त होगा। दिनांक 3, 4, 5, 11, 12, 17, 18, 23, 24, 29 सहयोगी है

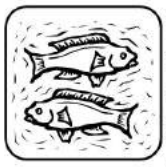

मीन - अपनी कार्य शैली को परिमार्जित करने का समय चल रहा है जिससे आगे आने वाला समय उपलब्धि दिलाने वाला होगा। मित्रों से सहयोग मिलेगा। वाहन एवं भवन संबंधी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। न्यायालयीन कार्यों के व्यवधान समाप्त होगें। यात्रा के योग बनेंगे। दिनांक 2, 3, 9, 10, 15, 16, 21, 25, 26, 31 शुभ है।

मास का पंचांग (व्रत एवं त्यौहार)

1 अगस्त	महाकाल सवारी उज्जैन
4 अगस्त	(धूप) श्राद्ध अमावस्या
5 अगस्त	हरियाली अमावस्या
6 अगस्त	द्वितीय चतुर्दर्शन
10 अगस्त	नागपंचमी
16 अगस्त	पवित्र एका व्रत
17 अगस्त	प्रदोषव्रत
19 अगस्त	रक्षाबंधन, उपाकर्म
22 अगस्त	संकष्टी 4, चन्द्रोदय-20/35
24 अगस्त	हल षष्ठी
27 अगस्त	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
30 अगस्त	अजा एकादशी
31 अगस्त	प्रदोषव्रत

पंचक -दिनांक 19 संध्या 6/51 से दिनांक 23 रात्री 8/54 तक

सही जन्मकुण्डली ही बता सकती है सही भविष्य

अब जन्मकुण्डली की सूक्ष्म-गणनाओं के लिये परेशान होने की जरूरत नहीं

आपके जीवन का आईना है

जन्मपत्रिका

ऋषि मुनि

ज्योतिष संस्थान

माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.)

दूरभाष - 0734 - 2559389

देश के जाने माने ज्योतिषियों द्वारा प्रमाणित सॉफ्टवेयर एवं लेजर प्रिन्टर पर प्रदेश की ज्योतिष पत्रिकाओं में अग्रणी जिनमें निम्न गणनाएं उपलब्ध हैं -

१२ ग्रहों की स्थिति उनके विवरण, षोड्ष वर्ग, सुदर्शन चक्र, मैत्री चक्र, षडबल एवं भावबल, प्रस्तारक अष्टक वर्ग सारिणी, अष्टक वर्ग सारिणी, विशोंतरी दशा, महादशा, प्रत्यांतर दशा एवं सुक्ष्म दशा सहित कृष्णमूर्ति पद्धति ग्रहों के उप स्वामी, ग्रहों की स्थिति लग्नानुसार, जेमिनी पद्धति, योगिनी दशा, वर्षफल, वैदिक ग्रंथों के अनुसार नक्षत्र फल, साढेसाती विवरण एवं उनके उपाय, रत्न विचार एवं समस्याओं पर उपचार, योग संग्रह, कुण्डली योग का विवरण, परिणाम सहित कुण्डली मिलान, किसी भी ग्रह का किसी भी राशि अथवा अंश में किसी भी तिथि के पश्चात गोचर देखने की सुविधा

जिज्ञासा-समाधान

● मेरी पुत्री का विवाह कब तक होगा?

राधेश्याम भण्डारी, जयपुर

आपकी पुत्री की पत्रिका मंगली है, पति कारक बुध बन रहा है, सम्बन्ध में विलम्ब होना स्वाभाविक है। राहु में शुक्र के अन्तर में विवाह सम्बन्ध बनेगा जो 5 जुलाई 05 से प्रारम्भ हो रहा है और 5 जुलाई 08 तक रहेगा तथापि 29 नवम्बर 05 से मई 06 के मध्य विवाह के प्रबल योग हैं।

● मुझे व्यापार में बहुत दिनों से अड़चनें आ रही है। लाभकारी स्थिति कब तक आएगी।

मनसुख कालानी, इन्दौर

आप अभी राहु की दशा के अन्तिम चरण में चल रहे हैं, जो जनवरी 06 में पूर्ण हो रहा है। आगामी गुरु की महादशा जो आपका लग्नेश राज्येश है सभी समस्याओं का समाधान करेगी।

● बहुत दिनों से मुकदमा चल रहा है, कब तक निराकरण होगा।

बालकृष्ण भंसाली, जावरा

आपने कुंडली नहीं भेजी है तथापि प्रश्नानुसार विचार करने से ऐसा प्रतीत होता है कि नौकरी सम्बन्धी विवाद है, जो जून 06 तक निर्णायक स्थिति में पहुंचेगा। सफलता अवश्य मिलेगी।

● श्रीमान मेरा स्वास्थ्य काफी समय से खराब चल रहा है, मेरा स्वास्थ्य कब तक ठीक होगा।

सौ. सरोज बियाणी, मुम्बई

वर्तमान में समय अनुकूल नहीं है, नित्य सूर्यदेव को जल चढ़ाएं तथा आदित्य हृदय का पाठ करें। 23 सितम्बर 05 से स्वास्थ्य में सुधार होगा।

प्रश्न आपके समाधान हमारे

यह स्तम्भ पाठकों की ज्योतिष संबंधी समस्याओं के समाधान के लिये है। यदि आपकी भी कोई शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक या व्यवसायिक समस्या है और आप ज्योतिष शास्त्र द्वारा उसका समाधान चाहते हैं तो अपनी समस्या हमें लिख भेजिये। आपकी समस्या का समाधान करेंगे हमारे ज्योतिष विशेषज्ञ पं. श्यामनारायण व्यास।

कृपया समस्या भेजते समय निम्न बातों का ध्यान रखें -

1. समस्या साफ एवं सुस्पष्ट शब्दों में लिखी हो।
2. पत्र के साथ जन्म कुंडली अवश्य संलग्न हो।
3. एक बार में एक ही प्रश्न पूछें।
4. पत्र के साथ पता लिखा एवं टिकिट लगा लिफाफा अवश्य भेजें।
5. अपनी समस्या 'ज्योतिष विभाग', श्री माहेश्वरी टाईम्स, श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) फोन - 0734-2551307, 2559389 पर ही भेजें।

- सम्पादक

आपका पारिवारिक पण्डित

श्री विक्रमादित्य पञ्चाङ्ग

ग्रहलाघवीय पद्धति द्वारा निर्मित, ज्योतिष की महत्वपूर्ण सूचनाएं, जानकारियां, दैनिक लग्न सारणी, प्रत्येक पक्ष के व्रत, त्यौहार, आवश्यक मूहुर्त, मुख्य दिवस आदि अन्य कई महत्वपूर्ण जानकारियों से समृद्ध

ऋषि मुनि का उत्कृष्ट प्रकाशन

कालगणना की नगरी उज्जयिनी से प्रकाशित

डायटिंग नहीं व्यायाम करिए

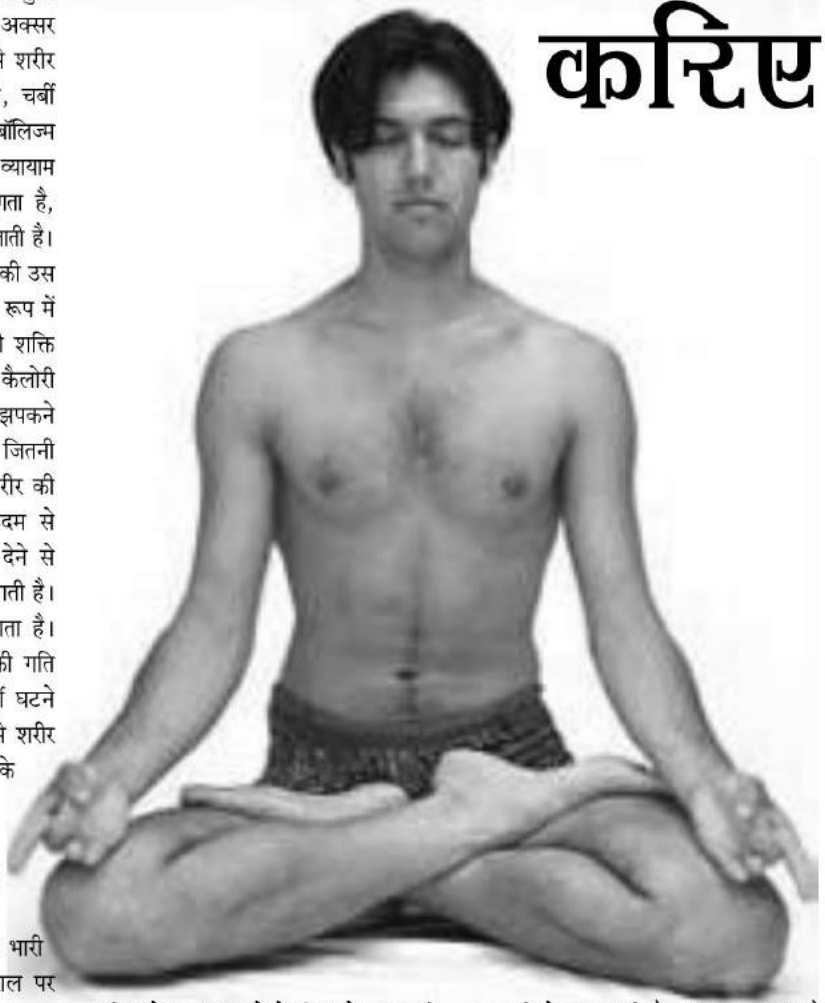

इसमें संदेह नहीं कि डायटिंग से खान-पान पर नियंत्रण करके शरीर पर जमती अनावश्यक चर्बी से बचा जा सकता है, लेकिन सही जानकारी का अभाव और तुरंत मोटापे से निजात पाने की कोशिश अक्सर नुकसानदेह ही साबित होती है। इससे शरीर कमजोरी का शिकार तो होता ही है, चर्बी घटाने वाली शारीरिक क्रिया यानी मेटाबॉलिज्म भी प्रभावित होता है। नतीजतन, मामूली व्यायाम से जो फैट आसानी से कम होने लगता है, डायटिंग से उसकी रफ्तार भी कम हो जाती है।

दरअसल, मेटाबॉलिज्म शरीर की उस क्रिया को कहते हैं, जिससे भोजन के रूप में ली गई कैलारी मिलती है। शरीर की शक्ति और उसे स्वस्थ्य रखने के लिए इस कैलोरी का जलना जरूरी होता है। पलकों के झपकने से लेकर भारी व्यायाम तक शरीर जितनी मेहनत करता है, उसी अनुपात में शरीर की कैलोरी भी जलती है, लेकिन एकदम से खाना-पीना छोड़ देने या कम कर देने से चर्बीयुक्त मांशपेशियाँ भी नष्ट होने लगती है। इससे सारा मेटाबॉलिज्म गड़बड़ा जाता है। विशेषज्ञों के अनुसार मेटाबॉलिज्म की गति कम हो जाती है और अतिरिक्त चर्बी घटने की रफ्तार भी। कम आहार मिलने से शरीर अपने आंतरिक तंत्र को इस प्रकार के संदेश देता है कि कम सुविधाओं से ही काम चलाना है। नतीजतन मेटाबॉलिज्म कैलोरी जलाने की क्रिया को धीमा कर देता है, ताकि वह संचित रहे।

विशेषज्ञों का सुझाव है कि भारी डायटिंग के बजाय थोड़े-थोड़े अंतराल पर कम फैट का आहार लिया जाए तो स्थूलता से बचा जा सकता है। खाने में चुनी हुई सामग्री को ही जलाने में अधिक मेहनत और समय खर्च होता है। शाकाहार भोजन में दालों और सब्जियों के सेवन से स्वयं को चर्बी रहित बनाए रखा जा सकता है।

अनाज और फलियों वाली सब्जियाँ शरीर को स्वस्थ रखने के लिए बेहद जरूरी है। डॉ. सलाह देते हैं कि प्रतिदिन कम से कम 20 से 35 ग्राम रेशेदार भोजन लिया जाना चाहिए। स्वस्थ्य शरीर और स्मार्ट फिगर के लिए व्यायाम जरूरी है। व्यायाम से धीरे-धीरे शरीर में बिना चर्बी वाली मांसपेशियां विकसित हो जाती है। इससे अतिरिक्त कैलोरी आसानी से जल जाती है। कहा जा सकता है कि डायटिंग में खतरे हैं लेकिन संतुलित और पूरे भोजन के साथ व्यायाम से फैट को दूर और मेटाबॉलिज्म को दुरूस्त रखा जा सकता है यानी आकर्षण खोने की चिंता और उससे उपजने वाले तनाव से मुक्ति। ❁

स्वास्थ्य समस्या-समाधान

❑ मुझे धूप में निकलने पर त्वचा पर दाने हो जाते हैं, कहीं-कहीं उनमें खुजली होती है और पानी भी आता है।

सीमा माहेश्वरी, भोपाल.

- गर्म सरसों के तेल में नीम की नई कोंपलें (पत्तियां) डालकर सेकें। तेल ठंडा होने पर छानकर बोतल में भर लें। खुजली वाले स्थान पर दिन में चार बार लगाएं।

- चार ग्राम चिरायता और चार ग्राम कुटकी लेकर शीशे या चीनी के बर्तन में 125 ग्राम पानी लेकर रात को भिगों दें और सुबह छानकर पी लें। 2 घंटे बाद तक कुछ खाएं-पियें नहीं। चार दिन तक उसी चिरायता व कुटकी का पानी बदल-बदल कर लें।

❑ मेरी उम्र 25 वर्ष है। मेरे दांत में दर्द होता है। कभी-कभी खून भी आता है, मसूढ़े सूजे रहते हैं।

रूचि माहेश्वरी, जबलपुर.

-सेंधा नमक पीसकर कपड़े से छान लें। इसे हथेली पर दो ग्राम लेकर उसमें चार गुना सरसों का तेल डाल दें। इस नमक मिले तेल से मसूढ़ों की हल्की-हल्की मालिश करें। खून निकले तो निकलने दें। शेष बचे नमक को दांतों-दाढ़ों पर लेप की तरह लगाकर रगड़ें। गुनगुने पानी से कुल्ला करें।

❑ मेरी उम्र 31 साल है। मुझे माहवारी के समय अक्सर स्त्राव 8 से 10 दिन तक रहता है।

पूजा माहेश्वरी, नागपुर.

- प्रायः 5 से 7 दिन का स्त्राव सामान्य है। इससे अधिक दिन स्त्राव होने पर फिटकरी को गर्म तवे पर सेंककर फुला लें। उसका पावडर बनाकर मटर के दाने बराबर पावडर दिन में चार बार कुनकुने पानी से लें। फायदा होगा।

❑ मेरे 18 वर्षीय बेटे को हमेशा कब्ज रहती है।

शिवानी माहेश्वरी, दमोह

-साधारण कब्ज होने पर रात्रि में सोते समय दस-बारह मुनक्के (पानी में धोकर) दूध में उबालकर पी लें। ज्यादा कब्ज में तीन दिन लगातार लें।

-एरंड का तेल दो से चार चम्मच (नवजात शिशु को एक चम्मच) एक कप पानी या दूध में मिलाकर रात को सोते समय पीने से कब्ज दूर होती है।

-छोटी (काली) हरड़ 100 ग्राम देशी घी में भून लें। जब हरड़ फूल जाए और धुआं सा निकलने लगे तब उसे निकाल लें। तदुपरान्त 100 ग्राम सौंफ (बड़ी) लेकर उसमें से 50 ग्राम सौंफ घी में भून लें। कच्ची और सिकी सौंफ को दरदरा कर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को 200 ग्राम देशी घी और 400 ग्राम मिश्री के साथ चूर्ण बनाकर कांच के बर्तन में रख दें। यह चूर्ण सुबह-शाम गर्म दूध के साथ लें। 2 घंटे तक कुछ भी खाएं-पिएं नहीं। कुछ ही दिन में पुरानी से पुरानी कब्ज दूर होकर पेट निरोग हो जाएगा।

❑ मेरे 5 वर्षीय बेटे के पेट में बार-बार कीड़े हो जाते हैं, स्थायी निदान बताएं।

अर्चना मंत्री, ग्वालियर

-अजवाईन के चूर्ण में उतनी ही मात्रा में गुड़ मिलाकर गोली बना लें। दिन में तीन बार खिलाएं।

- सुबह उठते ही 10 ग्राम गुड़ खिलाएं। 15 मिनट आराम करने दे। फिर आधा ग्राम अजवाईन का चूर्ण सादे पानी से दें। कीड़े मल के साथ निकल जाएंगे।

- आधा ग्राम अजवाईन का चूर्ण व चुटकी भर नमक रात को गरम पानी से दें।

❑ मेरे बाल अभी से सफेद हो रहे हैं, मेरी उम्र 24 वर्ष है कृपया घरेलु उपाय बताएं।

सपना माहेश्वरी, ओरंगाबाद.

- एक चम्मच आंवला चूर्ण 2 घूंट पानी के साथ रात को सोते समय लें।

- सूखे आंवले के चूर्ण का पानी के साथ पेस्ट बनाकर सिर पर लेप करें तथा पांच मिनट बाद बालों को पानी से धो लें। सप्ताह में दो बार तीन माह तक प्रयोग करें।

- भृंगराज को कूट-पीस कर चूर्ण बना लें। इसे काले साबुत तिल में मिलाकर रख लें। छह माह तक प्रतिदिन सूर्योदय के समय मुंह धोकर 1 चम्मच यह मिश्रण खूब चबाकर खाएं।

❑ मेरी उम्र 30 वर्ष है। मेरी आंखें कमजोर हो गई हैं। कुछ देर पढ़ने पर पानी आने लगता है।

राजकुमारी, देवास

- दो रत्ती फिटकरी बारीक पीसकर 30 ग्राम गुलाब जल में घोलकर रख लें। ड्रॉपर द्वारा उक्त घोल को दिन में 3-4 बार डालने से आंखों का दर्द ठीक जाएगा।

-बादाम गिरी, सौंफ (बड़ी साफ) की हुई, तथा मिश्री तीनों को बराबर मात्रा में लेकर कूट-पीस कर बारीक मिश्रण बनाकर कांच के बर्तन में रख लें। रात को सोते समय 10 ग्राम मात्रा 250 ग्राम दूध के साथ 40 दिन तक निरंतर लेने से नेत्र ज्योति बढ़ती है।

❑ मुझे बवासीर की शिकायत है। घरेलु उपाय बताएं।

नीरू, उज्जैन

- दो सूखे अंजीर शाम को पानी में भिगो दें। सबेरे खाली पेट उनको खाएं। इसी प्रकार सवेरे भिगोए अंजीर शाम को चार-पांच बजे खाएं। एक घंटे तक कुछ न खाएं-पीएं। आठ दिन के सेवन से बादी और खूनी बवासीर ठीक होती है।

-दोपहर के भोजन के बाद छाछ में चौथाई चम्मच (डेढ़ ग्राम) पिसी हुई अजवाईन और एक ग्राम सेंधा नमक मिलाकर पीने से बवासीर में लाभ होता है। नष्ट हुए बवासीर दुबारा नहीं होते।

स्वास्थ्य-समाधान

यह स्तम्भ पाठकों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए है। इसमें दिए गये नुस्खे विशेषज्ञों की राय भर है। पाठकों को चाहिए कि वे इन नुस्खों का प्रयोग करने के पहले अपने चिकित्सक से परामर्श कर लें। समस्या भेजते समय नाम, पता, उम्र, समस्या कब से है आदि बातों का उल्लेख करते हुए पूर्ण विवरण लिखें। एक पत्र के साथ एक ही समस्या स्वीकार की जाएगी। **- संपादक**

अच्छी नींद से मिलता है खूबसूरत चेहरा

■ रजनी माहेश्वरी

जिस प्रकार शरीर को स्वस्थ्य रखने में खान-पान अधिक महत्वपूर्ण है उसी प्रकार हमारे जीवन में नींद को भी उतना ही महत्व दिया गया है। नींद और अच्छे स्वास्थ्य का गहरा रिश्ता है इसलिए ऐसे में अगर आप दो घंटे की भी अच्छी नींद लेते हैं तो वह आपको तरोताजा बना देती है। इसका असर आपके चेहरे पर साफ तौर पर दिखाई देता है। और इसके विपरीत अगर आपको ठीक से नींद नहीं आई है तो आपका उखड़ा-उखड़ा मूड़, चिड़चिड़ापन, काम में आलस और आपके चेहरे पर तनाव साफ तौर पर यह बता देता है कि अज आपकी नींद पूरी तरह से नहीं हुई है।

अगर आपको किसी दिन बहुत ज्यादा टेंशन है तो भी आपको नींद नहीं आती। या फिर आप नींद न आने की बीमारी से ग्रसित हैं और ऐसे में आप नींद की गोलियों के प्रयोग की आदी हो चुकी हैं तो बहुत ही गलत बात है। अगर समय रहते इसे सुधारा न गया तो वह दिन दूर नहीं जब आपकी नींद हमेशा के लिए गायब हो जाएगी और आप भगवान के द्वारा दिए गए नींद के इस अनमोल तोहफे से दूर होती जाएंगी।

अगर आप इस समस्या से बचना चाहते हैं और आप चाहती हैं कि आपकी नींद का असर आपके चेहरे पर दिखाई दे तो ध्यान दें नीचे दी गई कुछ बातों को और रहे हमेशा नींद की आगोश में और खूबसूरत बनकर उड़ाएँ अपने प्रियतम की नींदों को।

- ❑ सोने से पहले रात को अपने हाथ-पाँव की गुनगुने पानी से हल्के हाथ से मसाज करें। यह नींद लाने का कारगर उपाय है जिससे आपके शरीर को कोई नुकसान नहीं होगा।
- ❑ रात को सोने से पहले 1 गिलास दूध में एक चम्मच शहद मिलकर पीएँ।
- ❑ रात के खाने में ज्यादा तली-गली और तेज मिर्च वाली सब्जियों के इस्तेमाल से बचें। यह आपकी नींद को हराम कर देते हैं। इसके लिए रात को सुपाच्य भोजन लें।
- ❑ अच्छी नींद के लिए बेडरूम हवादार होने के साथ-साथ कम रोशनी वाला हो। यह अच्छी नींद के लिए बहुत जरूरी है।
- ❑ सोने से पहले गुनगुने तेल से हल्के हाथों से सिर पर मालिश करें।
- ❑ बहुत दिनों से आराम से नींद न आने के कारण अगर आपकी आँखों के नीचे काले धब्बे दिखाई देने लग गए हैं तो आलू को कद्दूकस कर काले घेरे वाली जगहों पर लगाएं। इससे आपकी आँखों के काले धब्बे दूर हो जाएंगे।
- ❑ बाजार में अरोमा थैरेपी ऑइल भी उपलब्ध है जिसको 2-3 बूँद अपने बिस्तर पर छिड़क कर आप नींद का असली मजा उठा सकती हैं।
- ❑ बहुत दिनों से टूट चुकी नींद के कारण अगर आपके सिर में भारीपन लग रहा हो तो ऐसे समय आप अरोमैटिक तेल का इस्तेमाल करें या फिर नारियल के गुनगुने तेल में कपूर मिलाकर मालिश करें। इससे भी फायदा होगा।
- ❑ प्रातः जल्दी उठकर सैर पर जरूर जाएँ। यह भी नींद के लिए कारगर उपाय है।
- ❑ रात को सोते समय हमेशा ढीले कपड़ों का इस्तेमाल करें। इससे आपको अच्छी नींद तो आएगी ही। साथ ही आप पाएँगी स्वस्थ्य शरीर।

फ्लावर अरेंजमेंट

भगवान जब सृष्टि का निर्माण कर रहे थे तो उन्होंने उसमें रंग भरने के लिए फूल-पत्तों की रचना की। फूल हमारे जीवन में भी हर अवसर पर रंग देते हैं। फूलों की भाषा दुनिया में सब लोग आसानी से समझ लेते हैं। वैसे तो बाग में तरह-तरह के फूल खिले हुए होते हैं पर अगर हम उन फूलों से अपने घर को भी सजाएँ तो घर या ड्राइंग रूम की सुंदरता द्विगुणित हो जाती है।

'फ्लावर अरेंजमेंट' करने के कोई खास नियम नहीं हैं परन्तु यदि इसे करते वक्त कुछ खास बातों का ध्यान दें तो हमारी पुष्पसज्जा आकर्षक लगेगी, इसलिए पहले फूलों का चुनाव ऐसा करें जो जल्दी न मुरझाएँ वरना आपकी सारी मेहनत बेकार जाएगी। फूल चुनने के बाद उनकी ऊँचाई पर ध्यान दे जो कि फूलदान से दोगुनी होनी चाहिए। छोटे फूलदान में लंबी डंडी वाले फूल भद्दे लगेंगे। वैसे ही लंबे फूलदान में छोटे-छोटे फूल खराब लगेंगे। छोटे और चौड़े फूलों के लिए चौड़े फूलदान काम में लें। यानी यहाँ अनुपात का खास ध्यान रखें। इसके बाद कलर कॉम्बीनेशन का चुनाव करें।

गहरे रंग के फूल हमेशा हरी पत्तियों के संग अच्छे लगते हैं। यह एक आसान कंट्रास्ट कॉम्बीनेशन है। नाजुक हल्के रंग के फूल नाजुक पत्तियों के संग अच्छे लगेंगे। जहाँ तक हो सके एक या दो रंग के फूल के साथ ही पत्तियों को काम में लें।

ज्यादा रंग के फूल से कलर कॉम्बीनेशन बिगड़ सकता है। फ्लावर अरेंजमेंट करते वक्त इसके बैलेंस का ख्याल जरूर रखें जैसे सारे फूल एक तरफ या पत्तियाँ दूसरी तरफ आदि न हों। कहीं फूल तो कहीं पत्ती, कोई ऊपर तो कोई नीचे। ऐसे जमें हों, जिससे उनमें प्रेपरेशन बैलेंस और कलर कॉम्बीनेशन न बिगड़े। फूलों को पानी में डाल काँटे से अटकाइए ताकि वे खिसके नहीं। लीजिए तैयार है एक सुंदर 'फ्लावर अरेंजमेंट'।

■ आशा मंत्री

भुट्टा बिरयानी

सामग्री - भुट्टे 1 किलो, बासमती चावल 1/2 किलो, गोभी 100 ग्राम, शिमला मिर्च 50 ग्राम, प्याज 100 ग्राम, अदरक, दालचीनी 1-2 इंच के टुकडे, बड़ी इलायची 1, तेज पत्ता 2-3, लौंग, जीरा, नमक, कालीमिर्च, आवश्यकतानुसार, हरी मिर्च, घी 50 ग्राम।

विधि - कड़े दाने वाले भुट्टे लेकर कद्दूकस करें। चावल धो लें। गोभी, गाजर, शिमला मिर्च सभी 1-1 इंच के टुकड़ों में काट लें। प्याज लंबे-लंबे काट लें। अदरक बारीक कुचल लें। कड़ाही में घी डालकर जीरा, तेजपत्ता, कालीमिर्च, दालचीनी, लौंग, इलायची आदि का बघार लगाकर अदरक डाल कुछ देर भुनकर, प्याज के टुकड़े डाल दें। प्याज हल्का भुन जाने पर मिक्स सब्जियों के टुकड़े डाल थोड़ी देर भूनें।

भुट्टे के दाने व चावल डाल थोड़ी देर और भुने। तत्पश्चात मिर्च के लंबे टुकड़े, नमक व आवश्यकतानुसार पानी डाल कुकर में डालें। सीटी बजने पर उतार लें। कुछ देर ठंडा होने दें। तत्पश्चात कुकर खोल नीम्बू का रस डाले दें। चम्मच की डंडी से हल्के से हिला दें। हरा धनिया डालकर पेश करें।

■ ममता माहेश्वरी

घर का वैद्य

कड़वा किन्तु गुणकारी करेला

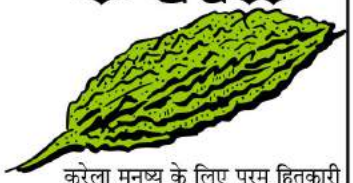

करेला मनुष्य के लिए परम हितकारी और औषधीय गुणों का भंडार है।

यह भूख को बढ़ाकर हमारी पाचन शक्ति सुधारता है। यह पचने में हल्का है। शीतल होने के कारण गर्मी से उत्पन्न विकारों पर शीघ्र लाभ करता है। करेला बुखार, खाँसी, त्वचा के विकार, एनीमिया, प्रमेह तथा पेट के कीड़ों का नाशक है।

करेले के कुछ औषधीय उपयोग इस प्रकार है :

करेले के तीन बीज और तीन कालीमिर्च को पत्थर पर पानी के साथ घिसकर बच्चों को पिलाने से उल्टी-दस्त बंद होते हैं।

करेले के पत्तों को सेंककर सेंधा नमक मिलाकर खाने से अम्लपित्त के रोगियों को भोजन से पहले होने वाली उल्टी बंद होती है।

इसके फल या पत्ते का रस एक चम्मच शक्कर मिलाकर पिलाने से खूनी बवासीर में बड़ा लाभ होता है।

करेले के टुकड़ों को छाया में सुखाकर, पीसकर महीन चूर्ण बना लें। छः ग्राम चूर्ण पानी के साथ सेवन करने से मधुमेह के रोगी को लाभ मिलेगा।

करेले के पत्तों के पचास मि.ली. रस में थोड़ी-सी हींग मिलाकर पिलाने से पेशाब खुलकर आता है।

इसके पत्तों को पत्थर पर घिसकर चटनी जैसा बनाकर लेप लगाने से त्वचा के रोग मिटते हैं और इसी लेप से, आग से जल जाने पर उत्पन्न व्रण भी ठीक हो जाते हैं।

■ किरण झंवर

आंसुओं की बगिया में खिले हिम्मत के फूल

■ गोपिका मंत्री

हम सब परमात्मा के अंश हैं और उसी की मर्जी से इस संसार में अपने कर्तव्य पूरे कर रहे हैं। जीवन के घटनाक्रम उसी परमात्मा की लीला के हिस्से हैं। हमें बस यह याद रखना है कि उसने जो जिम्मेदारी सौंपी है उसका निर्वाह हम कुशलता से कर सकें। यही जीवन की सबसे बड़ी सफलता है। यह सत्य जिसने समझ लिया, वह किसी भी महासंग्राम में हारता नहीं, फिर चाहे कोई उसके साथ हो या न हो। खंडवा (म.प्र.) की प्रेमा काकानी ने गीता के इस संदेश को आत्मसात कर आंसुओं की बगिया में हिम्मत के फूल खिलाएं हैं। आइये परिचय कराएं महिलाओं के लिए प्रेरणा की एक जीवंत किंवदंती से...

कर्मण्येवाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन्।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽऽत्मन सृजाम्यहम॥

यह श्लोक जीवन का एक महत्वपूर्ण सूत्र है। हर परिस्थिति में अपने कर्म और अपने लक्ष्य पर अडिग रहने वाला मनुष्य ही समाज में मान-सम्मान पाता है और सफलता की मिसाल कायम करता है परन्तु वास्तविकता यह भी है कि जिंदगी को जितना सरल हम समझते हैं दरअसल यह उतनी सरल है नहीं, क्योंकि जीवन तो परिस्थितियों का दास है जो मानव से क्या-क्या नहीं करवा लेता। कभी एक क्षण में ढेरों खुशियाँ तो दूसरे ही पल गमों की बौछार परन्तु इन विकट परिस्थितियों में भी अपने आत्मविश्वास और सोच के साथ तालमेल बैठाया जाए तो जिंदगी मुश्किल राहों से निकलकर आसान बन पड़ती है। अपनी सच्ची लगन, एकाग्रता और परिश्रम से मानव विपरीत समय को भी अपनी मुट्ठी में कर सकता है। ऐसी ही विषम राहों को पार कर सफलता के शिखर पर विराजमान हुई हैं म.प्र. के खंडवा शहर की निवासी **श्रीमती प्रेमा काकानी**। उन्होंने हर मुसीबत में अपना संघर्ष अनवरत् रखते हुए अपने परिवार को मजबूत नींव का सहारा दिया। पूरे माहेश्वरी समाज में श्रेष्ठता और परिश्रम की मिसाल कायम की है।

महाराष्ट्र के एक छोटे से धामन गाँव रेलवे में जन्मीं और पली-बढ़ी नटखट बालिका प्रेमा ने अपनी स्कूली शिक्षा भी यहीं से पूरी की। शिक्षा के प्रारंभिक दौर से ही इन्होंने अपने कैरियर और अपने भविष्य के लिए सपने बुनने प्रारंभ कर दिए थे। ये नन्हीं समझदार और होनहार बालिका भगवान में असीम आस्था रखते हुए अपनी शिक्षा के प्रति सजग हो गई। स्कूली शिक्षा खत्म होने के बाद उसी कस्बे के शासकीय महाविद्यालय से बी.एस.सी. (मेथ्स) किया। पढ़ाई के प्रति गंभीर रूचि, समर्पण और लगन से प्रेमा ने महाविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

इसके तुरन्त बाद प्रेमा के पास नौकरी के लिये नित नये संदेश आने लगे पर दुनिया,

समाज और परिवार वालों की नजरों में उनकी काबिलियत, गुण और मेहनत को किनारे कर उन्हें एक लड़की पहले दिखाई दी और इसी रूढ़ीवादी मानसिकता और सोच के चलते प्रेमा को अपने सपनों को आराम देना पड़ा पर प्रेमा ने अपने आशा के दीए की लौ को मन के एक छोटे से कोने में जलाए रखा। इन्हीं सबके बीच युवती प्रेमा खंडवा के व्यवसायी श्री मोहनलाल जी काकानी के साथ परिणय बंधन में बंध गई।

शादी के बाद प्रेमा ये सोचने लगी की मेरे सपने अब सिर्फ सपने ही रह जाएंगे ओर कभी साकार नहीं हो पाएंगे। कम ही समय में प्रेमा अपने ससुराल में सास-ससुर, जेठ-जेठानी और ननदों से काफी घुल-मिल गई थी। पर प्रेमा के बुने हुए सपनों को साकार करने में उनकी सास ने बहुत मदद की। वे स्वयं भी स्वतंत्र विचारों की होने के कारण चाहती भी यही थी की उनकी बहुएं सिर्फ घर की चारदीवारी और चौके-चूल्हे में ही उलझकर न रह जाए बल्कि वक्त और जमाने के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़े।

उनकी सास ने स्वयं प्रेमा को स्कूलों और कॉलेजों में नौकरी के लिए आवेदन करने को कहा। जब प्रेमा के जीवन में सब कुछ अच्छा चल रहा था तभी वक्त ने अचानक करवट बदल ली। जिस घर-परिवार में खुशियाँ छाई थी वहाँ दुःखों की बरसात होने लगी। प्रेमा के जीवन का संघर्ष तब शुरू हुआ जब अचानक उनकी प्रेरणा और प्रोत्साहन देने वाली सासु माँ का देहान्त हो गया। इस विषम परिस्थिति में भी प्रेमा ने अपने साहस के दम पर सबको एक सूत्र में बांधे रखा। जीवन की गाड़ी कभी रूकती नहीं चलती रहती है, यही सोचकर वे अपने काम में लगी रही।

पर प्रकृति उनकी और परीक्षा लेना चाह रही थी। अपनी सास के गम से उबरी भी नही थी कि करीब दो साल बाद ही उनके जेठ का भी देहावसान हो गया। अचानक से दिल को हिला देने वाली इस मौत के बाद घर-परिवार का माहौल एकदम बदल सा गया। इसे भगवान की मर्जी कहें कि अभी काकानी परिवार इस दुःख के आंसू बहा भी नहीं पाया था कि 3 महीनों के भीतर ही प्रेमा के पति श्री मोहन जी काकानी का भी हृदय घात से निधन हो गया।

> श्रीमती प्रेमा काकानी का भी यही कहना है कि आज की नारी इतनी सक्षम और दृढ़ निश्चयी होनी चाहिए कि वो किसी भी तरह की परिस्थितियों का मुकाबला कर सके। वो किसी भी तरह समाज या परिवारजनों पर आश्रित न हो। उन्हें स्वयं स्वावलंबी होकर अपनी काबिलियत का परिचय देना चाहिए। श्रीमती काकानी कहती है कि मैं अपनी दोनों बेटियों और बेटों को अच्छी शिक्षा, संस्कार और नैतिक मूल्य देना चाहती हूँ। उन्हें सिर्फ यही समझाना चाहती हूँ कि किसी भी परिस्थिति में आत्मविश्वास मत डगमगाने दो, क्योंकि भगवान उसकी सहायता करते है जो स्वयं अपनी सहायता करते हैं।

एक के बाद एक हुए इन वज्रपातों से उनका परिवार पूरी तरह से बिखर गया। घर में सिर्फ दो औरतें और बच्चे रह गये। इस हादसे के बाद श्रीमती काकानी टूट चुकी थी। उन्हें अपने घर-परिवार व्यवसाय और बच्चों की चिंता सताने लगी थी। अब उनके जीवन में ऐसा समय आ गया था जब उन्हें अपनी समझदारी, संयम और प्रतिभा का साहस के साथ परिचय देना था। प्रेमाजी ने दृढ़ संकल्प कर भगवान में अपना विश्वास रखते हुए जेठानी के दोनों बच्चों और स्वयं के बच्चों के लालन-पालन की जिम्मेदारी को बखूबी से निभाने का फैसला किया।

श्रीमती काकानी ने अपने घरेलू व्यवसाय कॉस्मेटिक और अगरबत्ती की एजेंसी संभालने का निर्णय ले लिया। अथक परिश्रम और दिन-रात एक कर देने के बाद उन्होंने सफलता की उन ऊँचाईयों को पा लिया, जिसका अंदाजा भी नहीं लगाया जा सकता। उनके इस संघर्ष में प्रेमा के परिवारजनों और पूरे माहेश्वरी समाज ने भरपूर सहयोग दिया। आज प्रेमाजी ने अपने व्यवसाय को एक करोड़ के टर्न ओवर पर पहुँचा दिया है। श्रीमती प्रेमा काकानी का भी यही कहना है कि आज की नारी इतनी सक्षम और दृढ़ निश्चयी होनी चाहिए कि वो किसी भी तरह की परिस्थितियों का मुकाबला कर सके। वो किसी भी तरह समाज या परिवारजनों पर आश्रित न हो। उन्हें स्वयं स्वावलंबी होकर अपनी काबिलियत का परिचय देना चाहिए। श्रीमती काकानी कहती है कि मैं अपनी दोनों बेटियों और बेटों को अच्छी शिक्षा, संस्कार और नैतिक मूल्य देना चाहती हूँ। उन्हें सिर्फ यही समझाना चाहती हूँ कि किसी भी परिस्थिति में आत्मविश्वास मत डगमगाने दो, क्योंकि भगवान उसकी सहायता करते हैं जो स्वयं अपनी सहायता करते हैं।

वास्तव में श्रीमती प्रेमा काकानी जैसी नारी आज की युवा पीढ़ी के लिए आदर्श और प्रेरणा स्त्रोत है जिन्होंने सिर्फ अपने आत्मविश्वास और स्वाभिमानी स्वभाव के कारण हर विषम परिस्थिति से डटकर मुकाबला किया है। आज हमारे समाज में जरूरत है इस तरह की महिलाओं की मदद करने के लिए अपने विचारों के दायरे को विस्तृत कर खुले दिल से आगे आने की।

शादी-ब्याह

सामान्य टाईप में 40 शब्दों का एक बार का 100 रु.। अधिक शब्द होने पर 3 रु. प्रति शब्द अतिरिक्त चार्ज। राशि श्री माहेश्वरी टाईम्स के नाम पर मनीऑर्डर या डी.डी. द्वारा भेजें। चेक स्वीकार नहीं होंगे।

श्री माहेश्वरी टाईम्स
माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.)
दूरभाष- 0734- 2551307,
2559389, मो. 94250-91161

कम दाम बड़ा काम

जोड़ी तो ऊपर वाला तय करता है, हमारा काम है उन्हें मिलाना
वह भी बहुत कम कीमत पर

मात्र 100 रु.
प्रति प्रकाशन

वर-वधु

आरमुर निवासी प्रतिष्ठित परिवार के 22 वर्षीय, 5'-5'', बी.कॉम., शिक्षित युवक के लिए सुन्दर, सुशील, सुशिक्षित वधु की आवश्यकता है। फोटो-बायोडॉटा सहित सम्पर्क करें -

श्री भंवरलाल धूत
दुर्गा किराना, मुकेश एजेन्सीज, विकली मार्केट, आरमुर, जिला निजामाबाद (आंधप्रदेश) फोन - 08463-203194

प्रतिष्ठित परिवार के 26 वर्षीय, 5'-7'', व्यवसायी युवक, आकर्षक व्यक्तित्व, आय 5 अंको में, हेतु सुन्दर, सुशील गृहकार्य में दक्ष वधु की आवश्यकता है, कृपया पूर्ण बॉयोडाटा सहित सम्पर्क करें -

सम्पर्क सूत्र - **श्रीमती राजकुमार गुप्ता**
राम-रहीम नगर, राधागंज,
42/ए, देवास (म.प्र.)
फोन - 07272- 256775

प्रतिष्ठित परिवार के रतलाम निवासी, 28 वर्षीय, 5'-5'', बी.कॉम. शिक्षित, निजी संस्थान में सेवारत युवक हेतु सुन्दर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष वधु की आवश्यकता है। फोटो बॉयाडोटा सहित सम्पर्क करें -

श्री प्रहलाद मण्डोवरा
23, तेजानगर, रतलाम (म.प्र.)
फोन - 07412-265159, 220754

उज्जैन निवासी प्रतिष्ठित परिवार के 23 वर्षीय, 5'-9'', निजी व्यवसायी युवक हेतु गृहकार्य में दक्ष वधु की आवश्यकता है।

सम्पर्क सूत्र
श्री प्रहलाद अगाल
220, चिमनगंज मण्डी, आगर रोड,
उज्जैन (म.प्र.)
फोन - (0734) 2552949

प्रतिष्ठित परिवार के 26 वर्षीय, 5'-2'', स्वयं का व्यवसाय करने वाले युवक हेतु गृहकार्य में दक्ष, सुशील, सुन्दर वधु की आवश्यकता है।

सम्पर्क सूत्र
श्री माणकचन्द सोडानी
माहेश्वरी धर्मशाला, गोलामण्डी,
उज्जैन (म.प्र.)
फोन - (0734) 2551884

प्रतिष्ठित परिवार के 34 वर्षीय, 5'-5'', बी.कॉम. शिक्षित, व्यापारी युवक हेतु वधु की आवश्यकता है।

कृपया पूर्ण बॉयोडाटा सहित सम्पर्क करें।

सम्पर्क सूत्र
श्री ओमप्रकाश मंत्री
360, एल.आई.जी. ।।,
इन्दिरा नगर, उज्जैन (म.प्र.)

उज्जैन निवासी प्रतिष्ठित परिवार के 26 वर्षीय, 5'-10'', बी.कॉम. शिक्षित, गौर वर्णीय, निजी व्यवसायी युवक हेतु सुन्दर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष वधु की आवश्यकता है। सम्पर्क सूत्र -

श्री अशोक करवा
124/2, लक्कड़गंज, मालीपुरा, उज्जैन
फोन- 0734-2564093

प्रतिष्ठित कम्पनी के जयपुर कार्यालय में सेवारत 29 वर्षीय, उदयपुर निवासी, 5'-10'', स्नातकोत्तर शिक्षित युवक हेतु आवश्यकता है, सुन्दर, सुशील, सुशिक्षित वधु की।
सम्पर्क करें -

श्री प्रहलाद मण्डोवरा
23, तेजानगर, रतलाम (म.प्र.)
फोन - 07412-265159, 220754

20 वर्षीय 5'-4'', बी.कॉम. द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत, सुशील, सुन्दर, गृहकार्य में दक्ष युवती हेतु वर की आवश्यकता है। सम्पर्क करें -

श्री अशोक करवा
124/2, लक्कड़गंज, मालीपुरा, उज्जैन
फोन- 0734-2564093
मो. 94250-93677

Shailendra Gupta

POOJA
ELECTRONICS

Dealing : Electronics Spare Parts & Accessories

48, Zone-II, Maharana Pratap Nagar, Bhopal-462 011
Ph. : 2558104, 5275740
Mobile : 9826023740

हार्दिक मंगलकामनाओं के साथ.....

होटल
निशातश्री

सरवटे बस स्टेण्ड के पास,
इन्दौर (म.प्र.) फोन - 0731-2369425

मंदिरों की नगरी हरिद्वार

सनातन परम्परा में हम ज्ञान, कर्म और उपासना से परमात्मा को जानने और उस तक पहुँचने की कोशिश करते हैं। तीर्थाटन हमारे धार्मिक कर्म का हिस्सा है। सात पुरी, बारह ज्योतिर्लिंग, इक्यावन शक्तिपीठ और चारधाम की यात्रा का पौराणिक महत्व है। अपने पाठकों को हम अपने इन प्राचीन तीर्थों की समुचित जानकारी देंगे। इसकी शुरुआत करते हैं सप्तपुरियों में से एक हरि के द्वार मतलब हरिद्वार से। - सम्पादक

■ आशा मंत्री

गोमुख से निकली गंगा नदी के दाहिने तट पर बसा और उत्तरांचल राज्य के 13 जनपदों में से एक हरिद्वार विश्व भर में एक धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में विख्यात है। हरिद्वार का प्राचीन नाम 'मायापुरी' था। सचमुच प्रकृति का यह लोक मायालोक ही नजर आता है। चहुं ओर हरी-भरी पहाड़ियों से घिरा हरिद्वार सनातन धर्म का प्रमुख तीर्थ स्थल है। सुरम्य धार्मिक तीर्थस्थल होने के कारण यहां पूरे वर्ष श्रद्धालुओं और सैलानियों का आना-जाना लगा रहता है।

हर की पौड़ी

विभिन्न धार्मिक पर्वों पर यहां गंगा की हर की पौड़ी पर स्नान करने की प्राचीन परंपरा है। लाखों की संख्या में देशभर के श्रद्धालु पर्वों पर गंगा में डुबकी लगाकर अपने पापों से मुक्ति की कामना करते है। हर की पौड़ी हरिद्वार के प्रमुख घाटों में सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है। संध्या के समय यहां होने वाली आरती सभी पर्यटकों का मन मोह लेती है। आरती के उपरांत असंख्य जलते दीप गंगा में छोड़े जाते हैं। गंगा में प्रवाहित इन दीपों का दृश्य बहुत ही सुंदर दिखता है। हर की पौड़ी से लगे बहुत से आश्रम भी दर्शनीय हैं।

चंडी देवी का मंदिर

यहां आने वाले सभी सैलानी हर की पौड़ी से मात्र 3 किलोमीटर दूर स्थित चंडी मंदिर भी जाते है। नील पर्वत पर स्थित इस मंदिर तक पहुंचने के लिये रोपवे सुविधा भी उपलब्ध है। कहा जाता है कि इसका निर्माण कश्मीर के महाराजा सुजात सिंह ने 1929 ई. में कराया था। यहां से हरिद्वार नगर सहित आस-पास के विहंगम दृश्य दिखते हैं।

ब्यूटी प्वाइंट

मनसा देवी मंदिर मार्ग पर सिर्फ 2 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह हरिद्वार का एक खूबसूरत पर्यटन स्थल है। यहां से भी हरिद्वार व अन्य निकटवर्ती स्थलों के मनोहारी दृश्य देखे जा सकते हैं। ब्यूटी प्वाइंट में भी पर्यटकों का तांता लगा रहता है ।

मनसा देवी मंदिर

यह मंदिर विलवा पर्वत पर स्थित है। पैदल मार्ग से ब्यूटी प्वाइंट होते हुए यहां पहुंचा जा सकता है। ट्रैकिंग का आनंद लेने के लिये पर्यटक बड़े जोश से इस मार्ग पर पैदल चलते देखे जा सकते हैं। वैसे यहां पहुंचने के लिये रोपवे ट्राली की भी व्यवस्था है। ट्राली से यात्रा के दौरान बहुत रोमांचकारी अनुभव होता है। मनसा देवी से पर्यटक हरिद्वार सहित अन्य कई स्थलों की सुंदरता को निहार सकते हैं।

हरिद्वार-ज्वालापुर बायपास मार्ग पर स्थित दक्षमहादेव व सतीकुंड कनखल भी पर्यटकों को अनायास ही अपनी ओर खींचता है। देशभर में प्रसिद्ध गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय यहां का प्रमुख आकर्षण है। आर्य समाज के संस्थापक स्वामी श्रद्धानंदजी द्वारा स्थापित यह विश्वविद्यालय प्राचीन शिक्षा पद्धति की दृष्टि से देशभर में प्रसिद्ध है। यहाँ का संग्रहालय और देव मंदिर बेहद खूबसूरत

है। पर्यटक यहां के संग्रहालय में प्राचीन काल की कला को निहारते नहीं थकते।

नीलधरा पक्षी विहार व चीला

हरिद्वार का नीलधरा पक्षी विहार सर्दी के मौसम में विभिन्न प्रकार के पक्षियों का निवास स्थान बन जाता है। यहां आने वाले पर्यटक कई प्रजाति के पक्षियों को देख सकते हैं। राजाजी नेशनल पार्क के अंतर्गत आने वाला चीला भी एक रमणीक पर्यटन स्थल है। यहां पर वन्य जीवों का आनंद लिया जा सकता है। यहाँ पर शांत वातावरण एवं शुद्ध आबो-हवा का भी लुत्फ उठाया जा सकता है।

भारत माता मंदिर

हरिद्वार का बहुमंजिला भारत माता मंदिर विभिन्न धर्मों को अपने में समेटे हुए है। यह मंदिर कई धर्मों का आस्था स्थल है। यहाँ विभिन्न धर्मों के साधु-संतों सहित देश की कई हस्तियों की आकर्षक मूर्तियां लगी हुई है।

सप्तऋषि

सप्तऋषि हर की पौड़ी से मात्र 5 किलोमीटर की दूरी पर है। यहां पर गंगा कई छोटी-छोटी धाराओं में विभक्त हो जाती है। सप्तऋषि से गंगा दर्शन बहुत ही मनोहारी लगता है। पर्यटक यहाँ का यह मनोहारी दृश्य देखते ही रह जाते हैं।

बी.एच.ई.एल.

हरिद्वार नगर से मात्र 6 किलोमीटर की दूरी पर भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लि. (बी.एच.ई.एल.) की फैक्ट्री है। इस विशाल कारखाने में विश्व मानकों के आधार पर उच्च कोटि के आधुनिकतम जनरेटर, मोटर एवं विभिन्न प्रकार के विद्युत उपकरणों सहित अन्य सामग्रियों का भी उत्पादन किया जाता है। पर्यटक इस कारखाने को भी देखते हैं।

समाज बन्धुओं के लिए हरिद्वार में उपलब्ध आवास सुविधा

समाज बंधुओं के लिये माहेश्वरी बंधुओं द्वारा हरिद्वार में **''अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन''** का निर्माण किया गया है। यहाँ पर 100 कमरे हैं जिनमें से 13 ए सी, 70 नॉन ए सी एवं शेष 17 कमरे सामान्य श्रेणी के हैं जिनकी किराया सूची इस प्रकार है - माहेश्वरी बंधुओं के लिये- ए सी - रु. 250/-, नॉन ए सी - रु. 100/- तथा सामान्य - रु. 50/-
अन्य समाज बंधुओं के लिये - ए.सी. - रु. 350/-, नॉन ए.सी. रु. 150/- तथा सामान्य - रु. 75/-

श्री माहेश्वरी सेवा सदन के व्यवस्थापक श्री पवन जी हुरकट के अनुसार यहाँ 20/- रु. का कूपन लेकर आप शुद्ध वैष्णवी भोजन प्रसादी भी ग्रहण कर सकते हैं जिसमें की 8 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिये कूपन नहीं लेना होता है। यहाँ पर आयकर की धारा 80 जी के अतंर्गत आप चंदा दान भी कर सकते हैं।

कैसे पहुँचे-

श्री माहेश्वरी सेवा सदन, स्टेशन से लगभग 6 किलोमीटर दूर ऋषिकेश रोड पर दूधाधारी मंदिर के सामने स्थित है। बस स्टेण्ड से आप टेम्पो द्वारा प्रति सवारी मात्र 7/- रु. किराया देकर यहाँ पहुँच सकते हैं, जबकि ऑटो के लिये यह किराया लगभग 40-60 रुपये देना होता है। गंगाजी यहाँ से 3 किलोमीटर दूर है।

आरक्षण कैसे करें? -

15 दिन पूर्व फोन पर निश्चित कर अग्रिम डी.डी. ''अखिल भा. माहेश्वरी सेवा सदन'' के नाम से भेजकर आप अपनी इच्छानुसार कमरे आरक्षित करवा सकते हैं।

संपर्क - अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन, ऋषिकेश रोड, हरिद्वार, दूरभाष - 01334 - 261141, 261636

अन्य जानकारी

हरिद्वार से मात्र 10 किलोमीटर दूर राजाजी नेशनल पार्क भी घूमने लायक है। यहां आप पिकनिक भी मना सकते हैं। इसके अलावा यहाँ कई सुंदर आश्रम हैं जो देखने लायक हैं। यहाँ का सप्त सरोवर भी पर्यटकों के लिये आकर्षण का केन्द्र है।

कंडक्टेड टूर्स

हरिद्वार के निकटवर्ती पर्यटन स्थल देहरादून, मसूरी एवं ऋषिकेश है। पौड़ी एवं टिहरी भी ज्यादा दूर नहीं है। गढ़वाल मंडल विकास निगम के प्रायोजित टूर यहां घूमने का कार्यक्रम बनाते हैं। बद्रीनाथ एंव केदारनाथ की यात्रा के लिये भी पर्यटक यहां के प्रायोजित टूर में शामिल हो सकते हैं। यह टूर पर्यटकों को मात्र 3 दिन में यात्रा कराकर वापस हरिद्वार ले आता है।

हरिद्वार कैसे जाएँ ?

हरिद्वार का निकटतम हवाई अड्डा यहां से 35 किलोमीटर दूर जौली ग्रांट में है । यहाँ के लिये सप्ताह में कुछ ही दिन हवाई सेवाएं उपलब्ध रहती है ।

परिवहन सेवाएं

हरिद्वार सड़क मार्ग द्वारा देश के प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है। यहाँ के लिये दिल्ली, लखनऊ, शिमला, चंडीगढ़, मुरादाबाद, इलाहाबाद, आगरा, बरेली, नैनीताल, राम नगर, मथुरा आदि शहरों से नियमित बसें एवं टैक्सियां उपलब्ध है।

क्लासिफाइड

छोटा विज्ञापन
बड़ा लाभ

आओ, सफल हो जाएं

कहते हैं एक से भले दो...

उद्योग-व्यापार में सफलता के लिए माहेश्वरी समाज एकजुट हो, इसके लिए यह हमारा विनम्र प्रयास है। विज्ञापन के इस पृष्ठ के माध्यम से हम माहेश्वरी समाज के उद्यमियों और व्यापारियों को एक दूसरे के करीब लाना चाहते हैं।

मात्र 250/- रु. में

विज्ञापन देकर आप अपने उद्योग, व्यापार, उत्पाद आदि से पूरे समाज को परिचित करा सकते हैं ताकि हम एक दूसरे की सफलता में सहायक बन सकें। विज्ञापन सामग्री भुगतान चेक या ड्राफ्ट के साथ माह की २० तारीख तक संपादकीय कार्यालय में पहुँच जाना चाहिए। चेक-ड्राफ्ट श्री माहेश्वरी टाईम्स, उज्जैन के नाम देय।

- संपादक

सभी प्रकार के टायर-ट्यूब, आईल एवं फिल्टर आदि उचित मूल्य पर मिलने का एक मात्र स्थान
श्री महाकाल ऑटोमोबाईल
4, उद्योग भवन, दूध तलाई, उज्जैन (म.प्र.)
फोन - (दु.) 2555464 (नि.) 2525980
सहयोगी प्रतिष्ठान -
श्री बालाजी आटोमोबाईल
उन्हेल रोड (थाने के पास), भैरवगढ़, उज्जैन (म.प्र.)

सबकी प्यारी सबसे न्यारी
माहेश्वरी साड़ीज्
बलवट भैरु के पास, बम्बाखाना, उज्जैन
फोन - 0734-2555271

BOBBY
अचार एण्ड फुड्स
सभी प्रकार के अचार, पापड़, जीरावन के निर्माता
दॉबी अचार
गंगा अचार
गिरवारी अचार
27, कालिदास मार्ग, फ्रीगंज, (मक्सी रोड), उज्जैन (म.प्र.)
फोन - 0734- (फै.) 2519669
(दू.) 2526173 (नि.) 2521075

दिशा बदलो दशा बदल जाएगी
आधुनिक एवं प्रमाणिक वास्तु, भूजल परिक्षण, नग परिक्षण, ज्योतिष सलाह के लिए
किशोर कुमार राठी
नग एवं वास्तु विशेषज्ञ
ए/126, पी.डी. क्लॉथ मार्केट, उज्जैन (म.प्र.)
फोन - 0734-2552744, 94250-93296

नंदा गारमेंट एण्ड कटलरी
सभी प्रकार के महिला उपयोगी वस्त्र एवं सौंदर्य प्रसाधन सामग्री उपलब्ध
पिको-फाल किया जाता है
112, साईधाम नगर, उज्जैन

मण्डलीय माहेश्वरी मैरेज ब्यूरो
105/ए, लोधी विहार, आवास विकास कालोनी, अलीगढ़-202001 (यू.पी.)
मो - 98370-11245
94126-72212
फैक्स - 0571-2411348

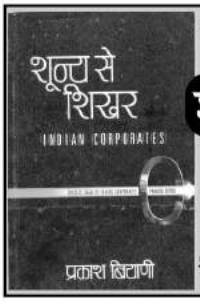

आपके परिवार में 'किशोर' युवक-युवती हैं...आप चाहते हैं कि वे सही कैरियर चुनें... नौकर नहीं मालिक बनें तो पढ़े और पढ़ाएं.

शून्य से शिखर भारतीय उद्योगपतियों की यशोगाथा

लेखक - प्रकाश बियाणी

माहेश्वरी बन्धुओं को विशेष रियायत (15 प्रतिशत) के साथ उपलब्ध।
संपर्क करें या डाक व्यय सहित 160 रुपये का ड्राफ्ट भेजें-

श्री माहेश्वरी टाईम्स श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.)

श्री माहेश्वरी टाईम्स के प्रकाशन अवसर पर मेरी एवं पश्चिमांचल प्रादेशिक माहेश्वरी सभा की ओर से हार्दिक अभिनंदन एवं शुभकामनाएँ।

आपकी यह पत्रिका समाज के प्रत्येक जन तक पहुंचे, यही मेरी कामना है।

रंगनाथ न्याती

अध्यक्ष

मध्यप्रदेश पश्चिमांचल प्रादेशिक माहेश्वरी सभा

गजानंद मूंदड़ा

लक्ष्मीनारायण मूंदड़ा

संजय मूंदड़ा

लक्ष्मी टेन्ट हाउस

17, मंगल भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.)

फोन - 2551884, मो. 98270-13787

अपनों के लिए-अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

सदस्यता प्रपत्र

नाम गौत्र

जन्म दिनांक व्यवसाय/सर्विस

पता

शहर पिनकोड

दूरभाष फैक्स

ई-मेल

उपलब्धि

दिनांक हस्ताक्षर

सदस्यता शुल्क

☐ **वार्षिक सदस्य-150/- रु.**

☐ **आजीवन सदस्य-1500/- रु.**

नगद/ड्राफ्ट क्रमांक

बैंक

दिनांक

कृपया मनीआर्डर/ड्राफ्ट **'श्री माहेश्वरी टाईम्स'** के नाम से भेजे

श्री माहेश्वरी टाईम्स

श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी,
उज्जैन (म.प्र.) 456001
दूरभाष - 0734- 2551307,
2559389, 3094855
मोबाईल - 94250-91161
E-Mail : sri_maheshwaritimes@yahoo.com

दस भाग्यशाली विजेता जिन्हें मिलेगा विशेष पुरस्कार

'श्री माहेश्वरी टाईम्स' का लक्ष्य है- अपनों की राय में अपनों के लिए अपनी पत्रिका। इस ध्येय को ध्यान में रखकर हमने देश भर के **25 हजार माहेश्वरी परिवारों** में पत्रिका के स्वरुप को लेकर एक सर्वे कराया। हमें प्रसन्नता है कि इस सर्वे में हमें उम्मीद से ज्यादा सफलता मिली। आप सभी ने जिस उत्साह और उमंग के साथ इस सर्वे में भागीदारी की उससे हमारा हौसला बढ़ा है। इसके लिए आप सभी को धन्यवाद। इस सर्वे में भाग लेकर पुरस्कार जीतने वाले 10 भाग्यशाली विजेताओं के नाम इस प्रकार है -

1. श्री राजकुमार डागा, कोडंगल (मेहबूब नगर)
2. राजलक्ष्मी माहेश्वरी, इन्दौर (म.प्र.)
3. गोविन्दलाल कोठारी, इलुरू (वेस्ट गोदावरी)
4. श्री कृष्णकुमार बिड़ला, मुजफ्फरपुर (बिहार)
5. श्री देवकरण गग्गड़, भीलवाड़ा (राजस्थान)
6. श्री अरूण कुमार धूत, भोपाल (म.प्र.)
7. श्री विनोद बिनानी, सूरत (गुजरात)
8. श्री रमाकांत राठी, वल्लभगढ़ (उ.प्र.)
9. श्री पुरणमल बल्दवा, गुलबर्गा (कर्नाटक)
10. श्री मधुसूदन सारड़ा, नागपुर (महाराष्ट्र)

आप सभी भाग्यशाली विजेताओं को श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार की ओर से हार्दिक बधाई। हम आपको पुरस्कार शीघ्र ही भेज रहे हैं। भविष्य में भी इसी प्रकार हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे इसी विश्वास के साथ धन्यवाद। **-संपादक**

श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार

श्री श्याम माहेश्वरी
एल.आई.जी.2, 354, इन्दिरा नगर,
उज्जैन (म.प्र.)
फोन - (0734) 2541650
क्षेत्र - उज्जैन (म.प्र.)

श्री अमित डागा
एफ-20, राधिका काम्पलेक्स, नया बाजार,
लश्कर, ग्वालियर (म.प्र.)
मो. 98273-81531
क्षेत्र - ग्वालियर (म.प्र.)

श्री महेश कयाल
फ्लेट नं. जी-2, 448-गोयल नगर,
कलाकृति अपार्टमेन्ट,
इन्दौर - 452018 (म.प्र.)
फोन - (0731) 9302104270
क्षेत्र - इन्दौर (म.प्र.)

श्री दिलीप गुप्ता
67, नारायण नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन - 0755-2584098
क्षेत्र - भोपाल (म.प्र.)

श्री मनीष लड्ढा
हरिकृपा सिल्क मिल्स, एम/739,
न्यू टेक्सटाइल मार्केट,रिंग रोड, सूरत
फोन - (0261) 2365559
मो. 93745-19887
क्षेत्र - सूरत (गुजरात)

श्री विनोद कुमार खटोड़
सी-43, कृष्णा अपार्टमेन्ट, गोरिंग रोड,
पटना (बिहार)
फोन - (0612) 2574973,
2570289
क्षेत्र - पटना (बिहार)

श्री अशोक माहेश्वरी
18/91ए, दुर्गापुरी, पटेल नगर, सासनी
गेट, अलीगढ़- 202 001
मो. 98370 11245
मो. 94126 72212
क्षेत्र - अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)

श्री सुनील माहेश्वरी
प्लाट नं. 6-बी, विष्णुनगर,
जलगांव (महाराष्ट्र)
मो. 9370002216
क्षेत्र - जिला जलगांव (महाराष्ट्र)

डॉ. शरद सिकची
'कृष्ण छाया' केम्प रोड,
अमरावती-444602 (महाराष्ट्र)
फोन - (0721) 2660072
क्षेत्र - अमरावती, चैन्नई

श्री के.के. मालपानी
828, 'ब्रजनिवास', शक्तिनगर,
बठिण्डा (पंजाब)
मो. 98156-54841
क्षेत्र - बठिण्डा (पंजाब)

श्री भगवतीलाल माहेश्वरी
94, सुभाष मार्ग, अजमेरा की पोल,
उदयपुर (राजस्थान)
फोन - (0294) 2425352
क्षेत्र - उदयपुर (राजस्थान)

श्री दिनेश सोनी
एल-289, पटेल नगर, अंकपात रोड,
उज्जैन (म.प्र.)
फोन - (0734) 2554442
क्षेत्र - जिला उज्जैन (म.प्र.)

श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार

श्री आशीष परवाल
व्हाईट मल्टी, जमीदार कालोनी, रामटेकरी, मन्दसौर (म.प्र.)
फोन - (07422) 504106
क्षेत्र - मन्दसौर जिला (म.प्र.)

श्री विनय जावंधिया
लक्ष्मीनगर, मूर्ति रोड, काटोल जिला नागपुर (महाराष्ट्र)
फोन - (07112) 223742
क्षेत्र - काटोल जिला (महाराष्ट्र)

सुश्री गोपिका मंत्री
95, शास्त्री नगर, खण्डवा (म.प्र.)
फोन - (0733) 2249867
मो. 98262-12626
क्षेत्र - खण्डवा जिला (म.प्र.)

श्री रोहित झंवर
सदर बाजार, बाग जिला-धार (म.प्र.)
फोन - (07297) 267293
क्षेत्र - कुक्षी तहसील (म.प्र.)

श्री भरत भूतड़ा
3134, हीरओम मार्केट, ।। फ्लोर, रिंग रोड, सूरत (गुजरात)
मो. 98791-23889
क्षेत्र - सूरत (गुजरात)

श्री भूपेन्द्र जाजू
हाटपुरा रोड, आगर-मालवा (म.प्र.)
फोन - 258805
क्षेत्र - आगर-मालवा (म.प्र.)

श्री अर्पण बल्दवा
श्याम इलेक्ट्रानिक्स, 444, महात्मा गांधी मार्ग, बड़नगर (म.प्र.)
फोन - (07367) 225846
क्षेत्र - बड़नगर (म.प्र.)

श्री सी.डी. राठी
इतवारा वार्ड-3, पोस्ट पुसद, जिला यवतमाल (विदर्भ)
फोन - (07233) 246954
क्षेत्र - पुसद जिला (विदर्भ)

श्री गोपाल मोहता
38, जवाहर मार्ग, नागदा जक्शन
फोन - (07366) 242200, 242118
क्षेत्र - नागदा (म.प्र.)

श्री मनोहर तोषनीवाल
72, सदर बाजार, बड़वदा, जिला रतलाम
क्षेत्र - बड़ावदा (म.प्र.)

श्री सुनील गगरानी
10, अन्नपूर्णा मार्ग, खाचरौद, जिला उज्जैन
फोन - 230633
क्षेत्र - खाचरौद (म.प्र.)

श्री अनूप गुप्ता
'गुप्ता निवास', राम-रहीम नगर, राधागंज, 42/ए, देवास (म.प्र.)
मो. 09826243046
क्षेत्र - देवास (म.प्र.)

शुभकामनाएं

यह जानकर अपार हर्ष हुआ कि आपके द्वारा सम्पादित 'श्री माहेश्वरी टाईम्स' पत्रिका का प्रथम अंक प्रकाशित होने जा रहा है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। किसी भी देश के साहित्य से वहां बस रहे मानव-मन का सहज ही आंकलन किया जा सकता है। साहित्य के विविध माध्यमों में 'पत्रिका' भी एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा समाज को हमेशा से सही दिशा प्रदान करने का प्रयास होता आ रहा है।

यह पत्रिका निश्चित ही धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक चेतना जागृत करते हुए, अपने पाठकों के अन्तर्मन को आन्दोलित करने में सहायक सिद्ध होगी। मैं उन सभी लोगों को हृदय से साधुवाद देता हूँ जो इसके प्रकाशन में किसी भी प्रकार से सहयोगरत है तथा श्री लक्ष्मीवेङ्कटेश भगवान् से कामना करता हूँ कि यह पत्रिका निर्विघ्न प्रकाशित होते हुए उत्तरोत्तर अभिवृद्धि को प्राप्त करे। इति शुभम्

श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्रीकांताचार्य

वर्तमानकालीन संचार माध्यमों से सम्पूर्ण समाज एक ग्लोबल विलेज बन चुका है। ऐसे में किसी समाज के व्यक्ति को अपने ही समाज के लोगों से परिचय या सम्बन्ध बनाये रखना कठिन हो रहा है। इसे आसान बनाने के लिए श्री पुष्कर बाहेती द्वारा माहेश्वरी समाज के लोगों के लिए यह मासिक पत्रिका निकाली जा रही है। मुझे बड़ी प्रसन्नता है श्री पुष्कर बाहेती द्वारा सम्पूर्ण माहेश्वरी समाज के हित में किया गया यह कार्य मनुष्य यज्ञ के रूप में फलिभूत होगा और मेरी महाकालेश्वर के चरणों में प्रार्थना है कि उन्हें इस कार्य में सफलता प्राप्त हो और वे ऐसे ही कार्य करते रहें।

हार्दिक मंगलकामनाएं

ओम तत्सत्

स्वामी ऐश्वर्यानंद जी सरस्वती

श्री महाकालेश्वर की नगरी उज्जयिनी से ऋषिमुनि समूह के माध्यम से श्री माहेश्वरी टाईम्स पत्रिका का राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशन किए जाने हेतु प्रयास किया जा रहा है, जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई ।

पत्रिका समाज का दर्पण है, सामाजिक गतिविधियों के प्रचार प्रसार का एक उत्तम माध्यम है। आधुनिक परिवेश में भी अपनी सांस्कृतिक विरासत को संजोंकर रखना, सद्भावना का वातावरण उत्पन्न करना, सामाजिक समस्याओं को सामने लाना एवं उनका समाधान प्रकाशित करके समाज कल्याण करने हेतु पत्रिका उपयुक्त साधन है ।

पत्रिका के प्रवेशांक के अवसर पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ ।

आपका

चुन्नीलाल सोमानी

सभापति

अ.भा. माहेश्वरी महासभा

सामाजिक पत्रिका का प्रकाशन और प्रसार एक अर्थ में जन जागरण का प्रयास है। सामाजिक समस्याओं पर चिंतन, विचार-विमर्श के माध्यम से समाधान की खोज और सामाजिक संगठन को सबल, सक्षम और सक्रिय बनाने की दिशा में सामाजिक पत्रिका का सम्पादन महती भूमिका का निर्वाह कर सकता है।

पत्रिका की सफलता के लिए मेरी शुभकानाएं ।

रमेश चन्द्र लाहोटी
मुख्य न्यायाधीश
उच्चतम न्यायालय

प्रसन्नता का विषय है कि ऋषिमुनि प्रकाशन समूह उज्जैन द्वारा सामाजिक पत्रिका श्री माहेश्वरी टाईम्स का प्रकाशन प्रारंभ किया जा रहा है।

विशिष्ट परम्पराओं, रीति-रिवाजों और त्यौहारों के कारण देश में माहेश्वरी समाज की अपनी एक अलग पहचान है। देशभर में फैले इस समाज के लोगों को एक सूत्र में बांधने, विभिन्न सामाजिक गतिविधियों और प्रतिभाओं को समाज मे लाने के लिए पत्रिका का प्रकाशन एक सार्थक प्रयास है।

आशा है उद्देश्यों को समर्पित यह पत्रिका माहेश्वरी समाज के लिए संवाद सूत्र बनेगी।

शुभकामनाओं सहित

बाबूलाल गौर
मुख्यमंत्री, म.प्र. शासन

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आपके सम्पादन में ऋषिमुनि समूह द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर एक सामाजिक पत्रिका ''श्री माहेश्वरी टाईम्स'' का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका के माध्यम से समाज के कल्याण एवं नवजागरण की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया जा सकेगा।

मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु।

डॉ. सत्यनारायण जटिया
सांसद एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री महाकालेश्वर की नगरी उज्जयिनी से ऋषिमुनि समूह द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर एक सामाजिक पत्रिका श्री माहेश्वरी टाईम्स का प्रकाशन किया जा रहा है। आपका प्रयास निसन्देह प्रशंसनीय है आपके इस सुन्दर प्रयास के लिये मैं आपको हार्दिक शुभकानमाएं एवं धन्यवाद देता हूँ।

संस्था एवं संगठन को सुदृढ़ करने में पत्र-पत्रिकाएँ, स्मारिकाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस पत्रिका में सामाज सम्बन्धी जानकारी प्रकाशित की जायेगी जिससे समाज के बन्धु अवश्य लाभान्वित होंगे ऐसा मुझे विश्वास है। इस पत्रिका को आपके द्वारा काफी उपयोगी बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके लिये आप एवं आपकी संस्था के सभी कार्यकर्ता बधाई के पात्र है। मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ। पुनः हार्दिक शुभकामनाओं सहित। धन्यवाद।

रामपाल सोनी
उपसभापति
अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा

सत्यमेव जयते

ऋषिमुनि समूह द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर एक सामाजिक पत्रिका श्री माहेश्वरी टाईम्स का प्रकाशन शीघ्र ही किया जा रहा है। हमारे समाज में स्तरीय सामाजिक पत्रिकाओं की कमी काफी समय से अनुभव की जा रही थी। सामाजिक पत्रिकाएँ समाज में आपसी सम्पर्क एवं वैचारिक आदान-प्रदान का एक महत्वपूर्ण उपकरण होती हैं। विभिन्न सामाजिक समस्याओं की सशक्त अभिव्यक्ति एवं समाज बन्धुओं द्वारा पारस्परिक सहयोग से उन्नति हेतु ऐसी पत्रिकाएं एक प्रभावी मंच उपलब्ध करवाती हैं।

आपके द्वारा इस दिशा में किये जा रहे इस महत्ती प्रयास के लिये आपका हार्दिक अभिन्नदन। मुझे पूरा विश्वास है कि यह पत्रिका अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सफल रहेगी, सदैव उन्नति की ओर अग्रसर होती रहेगी। इस स्वागतयोग्य कदम के लिये मेरी बधाई स्वीकार करें।

आपकी स्नेहाकांक्षी
किरण माहेश्वरी
राष्ट्रीय सचिव भाजपा, सांसद-उदयपुर (राज.)

श्री माहेश्वरी टाईम्स पत्रिका प्रकाशित हो रही है, बहुत-बहुत शुभकामनाए। अत्यन्त हर्ष की बात है कि समाज को अपने कार्यों का प्रतिबिंब सामाजिक पत्रिका के रूप में मिल रहा है। आज युग तीव्र गति से बदल रहा है। शब्दों द्वारा समाज में वैचारिक क्रान्ति लाने में साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान रहता है, आशा है श्री माहेश्वरी टाईम्स द्वारा समाज को ऐसा साहित्य परोसा जायेगा जो भारतीय संस्कृति व सभ्यता के प्रचार-प्रसार का प्रभावशाली माध्यम रहेगा व इसके सभी विषय संग्रह योग्य रहेंगे व सभी के लिये प्रेरणाप्रद बनेंगे।

पुनः शुभकामनाओं सहित

बिमला देवी साबू
महामंत्री
अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि माहेश्वरी समाज के उत्पत्तिकर्ता भगवान श्री महाकालेश्वर की पुण्य नगरी उज्जैन से श्री माहेश्वरी टाईम्स मासिक पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है ।

यह पत्रिका समाजहित में बहुउपयोगी साबित होगी । इसके माध्यम से समाज को एक नई दिशा मिले, ऐसी अपेक्षा करता हूँ ।

श्री माहेश्वरी टाईम्स पत्रिका माहेश्वरी समाज के प्रत्येक परिवार में पहुंचे, इन्हीं भावनाओं के साथ अपनी एवं प्रदेश सभा की ओर से शुभकामनाएँ प्रेषित कर रहा हूँ ।

नंदकिशोर बिसानी
अध्यक्ष
मध्यप्रदेश क्षेत्रीय प्रादेशिक माहेश्वरी सभा

हर्ष का विषय है कि उज्जैन नगर से माहेश्वरी बन्धु द्वारा श्री माहेश्वरी टाईम्स का प्रकाशन किया जा रहा है। इस प्रकाशन से सामाजिक गतिविधि, इतिहास एवं प्रगति के समाचार मिलते रहेंगे।

अतः इस भागीरथ प्रयास हेतु श्री पुष्कर जी बाहेती को हार्दिक बधाई एवं उज्जवल भविष्य की शुभकामना प्रेषित करता हूँ।

जय महेश

आपका शुभेच्छु
श्याम सुन्दर भूतड़ा
अध्यक्ष
श्री माहेश्वरी मेवाड़ा थोक पंचायत

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि महाकाल की पावन नगरी उज्जयिनी से राष्ट्रीय स्तर की सामाजिक पत्रिका 'श्री माहेश्वरी टाईम्स' के प्रकाशन का प्रयास किया जा रहा है। यह समस्त माहेश्वरी समाज के लिए एक अनुकरणीय पहल हैं। अखिल भारतीय-स्तर की पत्रिका होने से सम्पूर्ण भारतवर्ष के माहेश्वरी बंधु (समाज-जन) परस्पर सघनता से जुड़ सकते है। शहरों और राज्यों की सीमाओं को तोड़ते हुए यह एक सुअवसर होगा, सभी को एकता के सूत्र में पिरोने का।

यह पत्रिका युवाओं को रोजगार दिलाने में और युवक-युवतियों के वैवाहिक आयोजन कराने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके तथा सांस्कृतिक व सामाजिक चेतना जगा सके, यही ईश्वर से प्रार्थना है।

पुनः शुभकामनाओं सहित समस्त प्रकाशकगणों को साधुवाद ।

शरदमोहन झँवर
अध्यक्ष
माहेश्वरी मारवाड़ी समाज

With Best Compliments From

BOON
PHARMACEUTICALS

10, Dabri Pitha, Ujjain (M.P.)
Ph. : 0734 - (O) 2557295 (R) 2575631
Cell : 94250-92576 Fax : 0734-2550030

हार्दिक मंगलकामनाओं के साथ.....

सभी बैंकिंग सुविधाओं हेतु सदैव तत्पर अब अपने नये सुसज्जित नवीन परिसर में

उज्जैन औद्योगिक विकास नागरिक सहकारी बैंक मर्यादित उज्जैन

पंजीयन क्र.जे.आर./यूजेएन/9/22698 म.प्र. सह. सोसायटी अधिनियम 1960 के अंतर्गत पंजीकृत
भारतीय रिजर्व बैंक लायसेंस नं. यूबीडी/एम.पी. 1682/30.12.1998

स्थान :- 1, हुकुमचंद कछवाय मार्ग, क्षीरसागर, उज्जैन फोन - 2558639 फैक्स 0734-5010023

डॉ. बमशंकर जोशी
अध्यक्ष

श्री राधेश्याम पाटीदार
श्रीमती सुधा बाहेती
उपाध्यक्ष

श्री महेशचन्द्र आचार्य
महाप्रबंधक

संचालकगण - **डॉ. नेमीचंद जैन, श्री नवीन नरूला, श्री राजकुमार कुकरेजा, श्री धर्मेन्द्र सर्राफ, श्री सनवर पटेल, श्री पुष्कर बाहेती, श्री विवेक गुप्ता, श्री मदनलाल माहेश्वरी, श्री अजय जैन, श्री अनिलकुमार गोयल, श्रीमती आशा गेहलोद**

जमीन-जायदाद में मिलने लगा है औरतों को बराबरी का हक

मध्यप्रदेश सरकार का एक फैसला प्रदेश में स्त्रियों को अचल सम्पति का स्वामी बनाने में अहम् भूमिका निभा रहा है। राज्य के पंजीयन कार्यालयों में जमीन-जायदाद की खरीदी-बिक्री के जो दस्तावेज वर्तमान में पंजीयन के लिये आ रहे हैं उनमें अधिकांश मामलों में खरीददार कोई महिला ही होती है।

दरअसल राज्य सरकार ने स्टाम्प अधिनियम में अब यह व्यवस्था कर दी है कि अचल सम्पति की रजिस्ट्री अगर स्त्रियों के हक में की जाती है तो स्टाम्प शुल्क में 2% की छूट मिलेगी। इसे सरल रूप में समझें तो एक लाख की सम्पति यदि पुरुष के नाम से खरीदी जाती है तो अभी स्टाम्प शुल्क 8% की दर से 8 हजार रुपये लगता है। यही सम्पति यदि महिला के नाम से खरीदी जाएगी तो यह शुल्क घटकर 6% के मान से 6 हजार लगेगा। बदलाव इसी से हुआ है। शहरों और गांवों में इसका सकारात्मक असर साफ-साफ नजर आने लगा है। आँकड़ों का बोलना सुनें तो इस प्रावधान के तहत लगभग 25 हजार रजिस्ट्री महिलाओं के नाम से हुई हैं और करीब रुपये 12 करोड़ की छूट का लाभ भी मिला है।

अचल सम्पत्ति में महिलाओं का अधिकार अगुआ हो रहा है मध्यप्रदेश

जनसंपर्क/माध्यम/2005

D64161

[illegible]	10 से 15	[illegible]	31
उपनिषद्	16	[illegible]	32
नये उद्योगों को आरक्षण......	21	[illegible]	33
पंचायत सम्मेलन एक	22	[illegible]	34
कमाल के नए प्रयोग	23	[illegible]	[illegible]
[illegible]	24	[illegible]	[illegible]
[illegible]	25	[illegible]	[illegible]
[illegible]	26	[illegible]	[illegible]
[illegible]	27	[illegible]	[illegible]
[illegible]	29	[illegible]	47

[illegible]

[illegible]

[illegible]

हार्दिक मंगलकामनाओं के साथ..

अतुल शक्ति की कमाई हर दिन सवाई

ATUL Shakti

DIESEL 3-WHEELERS

मैं मेरी मर्ज़ी का मालिक

मे. माहेश्वरी इन्टरप्राइजेस

22, क्षीरसागर शॉपिंग काम्पलेक्स, उज्जैन

फोन - 2551945 मो. 94250-93302

With Best Compliments

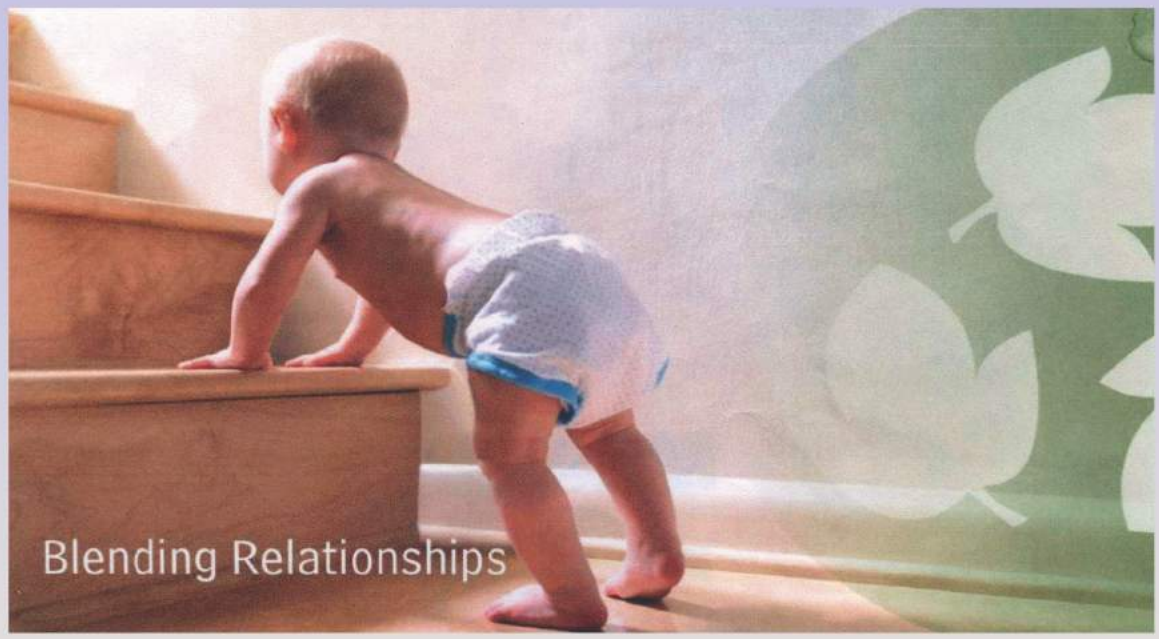

Birla Viscose, Birla Modal & Birla Excel are the finest Textile Fibres of Cellulosic origin used in favrics & garments to provide you comfort and make you look good & feel great in timeless fashion

Birla Cellulose
Fibres from Nature

Birla Cellulose viscose
FEEL THE COMFORT.

Birla Cellulose modal
LOOK GOOD. FEEL GREAT.

Birla Cellulose excel
TIMELESS FASHION.

GRASIM
ADITYA BIRLA GROUP

Grasim Industries Limited :
Staple Fibre Division, Nagdam M.P.
Grasilene Division, Harihar, Karnataka
Birla Cellulosic, Kharach, Gujarat
Marketing Head Office, Mumbai